SOUVENIR

NATIONAL SEMINAR

On

"Meri Maati Mera Desh: Joint Narrative of Nationalism and Progress"

राष्ट्रीय संगोष्ठी "मेरी माटी मेरा देश : राष्ट्रीयता एवं विकास की संयुक्त गाथा"

&

26th Annual Convention of Govt. Degree Colleges Academic Society

राजकीय महाविद्यालय एकेडमिक सोसायटी का 26वाँ वार्षिक अधिवेशन

February 13-14, 2025

Sponsored by:
Department of Higher Education Govt. of Uttar Pradesh

Organised by :
Government Raza P.G. College, Rampur (U.P.)
Completed 4th Cycle of NAAC
Affiliated to M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (U.P.)

SOUVENIR

National Seminar on "Meri Maati Mera Desh: Joint Narrative of Nationalism and Progress" & 26th Annual Convention of Govt. Degree Colleges Academic Society

(February 13-14, 2025)

ISBN : 978-93-91664-23-7

Editors
Jagriti Madan Dhingra
Baby Tabassum
Mujahid Ali
Vijay Kumar Rai

Published by
Govt. Raza P.G. College, Rampur
and
Ocean Publication
Near Hanuman Temple
Chah Sotiyan, Miston Ganj,
Rampur-244901 (U.P.)
Mob. : 9045440373
Email : ocean.publication.rampur@gmail.com

SOUVENIR

National Seminar on "Meri Maati Mera Desh: Joint Narrative of Nationalism and Progress" & 26th Annual Convention of Govt. Degree Colleges Academic Society

February 13-14, 2025

Edition : 2025

ISBN : 978-93-91664-23-7

Editors
Jagriti Madan Dhingra
Baby Tabassum
Mujahid Ali
Vijay Kumar Rai

Disclaimer (अस्वीकरण)

The editors and publishers hereby completely disown and disclaim any responsibility for any hidden or undisclosed information from the author(s), including but not limited to the use of AI-generated content, plagiarism, data manipulation, or any other unethical research practices. The sole responsibility for any form of misconduct, conflict, or violation of research ethics lies entirely with the author(s). In the event of any dispute or ethical breach, the author(s) shall be held accountable, and the editors and publishers shall bear no liability whatsoever.""Strict action will be taken if any misconduct is discovered post-publication, including retraction and blacklisting of the concerned author(s).

संपादक एवं प्रकाशक यह स्पष्ट रूप से घोषित करते हैं कि वे लेखक द्वारा छिपाई गई किसी भी जानकारी के लिए पूरी तरह से अस्वीकरण करते हैं और किसी भी प्रकार की ज़िम्मेदारी नहीं लेते हैं। इसमें एआई–जनित सामग्री का उपयोग, साहित्यिक चोरी (प्लेज़रिज़्म), डेटा हेरफेर, या कोई भी अन्य अनैतिक शोध प्रथाएँ शामिल हो सकती हैं।

किसी भी प्रकार के अनैतिक आचरण, विवाद या शोध नैतिकता के उल्लंघन की संपूर्ण ज़िम्मेदारी लेखक की होगी। यदि प्रकाशन के पश्चात किसी भी प्रकार की अनियमितता पाई जाती है, तो लेखक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी, जिसमें प्रकाशन वापसी (रिट्रैक्शन) और ब्लैकलिस्टिंग शामिल हो सकती है।

संपादक एवं प्रकाशक किसी भी स्थिति में उत्तरदायी नहीं होंगे।

Published by
Govt. Raza P.G. College, Rampur
and
Ocean Publication
Near Hanuman Temple, Chah Sotiyan, Miston Ganj,
Rampur-244901 (U.P.), Mob. : 9045440373
Email : ocean.publication.rampur@gmail.com

SEMINAR SECRETERIAT

Chief Patron	:	Prof. Amit Bhardwaj, Director, Higher Education, Prayagraj, Uttar Pradesh
Patron		Prof. Jagriti Madan Dhingra, Principal, Govt. Raza P.G. College, Rampur
Convenor	:	Prof. Baby Tabassum, Professor, Zoology
Organizing Secretaries	:	Dr. Mujahid Ali, Assistant Professor, Dr. V.K. Rai, Assistant Professor, History
Treasurer	:	Dr. Shailendra Kumar, Assistant Professor, Mathematics

ADVISORY BOARD

Prof. S.S. Yadav
Prof. Arshad Rizvi
Dr. Vinay Kr. Sharma
Dr. Ajeeta Rani
Prof. Kusumlata
Dr. Suman Lata
Prof. Meenakshi Gupta
Prof. Lalit Kumar
Prof. Jahangir Ahmad Khan
Dr. Hitendra Kumar
Dr. Renu
Dr. Surendra Gautam

MEMBERS

Prof. Seema Teotia
Dr. Rajesh Kumar
Dr. Abdul Latif
Dr. Vishal Kumar
Dr. Mudit Singhal
Dr. Raju
Dr. Arvind Kumar
Dr. Manik Rastogi
Dr. Mohd. Nasir
Dr. M.P.S. Yadav
Dr. Raj Kumar
Dr. Deepmala Singh
Dr. Pratibha Srivastava
Dr. Braham Singh
Dr. Syed Abdul Wahid Shah
Dr. Monika Khanna
Dr. Vandana Sharma
Dr. Rekha Kumari
Dr. Zaibi Naz
Dr. Rajeev Pal
Dr. Somendra Kumar
Dr. Khushboo
Dr. Iram Naeem
Dr. Ayush Kumar
Dr. Santosh Yadav
Dr. Ghanshyam Saroj
Dr. Sanjeev Kumar
Dr. Akansha Devi
Dr. Pramod Kumar
Dr. Shakshi Tyagi
Dr. Ameenuddin Ansari
Dr. Rahul Kumar
Dr. Pankaj Gambheer
Dr. Surjit Singh
Dr. Amzad Meo
Dr. Durgrsh Singh Yadav
Dr. Updesh Chimbal
Dr. Prashant Dwivedi
Dr. Shakeel Ahmad
Dr. Nitin Kumar Tyagi
Dr. Brijendra Singh
Dr. Lokesh Kumar
Dr. Maya Bharti
Dr. Shahida Parveen
Dr. Naresh Kumar
Dr. Neha Nagpal
Dr. Gajendra Singh
Dr. Kaish Miyan
Dr. Akhtar Husain

EDITORIAL BOARD

Prof. Arun Kumar
Dr. Reshma Parveen
Dr. Zubair Anees
Dr. Pradeep Kumar
Dr. Mohd. Kamil Hussain
Dr. Nidhi Gupta

Prof. K. P. Singh
Vice-Chancellor

MAHATMA JYOTIBA PHULE ROHILKHAND UNIVERSITY
Bareilly (U.P.) - 243 006, INDIA
(NAAC A++ Accredited)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर के तत्वावधान में *"मेरी माटी मेरा देश राष्ट्रीयता और विकास की संयुक्त गाथा (1857–2024)"* **विषय पर दिनांक 13–14 फरवरी, 2025 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** एवं उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडमिक सोसायटी के 26वें वार्षिक अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है एवं इस अवसर पर स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है कि इस ऐतिहासिक संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों द्वारा किये गये शोध कार्यों के निष्कर्ष स्वरूप देश हित में कई महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त होंगे जो राष्ट्रीय नीति निर्माण में उपयोगी साबित होंगे।

संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(प्रो० के०पी० सिंह)

प्राचार्य,
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामपुर।

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

Website: www.mjpru.ac.in E-mail: vc@mjpru.ac.in, vcoffice@mjpru.ac.in
Resi. (Ph.) +91-581-2523378, Office (Ph.) +91-581-2527282

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
Guru Jambheshwar University, Moradabad

पत्रांक : गु.ज.वि. / कु.का. / एफ–01 / 2025 / 21 दिनांक : 05.02.2025

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर द्वारा "मेरी माटी मेरा देश राष्ट्रीयता और विकास की संयुक्त गाथा (1857–2024)" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडमिक सोसायटी के 26वें वार्षिक अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन से छात्र / छात्राओं को देश के गौरवमयी इतिहास को जानने तथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त होगा। मुझे आशा है कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में विचार–विमर्श से प्राप्त निष्कर्ष एवं सुझाव, राष्ट्र के विकास एवं राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हों।

मेरी ओर से राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय की एकेडमिक सोसायटी के 26वें वार्षिक अधिवेशन के सफल आयोजन हेतु अग्रिम शुभकामनाएं।

सादर,

भवदीय,

प्रो० (सचिन महेश्वरी)
कुलपति

प्रतिष्ठा में,
प्राचार्य,
राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामपुर।

0581-2520487
registrarmjpru@gmail.com

महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

MAHATMA JYOTIBA PHULE ROHILKHAND UNIVERSITY, BAREILLY

दिनांकः–07.02.2025

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर ''मेरी माटी मेरा देश राष्ट्रीयता और विकास की संयुक्त गाथा (1857–2024)'' विषय पर दिनांक 13–14 फरवरी, 2025 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडमिक सोसायटी के 26वें वार्षिक अधिवेशन का आयोजन करने जा रहा है। इस तरह के आयोजन से महाविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों व शोध आदि को बढ़ावा मिलेगा। इस तरह की संगोष्ठी शिक्षक–शिक्षार्थियों के हित संवर्द्धन हेतु आवश्यक है। इस संगोष्ठी के आयोजन हेतु महाविद्यालय के शिक्षकगण तथा छात्र–छात्रायें बधाई के पात्र हैं।

संगोष्ठी की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

कुलसचिव

प्राचार्य,
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामपुर।

प्राचार्य की कलम से....

'मेरी माटी, मेरा देश'

यह अभियान भारत के अमृत महोत्सव के समापन समारोह के रूप में 9 अगस्त 2023 से शुरू किया गया था। इस अभियान में हमें केवल भारत की माटी नहीं, अपने घर, गांव, शहर राज्यों ,सरकारी अभियानों इन सभी में ,विभिन्न आयोजन करके, उनके भीतर एक नए 'प्रण –प्रतिज्ञ' का अवलोकन करना है!

यही नहीं देश के वीरों, वीरांगनाओं, बीत चुके समय से पूर्व जो आज भी समसामयिक हैं। जो थे उनकी याद रहे । वर्तमान में जो हैं, उनका आभास रहे और भविष्य सुधरे। यही 'मेरी माटी,मेरा देश' के लिए हमारा उद्देश्य है।

आत्मनिर्भर और विकसित बनाने के सपने को साकार करना है। देश की समृद्ध –विरासत पर गर्व करना ही 'मेरी माटी, मेरा देश है' भारत की एकता को सुदृढ़ करना, देश की रक्षा करने वालों का सम्मान करना है। अपने देश को बेहतर बनाने के लिए हम सभी को सकारात्मक बदलाव लाने की जिम्मेदारी लेनी है। व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक प्रयास बदलाव ला सकता है और वह बदलाव शिक्षा, पर्यावरण, सामाजिक सद्भाव ,और विभिन्न क्षेत्रों में चाहे वह, राजनैतिक, सामाजिक , धार्मिक , आर्थिक , बौद्धिक , साहित्यिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक , सभी में हमें आज 'मेरी माटी मेरा देश' को चरितार्थ करना है। 'मेरी माटी, मेरा देश' एक ऐसा महत्त्वपूर्ण विषय है .जिसमें हमारी पहचान है, हमारी संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न अंग है।

मेरी माटी का संबंध सिर्फ भूमि – मात्र से नहीं है, बल्कि विभिन्न भाषाओं, रीति –रिवाज, हमारे पूर्वजों की मेहनत और बलिदान की गूंज सुनाई दे और आगामी पीढ़ी जिसको अपना सपना बना ले।

'प्रेम और समर्पण का विकास करेंगे'
'भारत को आत्मनिर्भर बनाने का सपना साकार करेंगे'

प्रो० (डॉ०) जागृति मदान ढींगरा
प्राचार्य
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामपुर (उ०प्र०)

संपादकीय

मेरी माटी मेरा देश शीर्षक का उद्देश्य भारत की उस गौरवशाली इतिहास और परंपराओं से आने वाली पीढ़ी को परिचित कराना है जो हजारों वर्षों से वेद, पुराण, स्मृति, धार्मिक ग्रन्थों, लोक परम्परा और लोक गीतों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हुए एक सुदृढ़ संस्कृति का रुप ग्रहण किए विकास के पथ पर अग्रसर है। इसमें मानवीय जीवन के वे विविध पक्ष सम्मिलित हैं जिसके द्वारा एक समृद्ध समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। इन विविध पक्षों में मुख्यतः राष्ट्रीयता, ज्ञान विज्ञान,शिक्षा, प्रकृति के प्रति अतिशय लगाव, जल संरक्षण का महती भाव ,नारी के प्रति सम्मान और समानता की भावना, धार्मिक सद्भाव,खान पान,रहन सहन और अध्यात्म की अद्वितीय परम्पराएं हैं जो "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद दुख भाग भवेत् " की विचारधारा से ओतप्रोत है। जिसमें सम्पूर्ण विश्व को परिवार मानते हुए सबके सुख और कल्याण की बात कही गई है।

हमारे देश में विभिन्न धर्म,जाति, भाषा, विचार के होते हुए राष्ट्रीयता की बात की जाय तो यह 'हिन्दू' शब्द में दिखलाई देता है जिसे विद्वानों के द्वारा सनातन संस्कृति या हिन्दू संस्कृति कहा गया और इसे एक जीवन पद्धति माना गया, जिसके अन्तर्गत कोई किसी भी ईश्वर में विश्वास करें या नहीं करें फिर भी हिन्दू है। हिन्दू का यह भाव शिवाजी के हिन्दू पद पादशाही के विचारों,जिसके अन्तर्गत सभी धर्मों के धर्म स्थलों के प्रति आदर का भाव , शत्रु के स्त्रियों के प्रति अत्यधिक सम्मान, सैनिकों को खड़ी फसलों को नुक्सान न पहुंचाने के आदेश से परिलक्षित होता है। इस संस्कृति में वृक्षों के प्रकार , उनकी उपयोगिता के आधार पर उनके संरक्षण की बात कही गई है। हरिशंकरी (पीपल, पाकड़ और बरगद) और त्रिवेणी (पीपल , बरगद और नीम)वृक्षों का एक साथ रोपण बड़ा ही फलदाई और पूण्य का कार्य बताया गया है। जल की शुद्धता और उसके संरक्षण को लेकर विशेष जागरूकता की बात कही गई है। धर्म ग्रंथों में कुआं, तालाब, बावड़ी के निर्माण को महान पुण्य का कार्य कहा गया है । यहां की प्राचीन चिकित्सा विधियां,योग आज भी संपूर्ण विश्व के लिए आज भी एक धरोहर की तरह है। विविध भाषाई लोकगीत जो ग्रामीण क्षेत्र के महिलाओं और पुरुषों द्वारा सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में गाये गये वे बिना किसी लिखित दस्तावेज के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को परम्पराओं के रूप में प्राप्त होते रहे । ये गीत आज भी मानवीय जीवन के विविध पक्षों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए विवाह में गाये जाने वाले हल्दी गीत "बाबा हो कवन बाबा धन रऊरा बानी जी कहिया क हरदी जतन कइले बानीं जी। हमरो कवन देई अति सुकुआर जी सहहिं न जाने लीं हरदिया क झार जी। बारहे बरस क ई बाबुल हमरे हऊअ जी, बारहे बरस क जतन कईले बानी जी"।। विदाई गीत "अमवा लगईह बाबा बारी बगईचा कि निमिया लगईह दुआर हो,पीपरा लगईह बाबा पोखरा कि गोइड़े लगवइह बसवार। अमवा सयान होई फरिहै ऐ बाबा,नीमियां देई जुड़ छांव। पीपरा के पेड़वा पर परिहै

झुलुअवा कि बसवा बिरनवा के बांह"।। द्वारपूजा गीत आपन खोरिया बहार ऐ कवन बाबा आवताने दुल्हा दुआर। होली गीत "जल कैसे भरुं जमुना गहरी, जल कैसे भरुं। ठाढ़े भरुं राजाराम देखत हैं, बैठ भरुं भीजे चुनरी।। धीरे चलूं घर सास बुरी है, धमक चलूं छलके गगरी। गोदी में बालक सर पर गागर, पर्वत से उतरी गोरी। जल कैसे भरुं जमुना गहरी।। इन गीतों में हल्दी और नीम के औषधीय महत्व,नीम की ठंडी तासीर, संयुक्त पारिवार की परम्परा, वृक्षों की उनकी उपयोगिता के आधार पर लगाने की व्यवस्था, विवाह की अवस्था (कन्या की उम्र के अनुसार तीन वर्ष,पांच वर्ष और सात वर्ष गवने के व्यवस्था की गई थी),स्वच्छता,जल की महत्ता, नदियों की स्थिति को व्याख्यायित किया गया है। कहवां त जनमे ल राम कि कहवां त कृष्णा जनमे हो ललना कहवा त जनमे गणेश तिनहु घरवां सोहर हो, अयोध्या में जन्मे ल राम त मथुरा में कृष्णा जनमे हो ललना पर्वत पे जनमे गणेश तिनहु घरवां सोहर हो।। केकरा कोखीं जनमे ल राम त केकरा कोखी कृष्णा जनमे हो ललना केकरा कोखी जनमे गणेश तिनहु घरवां सोहर हो,कोशिला कोखीं जनमे ल राम यशोदा कोखी कृष्णा जनमे हो ललना पर्वत पे जनमे गणेश तिनहु घरवां सोहर हो।। केकरा खातिर जनमे ल राम त केकरा खातिर कृष्णा जनमे हो ललना केकरा खातिर जनमे गणेश तिनहु घरवां सोहर हो। रावण खातिर जनमे ल राम त कंश खातिर कृष्णा जनमे हो ललना राक्षस खातिर जनमे गणेश तिनहु घरवां सोहर हो।। दुअरा प बाजे ला बधईया कि घरवा सुहावन हो गईल, कोना कोना आज जगमग करें घर लक्ष्मी के आवन हो गईल । जेवना कोखी बिटिया जनमले ऊ कोख पावन हो गईल। इन गीतों से यह जानकारी मिलती है कि एक ऐसे पुत्र की कामना की जाती है जो अपने अच्छे कार्यों से अपने कुल और क्षेत्र का नाम रोशन करें । राम, कृष्ण और गणेश के साथ उनकी माता का नाम जुड़ा हुआ है जो इस बात का परिचायक है कि किसी व्यक्ति की महानता में उसकी माता के दिए अच्छे संस्कार और शिक्षा का प्रमुख स्थान होता है। ऐसी भी मान्यता है कि मां की कोख पुत्री के जन्म से ही पवित्र होती है। पुत्री के कन्यादान से ही पिता का जांघ पवित्र होता है। शिव और सती का अर्धनारीश्वर स्वरूप पुरुष और महिला के समानता के भाव का एक अद्वितीय उदाहरण है जिसने इस मान्यता को जन्म दिया कि ये दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं और इसे धर्म ग्रंथों ने भी स्थापित किया कि बिना पत्नि के किये गये किसी भी धार्मिक अनुष्ठान का कोई लाभ नहीं है। विवाह के अवसर पर माड़ो के अंदर ओखल– मूसल का रखा जाना और सील–लोढ़ा पति पत्नी के स्वरुप का प्रतीक माना जाता है मूसल या लोढ़े से ही वर का परछावन होता है।। यहां का ज्ञान–विज्ञान, ज्ञान की पूर्णता की बात करता है जिसमें सम्पूर्ण मानवीय मूल्य समाहित है। इन मूल्यों में सभी धर्मों के प्रति आदर और सम्मान का भाव,तीज त्यौहारों के माध्यम से सामाजिक समता, क्षेत्र के आधार पर रहन सहन और खान पान की विशिष्ट परम्परा और अध्यात्म की ऐसी पराकाष्ठा जिसमें समाहित होने के लिए ऐनी वेसेंट जैसे लोगों ने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। यद्यपि इन विशिष्टताओं से परिपूरित इस देश में बाह्य आक्रमणकारियों द्वारा घात प्रतिघात होता रहा किंतु सर्वाधिक क्षति सत्रह सौ सत्तावन में भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के बाद हुआ। अपनी सत्ता को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से यहां की संस्कृति,

परम्परा पर प्रहार कर उनका उपहास किया गया और विभाजन की नीति को अपनाकर जाति, धर्म,भाषा और सम्प्रदाय के आधार पर जनता को बांटने का कार्य किया। उनका यह उद्देश्य लियोनेल स्मिथ के बयान से पता चलता है कि शिक्षा का परिणाम यह होगा कि वे सब साम्प्रदायिक और धार्मिक पक्षपात, जिनके द्वारा हमने अभी तक मुल्क को वश में रखा है और हिंदू और मुसलमानों को एक दूसरे से लड़ाये रखा है इत्यादि दूर हो जायेंगे, शिक्षा का परिणाम यह होगा कि इन लोगों के दिमाग खुल जाएंगे और अपनी विशाल शक्ति का पता लग जाएगा।

किन्तु इस देश की माटी की विशेषता हीं थी कि लोगों ने इन विकारों से ऊपर उठकर अपने को संगठित किया और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की लम्बी श्रृंखला प्रस्तुत कर देश को स्वतंत्र कराया और विश्व को गुलामी से मुक्ति का सकारात्मक संदेश दिया। इसका प्रत्येक अध्याय भारतीय संस्कृति की इन विशेषताओं से परिपूरित है । जिन लब्द्धप्रतिष्ठित विद्वतजनों, शोधार्थियों ने अपने लेखों और शोध संग्रह द्वारा इस पुस्तक की क्षमता का व्यापक विस्तार किया है, उन सभी मूर्धन्य विद्वान लेखकों, मनीषियों तथा शुभेच्छुओं का हृदय की गहराइयों से आभार। साथ ही हम आभारी हैं प्रोफेसर अमित भारद्वाज निदेशक उच्च शिक्षा प्रयागराज उत्तर प्रदेश, प्रो. कय्यूम हसन,पूर्व कुलपति, क्लस्टर विश्वविद्यालय जम्मू काश्मीर, प्रो. पुष्कर मिश्रा, निदेशक रज़ा लाइब्रेरी रामपुर, प्रोफेसर जागृति मदान धींगरा, प्राचार्य, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, प्रोफेसर असमर वेग, राजनीति विज्ञान विभाग अलीगढ़ विश्वविद्यालय जिन्होंने इस पुस्तक की सफलता हेतु महत्त्वपूर्ण सुझाव, शुभकामना और अग्रसारण संदेश लिखकर हमें अनुग्रहित किया। ओशन प्रकाशन के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनके अथक प्रयास से यह रुपाकार ग्रहण कर सका।

निश्चित ही जिस सोच को लेकर "मेरी माटी मेरा देश राष्ट्रीयता और विकास की संयुक्त गाथा" नामक इस पुस्तक के प्रकाशन की योजना बनाई गई वह अपने उद्देश्यों को पूरा करेगी।

डॉ० मुजाहिद अली
डॉ० विजय कुमार राय

MEMOIR OF GOVERNMENT RAZA P.G. COLLEGE, RAMPUR (UTTAR PRADESH)

The establishment of Government Raza PG College, Rampur, marked a significant chapter in the educational history of the region. Initiated under the visionary leadership of notable figures like Prof. K.G. Saiyidain and Prof. Ale Ahmad Suroor, the college began its joumey in 1949, amidst great anticipation and public demand for higher education facilities.

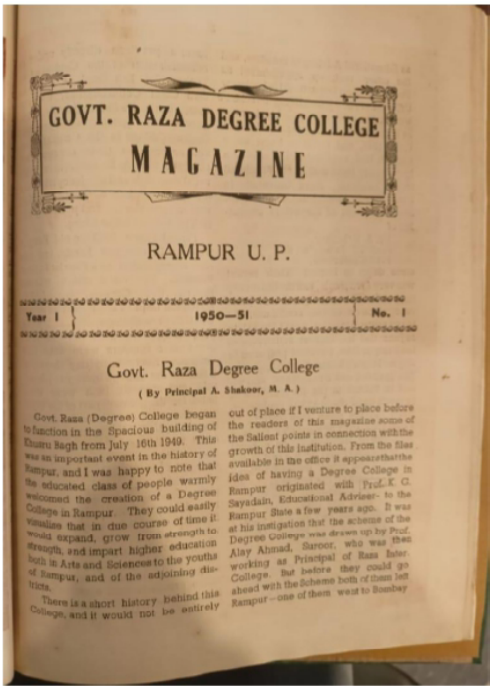
GOVT. RAZA DEGREE COLLEGE
MAGAZINE
RAMPUR U. P.
Year I 1950—51 No. I
Govt. Raza Degree College
(By Principal A. Shakoor, M. A.)
Govt. Raza (Degree) College began to function in the Spacious building of Khusru Bagh from July 16th 1949. This was an important event in the history of Rampur, and I was happy to note that the educated class of people warmly welcomed the creation of a Degree College in Rampur. They could easily visualise that in due course of time it would expand, grow from strength to strength, and impart higher education both in Arts and Sciences to the youths of Rampur, and of the adjoining districts.
There is a short history behind this College, and it would not be entirely out of place if I venture to place before the readers of this magazine some of the salient points in connection with the growth of this institution. From the files available in the office it appears that the idea of having a Degree College in Rampur originated with Prof. K. G. Sayadain, Educational Adviser to the Rampur State a few years ago. It was at his instigation that the scheme of the Degree College was drawn up by Prof. Aley Ahmad, Suroor, who was then working as Principal of Raza Intermediate College. But before they could go ahead with the Scheme both of them left Rampur—one of them went to Bombay

Under the guidance of Principal A. Shakoor, the college flourished as a center of excellence, offering programs in arts and sciences. Events like mock parliaments, cultural performances, and debates became comerstones of its vibrant student life. The emphasis on holistic education was evident in the active participation of students in local and national-level competitions.

Achievements of the early years include:

Formation of dedicated councils for language, science, and geography, enabling students to delve deeper into academic pursuits.

• Prestigious awards and medals for academic excellence in subjects like Hindi and Urdu.

• Representation at Agra University debates and cultural festivals, bringing pride to the institution.

Despite challenges, including political transitions when Rampur became part of Uttar Pradesh in 1949, the collective efforts of educators, administrators, and public figures ensured the college's sustenance. The announcement by Pt. Govind Ballabh Pant in October

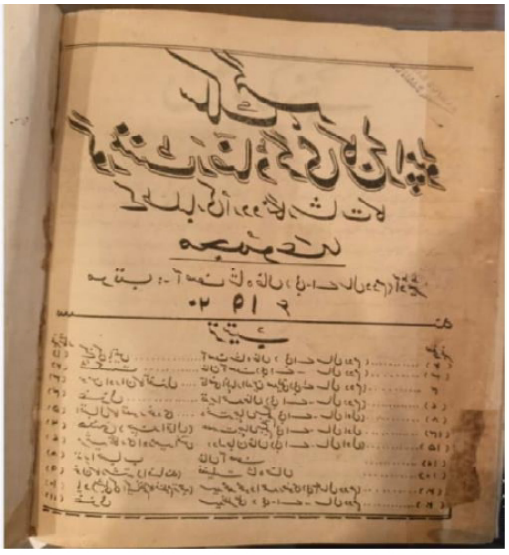

Pictures from the first magazine of Govt. Raza P.G. College Rampur (U.P.)

iv

हम आभारी हैं। नाम निम्नलिखित हैं :—

श्री राजेन्द्र मोहन अग्रवाल, धुवकुमार मेहरोत्रा, सूरज प्रकाश शर्मा, यशवीर सिंह त्यागी, ललित मोहन सिंह पालनी, सतीशचन्द्र गुप्त, राजप्रकाश श्रीवास्तव, हीरा लाल, शिवशंकर मिश्र, कु० शीला माथुर, कु० शशि प्रभा श्रीवास्तव।

अन्त में हम उन सब लोगों के आभारी हैं जिन्होंने हमारा मार्ग दर्शन, सहयोग और उत्साह-वर्धन किया है। हमारी समस्त उपलब्धियों के मूल में आदरणीय श्री प्रधानाचार्य जी का संरक्षण एवं शुभाशीर्वाद तथा विभागाध्यक्ष प्रो० श्री शिवादत्त जी द्विवेदी का उत्साह पूर्ण निर्देशन तथा संचालन है, जिनके बिना हमारा आयोजन अधूरा ही रहता।

—मन्त्री

राज्य विज्ञान परिषद्

इस वर्ष राज्य विज्ञान परिषद् के निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए :—

कु० शशि प्रभा श्रीवास्तव (बी०ए० द्वितीय वर्ष)	प्रधान
श्री सतीश चन्द्र गुप्त (बी०ए० द्वितीय वर्ष)	उप प्रधान
श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा (प्रथम) (बी०ए० प्र० वर्ष)	मंत्री
श्री इकबाल बहादुर सक्सेना (बी०ए० प्र० वर्ष)	उप मंत्री
कु० जाकिरा साबिर (बी०ए० द्वि० वर्ष)	छात्रा प्रतिनिधि
कु० आशा श्रीवास्तव (बी०ए० प्र० वर्ष)	छात्रा प्रतिनिधि
श्री चन्द्र प्रकाश सक्सेना (बी० ए० द्वितीय वर्ष)	प्रतिनिधि
श्री ब्रजराज सिंह (बी०ए० प्र० वर्ष)	प्रतिनिधि

अन्य वर्षों की भाँति इस वर्ष भी परिषद् ने २४ अक्तूबर को संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस पर एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के अधिवेशन का अनुकरण किया गया जिसमें विभिन्न देशों के प्रतिनिधि अपनी अपनी विशिष्ट वेषभूषा में उपस्थित हुए। निरस्त्रीकरण पर प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। वाद-विवाद के अनन्तर भारत और अन्य शान्तिप्रिय देशों के सदभाव से प्रस्ताव स्वीकार किया गया। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों की प्रतियोगिता में श्री नादिर अली खाँ को प्रथम, श्री जगदीश सिंह रावत को द्वितीय और कु० अनुराधा को तृतीय स्थान प्राप्त हुए और उन्हें प्रधानाचार्य महोदय द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

दीक्षान्त समारोह सप्ताह में Mock Parliament का अधिवेशन किया गया। प्रश्नोत्तरकाल के बाद पुरुषों का शासन समाप्त करने के उद्देश्य से एक विधेयक प्रस्तुत किया गया जो एक लम्बे विवाद के बाद अस्वीकार कर दिया गया। इस कार्यक्रम की प्रतियोगिता में श्री ललित मोहन सिंह पालनी को प्रथम, श्री नादिर अली खाँ को द्वितीय और कु० शशि प्रभा श्रीवास्तव को भी द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ और उन्हें प्रधानाचार्य महोदय द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। दोनों ही कार्यक्रमों में शिक्षण और मनोरंजन का सुन्दर समन्वय था।

भूगोल परिषद्

इस वर्ष भूगोल परिषद् में १७ सितम्बर को हुए निर्वाचन के आधार पर निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित किये गये :

(१) श्री जफर अली	B.A. II	प्रधान
(२) श्री मुहम्मद सिद्दीक	B.A. II	उपप्रधान
(३) कु० कृष्णा साहनी	B.A. I	मन्त्री
(४) कु० महिन्द्रजीत कौर	B.A. I	उपमन्त्री
(५) श्री कृष्णावतार	B. A. II	छात्र प्रतिनिधि B.A. II
(६) कु० शकुन्तला खरे	B A. II	छात्रा प्रतिनिधि B A. II

Names of officials of the Science and Geography council featured in the first magazine pictures of Govt. Raza P.G. College Rampur (U.P.)

1949 that the college would remain under state management was a defining moment.

Today, Government Raza PG College stands as a testament to its rich legacy. The seeds sown by its founders have grown into a thriving institution, nurturing countless students who have contributed to various fields across India and beyond.

This memoir is a tribute to the resilience, vision, and determination of all those who have been a part of this remarkable journey.

Compiled from archival records and memories of early days.

Dr. Baby Tabassum
Associate professor
Department of Zoology
Govt. Raza P.G. College,
Rampur (U.P.)

उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडमिक सोसाइटी: शिक्षा और नवाचार का मंच

संक्षिप्त परिचय

उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडमिक सोसाइटी की स्थापना 1984 में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, शोध को प्रोत्साहन, और शैक्षणिक मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन के उद्देश्य से की गई थी। इस सोसाइटी ने विगत दशकों में न केवल शिक्षण प्रक्रिया को नया आयाम दिया है, बल्कि शोध, प्रकाशन, और विचार–विमर्श के माध्यम से शिक्षा जगत में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

समृद्ध स्मृतियाँ और प्रगति के आयाम

21वें वार्षिक अधिवेशन, जिसका आयोजन राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर में हुआ, न केवल मेरी स्मृतियों का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि यह सोसाइटी के गौरवशाली इतिहास का प्रमाण भी है। इस आयोजन ने शिक्षकों और शोधकर्ताओं को एकजुट कर एक अद्वितीय मंच प्रदान किया, जहाँ विचारों का आदान–प्रदान और नवाचार पर चर्चा हुई। उस समय मैंने आयोजन सचिव के रूप में इस आयोजन की रूपरेखा तैयार की थी, और आज मैं गर्व के साथ बताना चाहती हूँ कि उस यात्रा ने सोसाइटी की नींव को और मजबूत किया।

एकेडमिक सोसाइटी की डिजिटल रूपरेखा

वर्तमान समय की मांग को देखते हुए, यह आवश्यक है कि एकेडमिक सोसाइटी को एक ऑनलाइन मंच प्रदान किया जाए, जिससे इसकी पहुँच व्यापक हो सके। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. उच्च शिक्षा विभाग की वेबसाइट पर समर्पित खंड:

उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडमिक सोसाइटी के लिए एक विशेष खंड उच्च शिक्षा विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर जोड़ा जा सकता है।

इसमें वार्षिक अधिवेशन, शोध पत्रों की सूची, और आगामी गतिविधियों की जानकारी दी जा सकती है।

2. ऑनलाइन शोध पत्रिका:

एकेडमिक सोसाइटी एक डिजिटल शोध पत्रिका शुरू कर सकती है, जिसे सुगमता से प्रबंधित किया जा सके।

शिक्षकों और शोध छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए आर्थिक अनुदान की व्यवस्था की जानी

चाहिए।

प्रकाशन शुल्क को न्यूनतम रखते हुए उच्च गुणवत्ता बनाए रखने के लिए एक संपादकीय समिति का गठन किया जा सकता है।

3. राजकीय महाविद्यालयों की ऑनलाइन प्रकाशन योजना:

प्रत्येक राजकीय महाविद्यालय को अपने शोध और साहित्यिक योगदान को ऑनलाइन प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

इसके लिए वित्तीय सहायता और तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किए जाने चाहिए।

4. डिजिटल लाइब्रेरी और संसाधन केंद्र:

सोसाइटी के तहत एक डिजिटल लाइब्रेरी विकसित की जा सकती है, जहाँ शोध पत्र, ई–पुस्तकें, और अन्य शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध हो।

5. वार्षिक अधिवेशनों की डिजिटल आर्काइव:

सोसाइटी के पिछले दशकों के सभी अधिवेशनों का डिजिटल आर्काइव तैयार किया जाए, जिसमें उनकी प्रमुख उपलब्धियों और निर्णयों का विवरण हो।

भविष्य के लिए योजना और दृष्टिकोण

शोध प्रोत्साहन योजना:

शोधार्थियों को वित्तीय अनुदान और विशेष फेलोशिप प्रदान की जाए, जिससे उच्च गुणवत्ता वाले शोध कार्य को बढ़ावा मिले।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग व भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार:

अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग स्थापित किया जाए, जिससे वैश्विक स्तर पर शोध और शिक्षण में योगदान दिया जा सके तथा अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार किया जा सके।

क्षमता विकास कार्यक्रम:

शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए नियमित रूप से कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।

दशक भर की स्मृतियाँ और प्रेरणाएँ

पिछले दस वर्षों की यात्रा को याद करते हुए, यह कहना गलत नहीं होगा कि एकेडमिक

सोसाइटी ने शिक्षा के क्षेत्र में कई नए मानक स्थापित किए हैं। रामपुर में आयोजित 21वें वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने वाले शिक्षकों और छात्रों की ऊर्जा और जोश आज भी प्रेरणादायक है। इस अधिवेशन में प्रस्तुत शोध पत्र और विचार–विमर्श ने शिक्षा की नई संभावनाओं को उजागर किया।

निष्कर्ष

आज, जब मैं इस सोसाइटी को एक महत्त्वपूर्ण सदस्य के रूप में देखती हूँ, तो यह महसूस होता है कि हमारी यात्रा का उद्देश्य केवल शिक्षण और शोध तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे नवाचार और समाज सेवा से जोड़ना भी है। मैं, डॉ. बेबी तबस्सुम, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर की ओर से इस सोसाइटी की सफलता और प्रगति के लिए सदैव समर्पित रहने का वचन देती हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. बेबी तबस्सुम
संयोजक
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर
उत्तर प्रदेश

राजकीय रजा महाविद्यालय में मेरा 11 वर्षों का सेवा काल : 'संस्मरण'

राजकीय महाविद्यालयों में 37 वर्षों के सेवा काल में से 19 वर्ष जो मैंने राजकीय रजा महाविद्यालय रामपुर में बिताये है वो निश्चित रूप से मेरे लिए अविस्मरणीय रहेंगे। शिक्षण के साथ शोध करने का अवसर तो मुझे अपने 18 वर्षों के राज० महाविद्यालय ऋषिकेश व राज० महाविद्यालय कोटद्वार के सेवाकाल में भी मिल चुका था। रज़ा महाविद्यालय, रामपुर में आगमन के पश्चात शोध कार्य अप्रत्याशित सफलता के साथ सुचारू रूप से करने का सौभाग्य मिला इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा क्षेत्र कई ऐसे कार्य सम्पादित करने का अवसर मिला जिनको करने में न सिर्फ आनंद मिला बल्कि प्रसिद्धि भी प्राप्त हुई (जिसके फलस्वरूप मुझे राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुये)। इस लेख को लिखते समय मुझे उन सभी कार्यों का उल्लेख करने की इच्छा हो रही है ।

वर्ष 1999 में अपरिहार्य परिस्थितियों में मेरा स्थानान्तरण राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर हुआ था (मैदानी संवर्ग लेने के कारण)। रजा महाविद्यालय, रामपुर में मेरे बहुत से पूर्व सहयोगी पहले से कार्यरत थे। मेरे वरिष्ठ विभागीय सहयोगियों (डा० जे० डी० मित्रा, डा० एजाज अली) ने मेरे ज्वाइन करने से पूर्व ही मुख्य भवन की तीसरी मंजिल पर दो कक्ष शोध प्रयोगशाला स्थापित करने हेतु (तमाम फर्नीचर, अलमीरा, रैक सहित) पहले ही चिन्हित कर लिए थे। मैने मार्च में महाविद्यालय में ज्वाइन किया। तत्कालीन प्राचार्य डा० बसलस ने मुझे महाविद्यालय की प्रोफेसर कालोनी में एक फ्लैट आवन्टित किया तथा जून माह में मैं कोटद्वार से अपनी तीसरी सी०एस०आई०आर० शोध परियोजना का सारा सामान (उपकरण, रसायन, ग्लासवेयर आदि) ट्रक द्वारा लाया और शोध कक्ष पूर्ण रूप से स्थापित किया गया।

सी०एस०आई०आर० की स्थानान्तरित परियोजना के समाप्त होते ही, डिपार्टमेन्ट आफ साइंस एण्ड टेक्नोलाजी ने एक वृहद शोध परियोजना स्वीकृत कर दी। उक्त परियोजना के सफल संचालन के पश्चात् एक सी०एस०आई०आर० परियोजना पुनः स्वीकृत हुयी। वर्ष 2010 में यू०जी०सी० द्वारा एक परियोजना स्वीकृत हुयी जो 2013 तक चली। मेरा रिटायरमेन्ट 2016 में था तो वर्ष 2013 के बाद मैने परियोजना संचालन बंद कर दिया। पूरे कार्य काल में 07 शोध परियोजनायें संचालित की गयी। कुल 22 शोध छात्रों को निर्देशन में (तथा 05 को सहनिर्देशन में) पी०एच०डी० करवायी गयी। पूरे कार्य काल में 163 शोध पत्र राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाये गये, 50 सेमिनार / काफ्रेंस में सहभागिता की गयी तथा 06 राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन (आयोजन सचिव के रूप में) करवाया। अपने शोध विषय से सम्बन्धित एक अर्न्तराष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभाग हेतु तुर्की भी जाने का मौका मिला।

राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर में वर्ष 2003 में तत्कालीन प्राचार्य महोदय ने 'नैक' से प्रत्यायन हेतु प्रयास करने को निर्देशित किया (नैक समिति का संयोजक बना दिया)। मैने प्रयास शुरू किए और वर्ष 2005 में राज० रजा० स्ना० महाविद्यालय, रामपुर प्रदेश का पहला नैक प्रत्यायनित महाविद्यालय बन गया। इस कार्य से महाविद्यालय का और मेरा प्रदेश में काफी नाम हुआ तथा पूरे प्रदेश

में नैक से प्रत्यायन करवाने को प्रोत्साहित करने हेतु उच्च शिक्षा विभाग द्वारा वर्कशॉप (नैक) आयोजित करवाने की श्रंखला शुरू हो गयी। इन वर्कशॉप में मुझे स्पीकर के रूप मे नियमित रूप से आमंत्रित किया जाने लगा। कालान्तर में वर्ष 2012 में मैंने राजकीय रजा स्ना० महाविद्यालय का पुनः प्रत्यायन करवाया तथा तृतीय प्रत्यायन में पूर्ण सहायता की। मैं वर्ष 2018 में रिटायर हो गया था (माह जून में) किन्तु प्रत्यायन हेतु पियर टीम नवम्बर में आनी थी। रिटायर होने के बाबजूद भी पियर टीम के दो सदस्यों को नई दिल्ली एयर पोर्ट पर रिसीव कर रामपुर ले आया और प्रक्रिया में पूरा सहयोग दिया।

राज० रज़ा० स्ना० महाविद्यालय रामपुर में मुझे नैक के अतिरिक्त रूसा तथा ए०आई०एस०एच०ई० का प्रभार दिया गया था। उक्त दोनों कार्यों हेतु यूनिट पहली बार महाविद्यालय में स्थापित की गयी। इसी प्रकार वर्ष 2007 में महाविद्यालय में इग्नू यूनिट स्थापित करने तथा वर्ष 2015 तक उसे संचालित करने का भी सुखद अनुभव प्राप्त हुआ। राज० रज़ा० स्ना० महाविद्यालय में यू०जी०सी० का एक वोकेशनल कोर्स इंडस्ट्रियल केमिस्ट्री पूर्व स्थापित था। दूसरे वोकेशनल कोर्स (कम्पयूटर एप्लीकेशन) स्वीकृत करवाने तथा उसे स्थापित करवाने में योगदान प्रदान करने का भी अनुभव प्राप्त हुआ।

वर्ष 2006 में मुझे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। अगले आठ माह काफी पेशोपश में गुजरे (ज्वाइन करूँ या ना करूँ), क्योंकि वर्ष 2005 के बाद नई पेंशन योजना लागू हो चुकी थी और बी०एच०यू० का रजिस्ट्रार आफिस कह रहा था कि यदि उ०प्र० सरकार आपकी पिछली सेवा की 'प्रोर्पोसनेट पेंशन बी०एच०यू० (केन्द्र सरकार द्वारा संचालित) को स्थानान्तरित करेगी तभी आपकी पुरानी सेवा जोड़ी जायेगी। कई चक्कर लखनऊ स्थित पेंशन कार्यालय के लगाये मगर वो कहे रहे थे कि नियम स्पष्ट नहीं है अतः हो भी सकता और मना भी किया जा सकता है किन्तु आप न्यायालय जायेंगें तो हो जायेगा। अन्ततः आठ माह बाद मैने बी०एच०यू० जाने का प्रोग्राम छोड़ दिया।

वर्ष 2007 मेरे लिए काफी अप्रत्याशित रहा। उ०प्र०सरकार द्वारा मुझे प्रशस्ति पत्र निर्गत किया गया (शोध कार्य, नैक सम्बन्धी कार्य तथा सेमिनार आयोजन के सापेक्ष)। वर्ष 2008 में उ०प्र०सरकार द्वारा शिक्षक दिवस पर उच्च शिक्षा में विशिष्ट कार्य हेतु पुरस्कार योजना शुरू की गयी। वर्ष 2010 में मुझे उ०प्र० उच्च शिक्षा विभाग द्वारा ''शिक्षक श्री'' से सम्मानित किया गया। उसके दो वर्षों बाद 2012 में ''सरस्वती सम्मान'' प्राप्त हुआ। उन दिनों सरस्वती सम्मान पाना चुनौती पूर्ण था क्योंकि कम्पटीशन विश्वविद्यालयों व प्राइवेट महाविद्यालय के शिक्षको से हुआ करता था (बाद में तो शिक्षक श्री व सरस्वती सम्मान हेतु राजकीय, प्राइवेट, वित्तपोषित महाविद्यालय व विश्वविद्यालयो को कोटा प्राप्त हो गया था)।

वर्ष 2016 में रिटायरमेंट से 6 माह पूर्व मैने दो वर्ष के सेवाकाल के विस्तार हेतु 1984 के जी०ओ० के आधार पर प्रार्थना पत्र सम्प्रेषित कर दिया था। यह जी०ओ० उस समय का था जब प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा का सामूहिक संचालन हुआ करता था। सचिवालय वाले कोई निर्णय नहीं ले पा रहे थे। रिटायरमेंट तिथि करीब आ रही थी अतः एक माह पूर्व मैने हाई कोर्ट में केस कर

दिया। कोर्ट ने आर्डर दिया कि रिटायरमेंट से पहले सचिवालय अपना निर्णय प्रदान करें। सचिवालय के करीब 12 चक्कर लगाने के बाद मुझे आदेश मिला और मैं राजकीय महाविद्यालय में 2 वर्ष का सेवा विस्तार पाने वाला पहला शिक्षक बना।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने जो कार्य रिटायरमेंट (30/06/2018) होने के बाद किया है वह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस कार्य की जानकारी नगण्य लोगों को ही है। मैंने 'आपरेशन हायर एजूकेशन के अधीन आर्टिकिल लिखने की श्रंखला शुरु की थी। अब तक 15 आर्टिकिल लिखे जा चुके हैं (नैक मेथोडोलोजी–2, नई शिक्षा नीति–6, पी एच डी मेथोडोलोजी–2, रुसा–01, यूजीसी कार्य प्रणाली 2, ए आई एस एच ई–01, एन आई आर एफ–01)। सभी आर्टिकिल में 'मेथोडोलोजी / प्रणाली पर प्रतिक्रिया दी गयी है। ये आर्टिकिल केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को मेल किये गये हैं और उसकी प्रतिलिपि लगभग 36 लोगों को (यूजीसी, उच्च शिक्षा मन्त्रालय, नैक, रुसा, नई शिक्षा प्रणाली से सम्बन्धित अधिकारियों, उ०प्र०, उच्च शिक्षा मन्त्री, उच्च शिक्षा सचिव व राज्यपाल आदि) को संप्रेषित की जाती थी। उपरोक्त विषयों पर ऐसे लेख लिखने की प्रेरणा और शक्ति मुझे रजा महाविद्यालय में किये गये विभिन्न एकेडेमिक कार्यों के अनुभव से प्राप्त हुई। मेरे व्यक्तिगत विचार के अनुसार रजा महाविद्यालय प्रांगण हर शिक्षक को अपनी प्रकृति और कार्य क्षमता के अनुरूप कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करता है। अब यह शिक्षक पर निर्भर करता है वह उसका लाभ किस प्रकार उठाता है अंत में मैं राजकीय रजा महाविद्यालय के सफल सेवा काल तथा वहाँ प्राप्त की सभी सुखद उपलब्धियों हेतु ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ।

डॉ० अरुण कुमार सक्सैना
निवर्तमान एसोसियट प्रोफेसर,
उ०प्र० उच्च शिक्षा विभाग

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं०
1.	SIGNIFICANT ROLE OF EDUCATIONAL TECHNOLOGY IN TEACHING LEARNING PROCESS **Md. Tanwir Yunus**	23
2.	WOMEN FREEDOM FIGHTERS **Nisha Verma and Rajeev Kumar Yadav**	24
3.	SOCIAL JUSTICE AND ARZAL MUSLIMS: A SOCIOLOGICAL STUDY **Hayat Ahmad**	25
4.	SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS (SDGS) AND INDIA'S COMMITMENT **Robeena Sarah, Nida Idrees, Baby Tabassum and Zameer Ahmad Rizvi**	26
5.	NEW ECONOMIC POLICY AND ITS IMPACT ON INDIA'S ECONOMIC GROWTH **Ashok Kumar**	27
6.	EXPLORING THE ANTICANCER POTENTIAL AND MECHANISMS OF ACTION OF NATURAL COUMARINS AND ISOCOUMARINS **Mohd Aqib, Shahnaaz Khatoon, Mujahid Ali, Shabana Sajid, Shakir Ahmad, Mohammad Saquib and Mohd Kamil Hussain**	29
7.	DIGITAL INDIA AND ITS IMPACT ON INDIAN SOCIETY **Sonu Puri and Anita Devi**	30
8.	AFFORDABLE AND CLEAN ENERGY AND INDIA'S COMMITMENT **Ameen Uddin Ansari**	31
9.	EDUCATION AND INDIAN NATIONALISM **Shahida Parveen**	31
10.	TRANSFORMING WASTE TO WEALTH: SUSTAINABLE APPROACHES IN FISHERIES **Tasmiya Khan**	32
11.	SUSTAINABLE FISHERIES: BALANCING LIVELIHOODS AND MARINE HEALTH THROUGH INNOVATIVE FISH FEED SOLUTIONS **Maleeha Khan**	33
12.	**भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय महिलाओं का वीरतापूर्ण योगदान** **सिद्धार्थ सिंह**	35
13.	**सामाजिक प्रगति एवं विकासः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन** **आलोक गुप्ता**	36
14.	**भारतीय समाज में युवाओं पर खेलकूद का प्रभावः-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन** **रामकृष्ण**	37

15. राष्ट्रवाद की अवधारणा का उदय 38
सुनीता जायसवाल
16. राष्ट्रीय एकता एवं विकास में भारतीय संस्कृति स्वरूप महाकुंभ का प्रभाव 39
प्रहलाद सिंह एवं श्रीमती हेमेष सिंह
17. मेरी माटी मेरा देश : युवा शक्ति का आह्वान 40
अरविंद कुमार
18. मेरी माटी, मेरा देश 44
बिनीश बी
19. हिंदी के वैश्वीकरण के प्रभावी कारक 47
मीना यादव
20. भारतीय सिनेमा और साहित्य के द्वारा बदलाव 54
महफूज आलम एवं सैयद मुहम्मद अरशद रिज़वी
21. हिन्दी ग़ज़ल का साम्प्रतिक परिदृश्य : स्वरूप और संवेदना 57
कुँवर महाराणा प्रताप सिंह 'विद्रोही
22. हिन्दी के प्रचार-प्रसार में मीडिया की भूमिका 61
अभिषेक एवं अब्दुल लतीफ़
23. उन्नत शिक्षण अधिगम एवं डिजिटल संसाधनः वर्तमान परिदृश्य 68
क्षमा पाण्डेय एवं प्रवेन्द्र सिंह बिरला
24. विश्व भाषा के रूप में हिंदी और विकसित भारत के निर्माण में उसकी भूमिका 76
अब्दुल लतीफ
25. स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका 81
बेबी चन्द्रिका कुमार एवं कुसुम लता
26. भारतीय सिनेमा और साहित्य द्वारा परिवर्तन 87
कुसुम लता
27. डिजिटल साक्षरता और भारत में छात्रों के सीखने के परिणामों पर इसका प्रभाव 90
शिक्षा शर्मा एवं प्रदीप कुमार चौधरी
28. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1857) की क्रांति में उत्तर प्रदेश की महिलाओं की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 100
विशाल कुमार एवं रजत गंगवार

29. बुंदेलखण्ड के प्रमुख पर्यटक स्थल : हमारी धारोहर 105
आमिर खाँन
30. भारत- मेरी माटी मेरा देशः राष्ट्रीयता एवं विकास की संयुक्त गाथा 113
अजय कुमार
31. भारतीय राष्ट्रीय एकता की संकल्पना व इसकी आवश्यकता 117
मुदित सिंघल, राहुल कुमार एवं अमजद खान
32. हिन्दी राष्ट्रीय चेतना की काव्यधारा और स्वतन्त्रता आन्दोलन 120
अरुण कुमार एवं दिव्या कुमारी
33. वेदों और उपनिषदों के संदर्भ में वैदिक भारत में विज्ञान की उन्नति 127
बेबी तब्बसुम एवं मौहम्मद हाशिम
34. भारतीय समाज के परिवर्तन में साहित्य और सिनेमा की भूमिका 139
अरुण कुमार एवं मोहम्मद मसरूफ रज़ा
35. विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत - एक दृष्टिकोण 143
मीनाक्षी गुप्ता एवं सबीहा परवीन
36. युवा और नवाचार 148
जोगेन्द्र कुमार
37. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षणः आवश्कता एवं शिक्षा की भूमिका 153
सोमेन्द्र सिंह
38. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना 158
अरुण कुमार
39. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1857) की क्रांति में उत्तर प्रदेश की महिलाओं की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 165
विशाल कुमार एवं रजत गंगवार
40. स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर प्रदेश की महिला क्रान्तिकारियों की भूमिका 170
भानुप्रताप सिंह एवं कृष्णवीर सिंह
42. प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्वतंत्रता संग्रामः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 171
विजय कुमार एवं प्रतिभा पांडेय

SIGNIFICANT ROLE OF EDUCATIONAL TECHNOLOGY IN TEACHING LEARNING PROCESS

Md. Tanwir Yunus
Professor And Head, University Department Of Education, Vinoba Bhave University, Hazaribag-825301 Jharkhand, India
Email: mdtanwiryunus786@gmail.com

ABSTRACT

The learning of programming using simulation involves unique educational environments and human factors. However, research in this field has been mainly centered on the efficacy of the simulation tool whereas there is a lack of comparative studies between the associated teaching and learning procedures. To address the gap, this study facilitates an evidence-driven discussion on learning and teaching as well as their relationship in programming education. Research areas include virtual and physical environments of simulation sessions relevant to learning enablers and impediments and roles of students and faculty members in the process. The study followed qualitative methodology using focus groups and semi-structured interviews. Educational technology is the development of application and evaluation of systems techniques and aids to improve the process of human learning. This gives emphasis on development of human learning process which is very complex and difficult to understand as so many factors such as socio-economic educational cultural language which contribute a lot in whole learning process. This takes into account all the changes such as social, cultural, regional and economic which contribute in the process of human learning. It also takes into account its application which means the educational technology is basically an evaluation process where the participants of teaching and learning process such as teacher students and various members of the educational system are required to constantly evaluate and upgrade the teaching methodology to achieve result and bring desired changes in students. It also talks about the evaluation of the whole systems it means that we cannot study the impact of educational technology in pieces. We need to consider the prime objectives of educational system and how best educational technology can help to attain the desired objectives. One has to evaluate the educational process in various lacunas where technology can be helpful to achieve desired results then one should create appropriate technology and use it to make better human learning process. Factors like conditions of learning teaching methodologies are talked about in the above context and hence we have to study one more use of educational technology. The establishment of technology is the backbone of improvement for student learning professional development and administration. With the help of integrating technology to prepare students for careers and keep students engaged in the teacher educators up to date on the latest technologies to help them be more effective in their teaching environments. Increasing support for pre-service education technology programs to help to produce more technologically by teachers in using technology to scale improvement and to accelerate reform. Developing systems and strategies that will help educators to use assessment of data to improve student learning and investing in research and development focused on innovation in teaching and learning process.

Key Words: Educational Technology, Teaching, Learning Process.

◆◆◆

WOMEN FREEDOM FIGHTERS

Nisha Verma[*] and Rajeev Kumar Yadav[**]
[*]Department of Botany, V.R.A.L. Rajkiya Mahila Mahavidyalaya, Bareilly.
[**] Department of Botany, Bareilly College, Bareilly

ABSTRACT

The history of Indian struggle would be incomplete without mentioning the contributions of women. Women's participation in India's freedom struggle began as early as in 1817. The sacrifice made by the women of India will remain paramount, what the women of India have done is priceless. The Indian women broke away from various restrictions and got out of their traditional home-oriented roles and responsibilities. So, the participation of women in the freedom struggle and National awakening is simply incredible and praiseworthy. However, it is not easy for women to fight as warriors in the male dominating society. Even if women tried to change the perception of people so conservative who thought women are just there to do housework. The history of the Indian freedom struggle is full of stories of women's sacrifice, altruism and valor. Very few of us know that there were hundreds of women who fought side by side with their male counterparts. They fought with true spirit and indomitable courage. There is a wide list of such women who fought for freedom bravely. Starting with Sarojini Naidu, Vijayalakshmi Pandit, Kamaladevi Chattopadhyay, Bhikaiji Cama and Mridula Sarabhai at the national level, there are so many leaders at provincial level like Annie Mascarene and A.V. Kuttimaluamma in Kerala, Durgabai Deshmukh in Madras Presidency, Rameshwari Nehru and Bi Amman in U.P., Satyawati Devi and Subhadra Joshi in Delhi, Hansa Mehta and Usha Mehta in Bombay, Rani Gaidinliu from Manipur and several others.

◆◆◆

SOCIAL JUSTICE AND ARZAL MUSLIMS: A SOCIOLOGICAL STUDY

Hayat Ahmad
Assistant Professor, Department of Sociology, Shibli National College Azamgarh. Email-drhayatahamad@gmail.com

ABSTRACT

In the context of India's social structure, religion and caste are considered two primary foundations. When examining the study of minority communities within this framework, the focus has predominantly remained confined to religious identity. The Muslim community in India has been consistently analyzed in terms of identity from an academic perspective. However, the caste-based hierarchical stratification within this community has received relatively little attention. This is evident from earlier studies (Ghaus Ansari 1960, Zarin Ahmed 1962, Imtiaz Ahmed 1966, Pratap Agrawal 1966, A.R. Momin 1977, Ziauddin Ahmed 1977, Ali Anwar 2001, Sheikh Rahim Mondal 2003, Zainuddin 2003). From a sociological perspective, the Muslim community has been broadly divided into two groups: 'Ashraf' and 'Ajlaf.' However, only a few studies have highlighted a third category, 'Arzal.' In line with the established paradigms of the Subaltern School, the marginalized sections within this community have received minimal attention. Some scholars (Yogendra Sikand 2001, Tosib Alam and Surendra 2019, Rafia Kazim 2021, Srinidhi Narasimhan 2021, Soheb Niazi 2024) have also referred to these marginalized groups as the "Dalits" of the Muslim community. This study attempts to undertake a socio-cultural analysis of Pasmanda (Arzal) Muslims in select districts of Eastern Uttar Pradesh. It examines their socio-economic status, discrimination faced, and their struggle for equality and social justice within the broader framework of Indian society.

Keywords: Socio-economic Status, Caste, Discrimination, Equality, Social Justice.

◆◆◆

SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS (SDGS) AND INDIA'S COMMITMENT

Robeena Sarah[1], Nida Idrees[2], Baby Tabassum[3] and Zameer Ahmad Rizvi[4]
[1]Assistant Professor, Dept. of Zoology, Constituent Govt. College, Thakurdwara, MBD
[2]Assistant Professor, Dept. of Zoology, Constituent Govt. College, Hasanpur, Amroha
[3]Associate Professor, Department of Zoology, Govt. Raza P.G. College Rampur,
([1-3]Affiliated with M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly) Uttar Pradesh, India
[4]Assistant Professor, Dept. of Commerce, Mohammad Ali Jauhar University, Rampur.

ABSTRACT

The Sustainable Development Goals (SDGs), adopted by the UN in 2015, represents a worldwide agenda with the goal of attaining a more sustainable, unbiased and inclusive future by 2030. Numerous global issues including poverty, inequality, climate change, environmental degradation, and peace are addressed by the 17 goals. India has shown a strong commitment to the SDGs as a signatory by incorporating them into its national development frameworks and policies. With more than 1.4 billion people, India has particular difficulties in striking a balance between social and environmental sustainability and fast economic growth. However, the nation has achieved notable progress in areas that are in line with the SDGs, such as tackling poverty, rural development, and renewable energy.

India is actively pursuing SDG targets, as seen by its National Action Plan on Climate Change (NAPCC) and programs like the Swachh Bharat Abhiyan (Clean India Mission) and Ujjwala Yojana (which provides homes with LPG connections). Furthermore, the nation's commitment to lowering inequality, particularly in rural and marginalized populations, is centered on its focus on increasing access to affordable housing, high-quality healthcare, and education.

There are still issues, nevertheless, especially with regard to tackling wealth inequality, resource access, and environmental damage. Increasing policy consistency, fortifying alliances, and utilizing innovation will be essential to India's advancement. In the end, India's dedication to the SDGs will be essential to both its own sustainable development and the global endeavors to realize the 2030 Agenda for Sustainable Development.

Key words: Sustainable Development Goals (SDGs), India's dedication, 2030 Agenda.

◆◆◆

NEW ECONOMIC POLICY AND ITS IMPACT ON INDIA'S ECONOMIC GROWTH

Ashok Kumar
Assistant Professor-Economics, Dr. Ram Manohar Lohia Government Degree College Muftiganj, Jaunpur, U.P.

ABSTRACT

After independence India adopted the mixed economic system for her economic growth. In mixed economic system she decided to follow the planned economy; a economy where goals were to be decided by the government sector and both government and private sectors will exercise to achieve these goals. In the beginning India was a state-oriented economy. Most of the economic activities were kept reserved for the state or the government sector. Market or private sector was allowed restricted participation in economic activities. Many new PSUs came into existence and government was producing almost everything important. Most of the PSUs and other industries were established by borrowing a healthy amount of credit from banks. But due to their indiscipline in management most of the PSUs got sick till 1977 to 1978. At the end of December 1977 there were 289 large and medium sized sick units with a bank credit of over Rs.1 crore, locking up a total bank credit of Rs.858.45 crores. Beside this there were more than 8000 small scale units that were sick locking up a another 200 crores of bank credit. This hilarious scenario adversely impacted the fiscal deficit and India's balance of payments in the coming years. The agricultural production of India increased at an average annual rate of 2.6 percent during the period 1950-1990. While for the period 1991-1992 the agricultural production registered a decline of 2.8 percent.

In the above background many serious problems started emerging in the Indian economy. In 1991 India reached in debt trap due to its continuous increasing expenditures and rising budgetary deficit. The increasing budgetary deficit strengthened inflationary trends in the economy with all consequences.

In June 1991 India was near default in her international obligations. India had to pledge a part of the official gold reserves with the Bank of England, by shipping 46 tons of gold to U.K. from the monetary reserves of RBI in July 1991 as a security to gain confidence of the creditor countries and financial institutions. By June 1991 the foreign exchange reserves fell to Rs.2383 crores (US$ 1.1b), which were barely enough to finance two weeks of imports. During the next six months period of August 1991 to Feb 1991, foreign exchange reserves fell by 61 percent and this further worsened the situation.

India was now stuck in a grave condition. IMF and World Bank restrained India to bring out structural reforms in the economy. India's prime minister called for necessary sacrifices from

the countrymen to preserve country's economic independence and restore the health of the Indian economy by resorting to some drastic steps including U turn changes in the economic policy. These were called new economic policies.

India's growth rate was just 1.2 percent in 1991-92 and after adopting the New Economic Policy it surged to 4.0 percent in the next year 1992-93. In 1993-94 it was at 3.8 percent. Year 1994-95 was a better performance year with a growth rate of 6.3 percent. This year's high growth was due to the policy measures taken in the New Economic Policy. The year 1995-96 witnessed a more satisfactory growth rate of 7.1 percent. 1996-97 was another high growth year. Growth rate reached to 7.5 percent in this year. After these years satisfactory growth performances Indian economy has never looked back. In the period of 2003-2015 India has achieved an annual growth rate of 8.0 percent. From 2021 to 2024 India has been among the fastest growing major economies with an average growth rate of 8.0 percent annually. These all has been possible due to the New Economic Policy adopted in the year 1991.

◆◆◆

EXPLORING THE ANTICANCER POTENTIAL AND MECHANISMS OF ACTION OF NATURAL COUMARINS AND ISOCOUMARINS

Mohd Aqib[a], Shahnaaz Khatoon[b], Mujahid Ali[c], Shabana Sajid[d], Shakir Ahmad[e]*, Mohammad Saquib[f]*, Mohd Kamil Hussain[a]*

[a]Department of Chemistry, Govt. Raza P.G. College, Rampur, M. J. P. Rohilkhand University, Bareilly, UP, India

ABSTRACT

Natural coumarins and isocoumarins show significant therapeutic potential against cancer in preclinical studies by targeting multiple pathways and processes. These compounds influenced several critical cellular processes, such as apoptosis, autophagy, and cell cycle regulation, which are pivotal in cancer development and progression. Their capability to target multiple signalling pathways provides a strategic advantage over single-target therapies, which are often limited by drug resistance. Notably, coumarins have the potential to inhibit angiogenesis, the process through which tumours develop new blood vessels, thereby potentially restricting tumour growth and metastasis. Additionally, coumarins may enhance anticancer effects by modulating immune responses and reducing inflammation, thus offering a dual approach to combating cancer. They also show promising addressing multidrug resistance, a significant challenge in cancer therapy, by targeting drug efflux proteins and potentially improving the efficacy of existing treatments. While preclinical studies are promising, further research is required to elucidate the pharmacokinetics, toxicity, potential side effects of coumarins in humans. Continued clinical evaluation will be crucial to confirm their effectiveness in cancer patients. Nonetheless, their ability to target multiple pathways positions coumarin based molecules as potential candidates for future anti-cancer drug development.

Keywords: Coumarins, Isocoumarins, Cancer, Natural products, Drug discovery.

◆◆◆

DIGITAL INDIA AND ITS IMPACT ON INDIAN SOCIETY

Sonu Puri[1] and Anita Devi[2]
[1]Assistant Professor,Department of Sociology, [2]Prof. & Head) Department of Sociology, Govt. Girls P.G. College, Rampur,U.P.

ABSTRACT

Since practically everything is accessible online, the 21st century is referred to as the "age of internet and digitalization." In the 1980s, internet services were introduced in India and since then our nation has grown at an extremely rapid pace. This digitalization phase is currently underway in India. The usage of digital devices is widespread from offices to stores to schools and all other institutions. By just pressing a button, digital technologies enable us to communicate with the entire globe and with each other. A lot of things are changing in this world, particularly in terms of technology. The honorable Prime Minister Mr. Narendra Modi's initiative, the Digital India Program would bring forth new developments in every industry. Creating a system that is responsive, transparent, and participatory is the idea's driving force. By bringing synchronization and coordination in public accountability, digitally connecting and delivering government programs and services, and mobilizing the capability of information technology across government departments, the Indian government's dream project, the Digital India drive, aims to transform India into an informed economy and digitally empowered society with good governance for citizens.

Digitization plays an important role in the success of the Indian economy and provides the possibility of work to young people. This gives great momentum to the young generation to start a new startup using creative ideas. The Indian government is also urging Indian citizens to go non-cash and reduce financial transactions. The aim is to make India a Digital India by accepting digital payments. Digital transactions will help tread a legal path that contributes to the growth of a better economy. Digital India is a vision to make government services digitally available to all citizens by improving web infrastructure and expanding adequacy of access to the internet. Its mission and goal is one to develop the country digitally and financially. Therefore, an effort has been made in this article to comprehend Digital India as a campaign that will use connectivity and technology to influence all facets of governance and enhance residents' quality of life.

◆◆◆

AFFORDABLE AND CLEAN ENERGY AND INDIA'S COMMITMENT

Ameen Uddin Ansari
Assistant Professor, Department of Economics, Government Raza Post Graduate College Rampur Uttar Pradesh India 244901
Email: ameenansari81@gmail.com

ABSTRACT

Among the sustainable development goals, the access to affordable and clean energy by all households is also one of the goals to be achieved by 2030. The paper highlights the programs and policies aiming towards providing the accessibility to affordable and clean energy by all since 2015. The paper also recommends the policy measures for strengthening and fastening to achieve the goals.

◆◆◆

EDUCATION AND INDIAN NATIONALISM

Shahida Parveen
Assistant Professor, Department of B.Ed., Govt. Raza P. G. College, Rampur, U. P.
Email : spshahida87@gmail.com

ABSTRACT

Education is an essential tool for developing skills like decision- making, mental ability, problem- solving, logical thinking and scientific knowledge. Education shapes a person, just as people are essential in determining a nation's standing. Every nation is founded an education since it promotes a particular level of knowledge, morals, awareness and development of nationality. Everyone who has access to a top-notch education can contribute to resolving these issues and enhancing living circumstances all around the nation. Education is a key catalyst in promoting nationalism national unity as it can help citizens of the nation to appreciate the diversity and uniqueness of their country and to participate in its democratic and developmental processes. The Ministry of Education has initiated various schemes and programmes via educational institutes to achieve this objective, such as the national Integration Camps, the National Service Scheme, the National Cadet Corps, the Bharat scouts and Guides, the Ek Bharat Shreshtha Bharat etc. These programmes aim to provide opportunities for students to interact with people from different regions, languages, religions, cultures and to develop a sense of patriotism, social responsibility and civic awareness. Education played a critical role in promoting nationalism in India during the early 20th century.

Keywords: Education, Nationalism, Skills etc.

◆◆◆

TRANSFORMING WASTE TO WEALTH: SUSTAINABLE APPROACHES IN FISHERIES

Tasmiya Khan
Research Scholar, Toxicology Lab, Department of Zoology,
Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.)

ABSTRACT

Fisheries are vital for global food security and livelihoods, yet unsustainable practices threaten marine ecosystems. Pollution from plastic waste, discarded fishing gear, and chemical runoff not only degrades aquatic habitats but also affects fish populations. To achieve sustainability, it is essential to implement strategies that reduce pollution and utilize waste effectively. One of the major contributors to pollution in fisheries is the improper disposal of plastic materials and synthetic fishing nets, which persist in the environment for decades. Encouraging biodegradable alternatives, enforcing strict waste management policies, and promoting community-driven cleanup efforts can help minimize the impact of pollution on marine life. Additionally, sustainable aquaculture practices, such as efficient feed management and natural filtration systems, can reduce chemical runoff and maintain water quality.

An effective way to balance environmental responsibility with economic benefits is the utilization of fish waste. Instead of discarding fish remains, they can be processed into nutrient-rich compost, which serves as a valuable biofertilizer for rivers and ponds. Fish waste is an excellent source of nitrogen, phosphorus, and other essential nutrients that support aquatic plant growth and enhance soil fertility. Proper composting techniques, such as layering fish remains with organic matter and allowing microbial activity to break them down, ensure that nutrients are efficiently converted into a form usable by aquatic ecosystems. This method not only reduces organic waste pollution but also creates a sustainable resource that benefits both agriculture and aquaculture. In addition, applying fish-based biofertilizers in aquaculture environments can significantly improve water quality by encouraging beneficial microbial activity. These microbes help in breaking down organic matter and maintaining a balanced ecosystem, which is crucial for the health and growth of fish. Unlike chemical fertilizers, which may lead to harmful algal blooms and oxygen depletion, biofertilizers derived from fish waste promote natural nutrient cycles without causing environmental harm. Additionally, this practice aligns with circular economy principles, ensuring that every part of the fishing process is utilized efficiently.

Integrating pollution control measures with the sustainable use of fish waste can transform fisheries into an environmentally responsible industry. By reducing plastic waste, promoting responsible fishing practices, and utilizing fish remains as biofertilizers, it is possible to create a balance between economic progress and marine conservation. By integrating waste utilization and pollution reduction, we can protect marine ecosystems while sustaining fisheries for future generations. A balance between economic benefits and environmental responsibility is key to ensuring long-term sustainability in the fisheries sector.

◆◆◆

SUSTAINABLE FISHERIES: BALANCING LIVELIHOODS AND MARINE HEALTH THROUGH INNOVATIVE FISH FEED SOLUTIONS

Maleeha Khan
Research scholar, Toxicology lab, Department of zoology,
Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.)

ABSTRACT

Fisheries and sustainability are increasingly critical as global demand for seafood continues to rise. With approximately 3.2 billion people relying on fish as a significant source of protein, sustainable fisheries management is essential for both marine health and the livelihoods of millions who depend on fishing. This article explores the challenges and strategies for achieving sustainability in fisheries, with a particular focus on the development of sustainable fish feeds.

Sustainable fisheries are critical for marine ecosystem health and food security. Overfishing, habitat degradation, and climate change threaten fish populations. Nearly one-third of global fish stocks are overfished, endangering biodiversity and food security, especially in developing nations. To maintain sustainability, strategies such as setting catch limits, minimizing bycatch, and establishing marine protected areas (MPAs) are essential.

However, several challenges complicate fisheries management. Overfishing has led to significant declines in fish populations, threatening marine biodiversity and jeopardizing the livelihoods of those who depend on fishing for income. Climate change is altering marine ecosystems, affecting fish distribution and abundance, making it crucial for sustainable fisheries management to adapt accordingly. Additionally, marine pollution poses a significant threat to fish health and habitats, necessitating efforts to reduce pollution to maintain healthy ecosystems that support sustainable fisheries.

An often-overlooked aspect of sustainable fisheries is the development of sustainable fish feeds. Aquaculture, or fish farming, has become an essential component of global seafood production, accounting for nearly half of all fish consumed worldwide. However, traditional fish feeds often rely on wild-caught fishmeal and fish oil, contributing to overfishing.

Innovations in fish feed are crucial for sustainability. Research into plant-based alternatives for fish feed is gaining momentum, with ingredients such as soybeans, peas, and algae providing essential nutrients while reducing reliance on wild-caught resources. Additionally, utilizing insect protein as a feed source presents an innovative solution that is both sustainable and efficient; insects can be farmed with minimal environmental impact and can convert organic waste into high-quality protein for fish. Advances in biotechnology have also led to the development of microbial protein sources that can be produced sustainably at scale.

To balance livelihoods with marine health, several strategies can be implemented.

Community engagement in fisheries management ensures that those who depend on fishing have a say in decision-making processes, fostering stewardship and promoting sustainable practices. Providing education and training programs that inform fishermen about sustainable practices enhances their capacity to engage in responsible fishing methods. Furthermore, governments must establish policies that regulate fishing practices based on scientific assessments while promoting responsible consumption patterns among consumers.

In conclusion, balancing the needs of fishing communities with the health of marine ecosystems is a complex but necessary endeavor in achieving sustainable fisheries. By focusing on innovative solutions such as sustainable fish feed development and engaging stakeholders in management practices, it is possible to create a future where both people and oceans thrive. A commitment to sustainability will not only ensure food security but also preserve the rich biodiversity of our oceans for generations to come.

◆◆◆

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय महिलाओं का वीरतापूर्ण योगदान

सिद्धार्थ सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास विभाग शिब्ली नेशनल कॉलेज, आज़मगढ़
Email-singhsiddharth0602@gmail-com

शोध-सार

भारतीय महिलाओं द्वारा दिए गए बलिदान को सर्वोपरि माना जाएगा। स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय महिलाओं की बहादुरी, निःस्वार्थता और बलिदान की कहानियाँ अनगिनत हैं। हम में से कई लोग इस बात से अनजान हैं कि सैकड़ों महिलाओं ने अपने पुरुष साथियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ाई लड़ी। उन्होंने अडिग साहस और सच्चे उत्साह के साथ संघर्ष किया। भारतीय जनजातीय महिलाओं ने कई सीमाओं और घर–गृहस्थी से जुड़ी पारंपरिक जिम्मेदारियों को पीछे छोड़ते हुए स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जागरण में अद्वितीय योगदान दिया। यह योगदान अद्‌भुत और सराहना के योग्य है। भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष का एक अनसुना, अनदेखा और अनलिखा पहलू महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका है। सभी लोग पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों के महत्त्व पर जोर देते हैं, लेकिन महिलाओं के योगदान के बिना भारत की स्वतंत्रता पाना एक असंभव लक्ष्य बनकर रह जाता। है। कई लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि वे महिलाएँ, जो कभी सती प्रथा की शिकार, घरेलू हिंसा की पीड़िता, अनपढ़ नागरिक और द्वितीय श्रेणी की नागरिक मानी जाती थीं, वे स्वतंत्रता संग्राम की असाधारण नेता बन गईं। महिलाओं ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया, सत्याग्रह किया, खादी का प्रचार किया और शराब की दुकानों पर धरना दिया। इन प्रयासों से महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण और सम्मानजनक योगदान दिया।

मुख्य शब्दः महिला, बलिदान, स्वतंत्रता संग्राम, जनजातीय, योगदान, सत्याग्रह ।

◆◆◆

सामाजिक प्रगति एवं विकासः एक विश्लेशणात्मक अध्ययन

आलोक गुप्ता
एसो. प्रोफेसर (समाजशास्त्र), राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)

शोध-सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन सामाजिक प्रगति एवं विकास की अवधारणा के गहन विश्लेशण एवं तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित है जो कि द्वितीय तथ्य सामग्री पर आधारित है । सामाजिक प्रगति समाज में होने वाले परिवर्तनों का वह स्वरूप है जिसके अंतर्गत समाज में होने वाले कल्याणकारी परिवर्तन सम्मिलित हैं। यह किसी समाज द्वारा उसके सदस्यों के लिए निर्धारित किए गए इच्छित लक्ष्यों की प्राप्ति है, जिसके अंतर्गत मात्र भौतिक उन्नति अर्थात आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि जनसंख्या का आदर्श रूप, समाज के सदस्यों का अच्छा स्वास्थ्य, बेहतर जीवन प्रत्याशा, लोगों का नैतिक और शिक्षा का उच्च स्तर, बेहतर पर्यावरणीय दशाएँ, प्रत्येक सदस्य को स्वतंत्र वातावरण, अवसर की समानताएँ, सृजनात्मक कार्यों को करने के अधिकतम अवसर, सामाजिक सुरक्षा और अवकाश एवं स्वस्थ मनोरंजन की बेहतर सुविधाएँ जैसे पहलू सामाजिक प्रगति की अवधारणा के महत्त्वपूर्ण आयाम है। विकास और सामाजिक प्रगति की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि जहाँ विकास की अवधारणा के अंतर्गत प्रमुख रूप से अपेक्षित दिशा में किए जाने वाले नियोजित परिवर्तन पर बल दिया जाता है, वहीं सामाजिक प्रगति मानवीय जीवन की सर्वांगीण बेहतरी के आदर्शों पर आधारित है। शोध अध्ययन का निष्कर्ष है कि सामाजिक प्रगति एक प्रमुख समाजशास्त्रीय अवधारणा है जो सामाजिक परिवर्तन की दशा और दिशा को सर्वांगीण रूप में प्रस्तुत करती है।

◆◆◆

भारतीय समाज में युवाओं पर खेलकूद का प्रभावः-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रामकृष्ण
शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, (रामपुर) उ.प्र.

शोध-सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन भारतीय समाज में युवाओं पर खेलकूद का प्रभाव पर आधारित है। जोकि प्राथमिक तथ्य सामग्री तथा द्वितीयक तथ्य सामग्री पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक तथ्य सामग्री संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। खेल गतिविधियों में भागीदारी युवाओं के शारीरिक,मानसिक और सामाजिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। युवाओं पर खेलों का प्रभाव व्यापक और जटिल है जिसमें कई सकारात्मक और नकारात्मक पहलू शामिल हैं। यह अध्ययन युवाओं में सामाजिक मनोवैज्ञानिक विकास पर शारीरिक शिक्षा और खेलों के महत्त्वपूर्ण प्रभावों पर प्रकाश डालता है।यह व्यापक रूप से प्रदर्शित किया गया है कि खेल कार्यक्रम न केवल युवाओं को शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के बारे में शिक्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं बल्कि सामाजिक संतुलन का एक मजबूत नियम स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जो युवाओं के जीवन को आकार देता है। इसके अलावा शारीरिक शिक्षा और खेल में भागीदारी व्यायामशाला और खेल के मैदान से भी आगे तक फैली हुई है। यह कार्यक्रम सकारात्मक सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में कार्य करता है। जो व्यापक समुदाय तक फैले हैं। युवा एथलीट को टीम के साथियों, प्रशिक्षकों को और यहाँ तक कि छात्रों के साथ सार्थक संबंध बनाने के लिए सिखाया जाता है। जिससे उन्हें अपनेपन और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा मिलता है। इस शोध पत्र के माध्यम से यह जानने का समाज वैज्ञानिक प्रयास किया गया है कि खेल गतिविधियों में भागीदारी से युवाओं में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य में सुधार होता है लेकिन यह भी महत्त्वपूर्ण है कि युवाओं को संतुलित और सुरक्षित खेल अनुभव प्राप्त करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाए।

◆◆◆

राष्ट्रवाद की अवधारणा का उदय

सुनीता जायसवाल
विभागाध्यक्ष संस्कृत एवं प्राचार्य, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उ0प्र0
ई मेल– drsuneetaj@gmail.com

शोध-सार

राष्ट्र की परिभाषा एक ऐसे जनसमूह के रूप में की जा सकती है, जो कि भौगोलिक सीमाओं में एक निश्चित देश में रहता हो, समान परम्परा, समान हितों तथा समान भावनाओं में बँधा हो और जिसमें एकता के सूत्र में बँधने की उत्सुकता तथा समान राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएँ पायी जाती हों।

राष्ट्र ऐसे लोगों का समूह है जो जाति, धर्म, भाषा, रीति–रिवाज, इतिहास आदि को सॉझा करने के कारण परस्पर जुड़े हुये हैं। जिनका सॉझा सभ्याचार है, जिनके अन्दर मनोवैज्ञानिक सद्भाव की भावना विकसित हुई है। जिनके पास अपनी निश्चित मातृभूमि है जो राजनीतिक रूप से स्वतन्त्र हैं या जो स्वतन्त्र होने के लिये उत्सुक हैं।

स्वराष्ट्र की भूमि, जनसमूह, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, धर्म, साहित्य, कला, राजनीति तथा जन–जीवन, दर्शन आदि के प्रति देश के नागरिकों के मन में गरिमा एवं महिमा का जो एक नैसर्गिक स्वाभिमान हुआ करता है, उसे ही हम 'राष्ट्रवाद' एवं राष्ट्रीय भावना की संज्ञा से अभिहित करते हैं। राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय भावना को दूसरे शब्दों में देशप्रेम, देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्र भक्ति तथा राष्ट्र गौरव भी कहा जाता है।

उक्त सभी राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रवाद के प्रमुख निर्धारक तत्त्व हैं। राष्ट्रवाद की अतिशय भावना ही थी जिसने वर्षों के कठिन संघर्ष और अनगिनत बलिदानों के बाद भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलायी। किसी भी राष्ट्र की प्रगति राष्ट्रवाद व राष्ट्रीयता की भावना पर निर्भर करती है।

राष्ट्र ही वह धागा है जो लोगों को एकता के सूत्रा में बाँधता है। यह काश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी भारतीयों को एकजुट करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रंग–रूप, वेश–भूषा, भाषा–बोली, खान–पान, वर्ग–वर्ण, जाति–धर्म, सम्प्रदाय एवं प्रान्तीय विविधता एवं अनेकता होते हुये भी भारत की एकता व अखंडता के गुण–धर्म एवं वैशिष्ट्य को न केवल भारतवर्ष में अपितु समग्र वैश्विक पटल पर राष्ट्रीय अस्मिता, राष्ट्रीय गौरव के रूप में अभिव्यक्त कर दृढ़तापूर्वक स्थापित करता है।

◆◆◆

राष्ट्रीय एकता एवं विकास में भारतीय संस्कृति स्वरूप महाकुंभ का प्रभाव

प्रहलाद सिंह[1] एवं श्रीमती हेमेष सिंह[2]
[1]सहायक प्राध्यापक (गणित), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छर्रा, अलीगढ़ (उ.प्र.)
[2]प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, हे नाथ महाविद्यालय, इगलास, अलीगढ़ (उ.प्र.)
ई–मेलः prahladanora9@gmail.com

महाकुंभ मेला मानवता के सबसे बड़े समागमों में से एक है। यह भारत की सबसे बड़ी और सबसे पवित्र धार्मिक सभाओं में से एक है। यह हर बारह साल में आयोजित किया जाता है और लाखों तीर्थयात्रियों को आकर्शित करता है। महाकुंभ का धार्मिक महत्त्व तो है ही, साथ ही इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय पहलू भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। महाकुंभ का धार्मिक महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि यह हिंदू धर्म के चार प्रमुख तीर्थों – प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है। इन तीर्थों को पवित्र माना जाता है और यहाँ स्नान करने से पापों का नाष होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। महाकुंभ विभिन्न जातियों, धर्मों और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाता है। महाकुंभ में सभी लोग एक साथ मिलकर पूजा करते हैं, भजन गाते हैं और एक–दूसरे के साथ भोजन करते हैं। इससे सामाजिक एकता को बढ़ावा मिलता है।

महाकुंभ में सभी लोग एक ही उद्देष्य से आते हैं – धार्मिक अनुश्ठानों में भाग लेना और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना। यह एकता की भावना पैदा करता है और लोगों को एक–दूसरे के करीब लाता है। महाकुंभ में सभी लोग भेदभाव को भूलकर एक–दूसरे के साथ मिलजुलकर रहते हैं। महाकुंभ सद्भाव का भी प्रतीक है। यहाँ सभी लोग एक–दूसरे के प्रति सम्मान और सहनशीलता का भाव रखते हैं। महाकुंभ में विभिन्न धर्मों के लोग भी भाग लेते हैं, जो धार्मिक सद्भाव का एक उदाहरण है। महाकुंभ में सभी लोग एक–दूसरे की मदद करते हैं। यह परोपकार की भावना को बढ़ावा देता है और लोगों में मानवता का भाव पैदा करता है। महाकुंभ लोगों को सामाजिक बुराइयों से लड़ने और एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करता है। महाकुंभ एकता, सद्भाव, परोपकार और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। महाकुंभ का आयोजन भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और इसे संरक्षित करना और बढ़ावा देना हम सबकी जिम्मेदारी है।

◆◆◆

मेरी माटी मेरा देश : युवा शक्ति का आह्वान

अरविंद कुमार
सहायक प्राध्यापक, बी०एड०, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

हमारे देश की स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ मनाने के उपलक्ष्य में 75 सप्ताह पूर्व 12 मार्च 2021 से अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाने की शुरुआत की गई। अभियान का उद्देश्य देश–विदेश के हरेक भारतीय को हमारे यहाँ के वीर–सपूतों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करके उत्सव मनाने का था। महोत्सव महिलाओं एवं बच्चों, आदिवासी सशक्तिकरण, जल, सांस्कृतिक गौरव, पर्यावरण के लिए जीवन शैली (जीवन), स्वास्थ्य और कल्याण, समावेशी विकास, आत्मनिर्भर भारत और देश की एकता जैसे नौ विशिष्ट क्षेत्रों में भारतीयों की प्रगति का मूर्त रूप है। इस अभियान को जन भागीदारी की भावना से देश और विदेश में जनोत्सव के रूप में मनाया गया, जिसमें दो लाख से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मा० प्रधानमंत्री जी ने जन समुदाय से आजादी का अमृत महोत्सव मनाने का आह्वान करते हुए कहा कि– "आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी आज़ादी की ऊर्जा का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी आत्मनिर्भरता का अमृत। इसीलिए ये महोत्सव राष्ट्र के जागरण का महोत्सव है। ये महोत्सव, सुराज्य के सपने को पूरा करने का महोत्सव है। ये महोत्सव, वैश्विक शांति का, विकास का महोत्सव है।"

आजादी का अमृत महोत्सव अभियान अपने आप में एक अनूठा कार्यक्रम रहा, जिसमें कि देश की युवा पीढ़ी को मात्र आजादी के वीर–वीरांगनाओं और उनकी वीरगाथाओं से परिचित ही नहीं कराया गया बल्कि उनमें उन गुलामी के दिनों के प्रति संवेदना भी पैदा की गई जो उन्होंने कभी नहीं देखी थी। इस अभियान ने देश–विदेश के समस्त लोगों को हमारी हजारों साल पुरानी संस्कृति एवं परम्पराओं से परिचित कराया।

महात्मा गांधी की 12 मार्च 1930 की दांडी यात्रा (नमक सत्याग्रह) से प्रेरित आजादी का अमृत महोत्सव अभियान का समापन 31 अक्टूबर 2023 को सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती (राष्ट्रीय एकता दिवस) पर प्रधानमंत्री द्वारा किया गया। जिस प्रकार दांडी यात्रा में हरेक भारतीय की भागीदारी देखी गई, उसी प्रकार आजादी के अमृत महोत्सव में भी लोगों ने एकता एवं शांति के साथ मिल–जुलकर हिस्सा लिया। यह कार्यक्रम इस बात का प्रमाण है कि आज भी भारत के बच्चे, युवा एवं बुजुर्गों में देश के प्रति पहले की तरह ही जोश और उत्साह विद्यमान है और हम अब भी विश्व शांति अर्थात 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को अंगीकृत किए हुए हैं। इस उत्सव को मनाने के लिए स्वयंसेवक पारंपरिक परिधान पहन कर अमृत कलश के साथ कर्तव्य पथ पर पहुँचे। दो वर्ष से अधिक लंबा चलने वाला आजादी का अमृत

महोत्सव 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के साथ समाप्त हुआ।

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान सभी भारत वासियों के लिए बहुत ही महत्त्वता एवं गौरवमयी कार्यक्रम था। 30 जून को रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 103 वें एपिसोड में मा० प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा इस अभियान को आरंभ करने की घोषणा की गई थी। जिसका नारा था– 'मिट्टी को नमन, वीरों का वंदन'। पूरे देश में यह अभियान आजादी के अमृत महोत्सव के अंतिम कार्यक्रम के रूप में 9 अगस्त से लेकर 30 अगस्त तक चलाया गया। इस अभियान के द्वारा बच्चों और युवाओं को स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लेने वाले वीर–वीरांगनाओं के साहस, पराक्रम और गौरव से परिचित कराया गया। आज़ादी की लड़ाई में वैसे तो सभी स्वतंत्रता सेनानियों को ससम्मान श्रद्धांजलि प्रदान की गई, लेकिन कुछ स्वतंत्रता सेनानी इस श्रद्धांजलि से वंचित रह गए। इस कार्यक्रम ने उन सभी वंचित/छुपे वीर सपूतों के शौर्यगाथा की याद दिलाई तथा श्रद्धांजलि अर्पित की, जो कि इतिहास के पन्नों में दबे रह गए या किसी कारण सामने नहीं आ पाए ।

इस अभियान के द्वारा देश के हरेक बच्चे एवं युवा के मन में राष्ट्रप्रेम और अपने देश की मिट्टी को नमन, वीरों को वंदन करने की भावना का संचार हुआ। वास्तविक रूप में यह कार्यक्रम कोई आयोजन नहीं बल्कि विचार, लेखन, नृत्य, कला, पूजा और सेवा के माध्यम से देश के जन–जन की भावनाओं की अभिव्यक्ति था।

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान का उद्देश्य

इस अभियान का उद्देश्य युवाओं में अपने देश की माटी के प्रति आदर, प्रेम और गौरव की भावना को संचारित करना, अपना जीवन बलिदान करने वाले बहादुर स्वतंत्रता सेनानियों एवं वीर–वीरांगनाओं का सम्मान करना तथा गाँव पंचायत, ब्लॉक, शहरी स्थानीय निकाय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके जन–जन को अपनी मिट्टी से जोड़कर राष्ट्रीय एकता का संदेश देना था। इस अभियान का एक और विशिष्ट उद्देश्य देश के कोने–कोने में छुपी आजादी की उन गाथाओं और वीर–वीरांगनाओं को उजाकर करना था जिन्हें कि उचित सम्मान नहीं मिला।

पंचप्रण की प्रतिज्ञा

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के तहत आयोजित स्वतंत्रता दिवस एवं अन्य कार्यक्रमों में देश–विदेश के सभी भारतीय नागरिकों ने पंच प्रण की प्रतिज्ञा ग्रहण की। यह प्रतिज्ञा देश के प्रति समर्पण एवं राष्ट्र प्रेम की भावना का साक्ष्य बनी। इस गतिविधि में देश–विदेश के 4 करोड़ से अधिक लोगों ने हाथ में मिट्टी या फिर मिट्टी का दीपक लेकर प्रतिज्ञा सेल्फी लीं। जनभागीदारी को बढ़ावा देने के लिए खींची गई इन सेल्फी को www.merimaatimeradesh.gov.in वेबसाइट पर अपलोड किया गया। इस अभियान के कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने पर या फिर सेल्फी अपलोड करने पर प्रतिभागियों को प्रशंसा प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए ।

राष्ट्र निर्माण की भावना

हमारे देश की माटी कर्तव्य बोध की माटी है। अमृत कलशों की मिट्टी जन–जन को सद्कर्म करने एवं विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए प्रेरित करेगी। 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान ने भारतवासियों में देशभक्ति व एकजुटता की भावना को पोषित किया है। वर्ष 2047 में जब हमारा देश स्वतंत्रता का शताब्दी महोत्सव मना रहा होगा तो देश का प्रत्येक नागरिक भारत को समर्थ, सशक्त और दुनिया में सर्वशक्तिमान बनते देखना चाहेगा। उसकी इस प्रबल इच्छा के बीज इस अभियान में अभी से रोपने का कार्य किया गया है। अतः हमे पूरी ईमानदारी, प्रेम और समर्पण के साथ ऐसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक आदि कार्यों को करना चाहिए जो राष्ट्र को विकास के पथ पर अग्रगामी करें।

युवाओं का आह्वान

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान का सबसे सकारात्मक प्रभाव भारत की युवा पीढ़ी पर पड़ा है। जिन्होंने गुलामी तो नहीं देखी लेकिन इस अभियान में आयोजित आजादी के नायकों की वीरता और शौर्यता ने उनके अंदर देश प्रेम, अनेकता में एकता और देश के गौरवमयी संस्कृति पर गर्व करने जैसी अनेकों संवेदनाओं को पैदा किया। यह अभियान इस बात का प्रमाण है कि भारत के युवाओं में वह जिजीविषा है कि यदि वह संगठित हो जाएँ तो असम्भव कार्य और लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकते हैं।

विराट सांस्कृतिक विरासत से परिचय

इस अभियान के तहत देश के हरेक नागरिक ने अपनी विराट सांस्कृतिक विरासत से परिचय, उसकी भव्यता पर गर्व और आनंदित होने का उत्सव मनाया। हमारा देश दुनिया भर में अपनी अनूठी संस्कृति, विविधता और समृद्धि की मिसाल माना जाता है। हमारे देश की समृद्ध विरासत और आदिकालीन इतिहास हमारे देश की पहचान बनाते हैं, जो कि हमे गर्व का अनुभव कराती हैं।

मातृभूमि से जुड़ाव

भारत देश की माटी वह माटी है जो देश के प्रत्येक निवासी को कोने–कोने से आत्मीयता के साथ जोड़ती है दुनिया की न जानें कितनी सभ्यताएँ समाप्त हो गईं, लेकिन हमारी संस्कृति और सभ्यता आज भी सीना ताने खड़ी हुई है। हम चाहें देश–दुनिया के किसी भी कोने पर रहें, लेकिन हमारी जन्म स्थली रूपी मिट्टी की सोंधी सुगंध हमें वापस खींचती ही रहती है। देश विभाजन के बाद या दूसरे राज्यों व देशों में रोज़गार की तलाश में गए लोग जब अपने देश में आते हैं तो इस धरती माँ को नमन करते हैं, वंदन करते हैं और गौरवान्वित महसूस करते हैं कि हमने या हमारे पूर्वजों ने भारत जैसे देश में जन्म लिया। **''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''** अर्थात माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊँचा है। 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान देश के सभी नागरिकों से पेड़–पौधों, जीव–जंतुओं की स्वदेशी

प्रजातियों को संरक्षित रखने, पर्यावरण को साफ–स्वच्छ व हरा–भरा रखने तथा अधिकाधिक पेड़–पौधे लगाने का भी वचन माँगता है।

विश्वकल्याण

भारत भूमि ऋषि–मुनि और महापुरूषों की तपोभूमि है, जहाँ स्वामी विवेकनन्द, रामानुजन, महात्मा गाँधी, महर्षि अरविंद तथा महात्मा बुद्ध जैसे अनेकों महापुरूष पैदा हुए। भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा में **'एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य'** की वैश्विक परिकल्पना निहित है। भारतीय संस्कृति हजारों वर्षों से सभी प्राणियों के शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और बंधुत्वता की भावना पर ज़ोर देती आ रही है। हमारी संस्कृति **'सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः।'** अर्थात सभी के सुखी और निरोगी होने की मंगल कामना करती आयी है। राष्ट्र सर्वोपरि की सोच के साथ **'वसुधैव कुटुम्बकम'** की सकारात्मक भावना हमारी मूल प्रवृत्ति है। आज भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, अतिथि देवो भवः, प्राकृतिक आपदाओं वाले देशों की तुरंत सहायता, युद्ध वाले देशों में शांति का प्रस्ताव, अहिंसा का समर्थन जैसे अनगिनत कार्य भारत की अलग पहचान के परिचायक हैं। प्राचीन समय में तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों ने अनेकानेक विदेशियों की ज्ञान पिपासा को शांत किया है। इस अभियान ने देश के सभी लोगों को मिल–जुलकर रहने, संगठित रहने, सबके भले के दृष्टिकोण को और अधिक दृढ़ किया है। साथ ही दुनिया को यह संदेश भी दिया है कि यदि वृहद स्तर पर पेड़–पौधे लगाए जाएँ, वीर–वीरांगनाओं व उनके परिवारजनों का यथोचित सम्मान किया जाए, अपनी जन्म भूमि से प्यार किया जाए तो ग्लोबल वार्मिंग, बीमारी, एकात्मकता तथा आतंकवाद जैसी समस्याओं से मुक्ति पाई जा सकती है।

अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि ऐसे अभियान निश्चित ही देश के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्र प्रेम, एकता और अखंडता बनाए रखने हेतु प्राण प्रतिष्ठा करेंगे तथा हमारे देश के युवा आजादी के शताब्दी वर्ष तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में पूरे जोश और उत्साह के साथ अगुवाई करेंगे।

संदर्भ

https://amritmahotsav.nic.in/about-hi.htm
https://indianews.in/indianews/my-soil-my-country-my-soil-my-country-campaign-will-start-from-today/
https://hindi.business-standard.com/india-news/meri-mati-mera-desh-pm-modi-applied-tilak-of-soil-brought-from-many-parts-of-india
देश को विकसित राष्ट्र बनाने का सपना साकार करेगी युवा शक्ति : मोदी, शीर्षक समाचार, अमर उजाला, बरेली संस्करण, प्रथम पृश्ठ 01.11.2023

◆◆◆

मेरी माटी, मेरा देश

बिनीश बी
शोधार्थी

"मेरी माटी, मेरा देश" केवल शब्दों का एक समूह नहीं है, यह एक भावना है, जो हर भारतीय के हृदय में देशभक्ति की चिंगारी प्रज्ज्वलित करती है। यह हमें हमारी जड़ों की याद दिलाती है, हमारी माटी की महानता और हमारे देश की गरिमा का बोध कराती है। भारत, जिसे हम "माँ" कहते हैं, उसकी माटी का हर कण हमारे लिए पूजनीय है। यह विषय हमें प्रेरित करता है कि हम अपनी धरती, अपने देश और अपनी संस्कृति के प्रति अपने दायित्व को समझें और उसे निभाएं।

भारत की माटी का अर्थ केवल मिट्टी नहीं है, यह हमारी पहचान है। इस मिट्टी में वह शक्ति है जिसने हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता को पोषित किया है। यही माटी हमारे किसानों को फसलों का आधार देती है, हमारे सैनिकों को अपने देश के लिए लड़ने की प्रेरणा देती है, और हमारे वैज्ञानिकों को नवाचार करने का हौसला देती है।

भारत की माटी केवल उर्वरक मिट्टी नहीं, बल्कि यह एक अद्भुत भावनात्मक और सांस्कृतिक महत्त्व रखती है। यह वह माटी है, जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखती है।

मिट्टी केवल एक भौतिक तत्व नहीं है; यह हमारे जीवन का आधार है। हमारे खेतों की उपजाऊ माटी न केवल हमारे लिए भोजन का प्रबंध करती है, बल्कि यह हमारे देश की आर्थिक प्रगति में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस माटी में हमारे पूर्वजों का पसीना, मेहनत और उनकी कुर्बानियों की गंध बसी है। भारत की यह माटी हमारे लिए अमूल्य है क्योंकि यह हमारे अस्तित्व का प्रतीक है। इसके कण–कण में हमारे इतिहास की गाथाएँ छिपी हुई हैं। इस माटी की संरचना में न केवल जैविक तत्व शामिल हैं, बल्कि यह हमारे जीवन को ऊर्जा और प्रेरणा देने का भी प्रतीक है।

देशभक्ति का अर्थ केवल तिरंगे को सलाम करना या स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहराना नहीं है। इसका अर्थ है अपनी माटी से, अपने देशवासियों से प्रेम करना और उनके लिए हर संभव योगदान देना। जब हम 'मेरी माटी, मेरा देश" कहते हैं, तो यह एक व्यक्तिगत प्रतिबद्धता बन जाती है कि हम अपने देश के विकास और सुरक्षा के लिए समर्पित रहेंगे। यह भावना हर भारतीय के भीतर होनी चाहिए, चाहे वह किसी भी क्षेत्र, धर्म या भाषा से संबंधित हो। यह प्रेम और समर्पण हमें एकजुट करता है और देश की प्रगति के लिए प्रेरित करता है।

सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक युग तक, भारत की माटी ने अद्भुत ज्ञान, कला और विज्ञान को जन्म दिया। यहाँ की भूमि ने बुद्ध, महावीर, चाणक्य और आर्यभट्ट जैसे महान व्यक्तित्वों को पोषित

किया। मौर्य, गुप्त और मुगल साम्राज्य जैसे शक्तिशाली साम्राज्यों की नींव इस मिट्टी में रखी गई। यहाँ की माटी ने अकबर जैसे शासक और मीरा बाई जैसे संत को जन्म दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह माटी भगत सिंह, महात्मा गाँधी, रानी लक्ष्मीबाई और सुभाष चंद्र बोस जैसे वीरों के बलिदान से लाल हो गई। इन वीरों ने हमें स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपनी जान तक कुर्बान कर दी। इस माटी ने हमें यह सिखाया कि संघर्ष और बलिदान के बिना कोई राष्ट्र महान नहीं बनता।

आज जब हम प्रगति के शिखर पर पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं, तो हमें अपनी माटी की ओर भी ध्यान देना होगा। भारत का अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। किसानों के लिए माटी ही उनकी जीविका का आधार है। लेकिन, रासायनिक उर्वरकों और अत्यधिक खेती के कारण हमारी माटी की उर्वरता कम हो रही है। हमें जैविक खेती को अपनाने और मृदा संरक्षण पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारी माटी बढ़ते प्रदूषण और अनियमित विकास के कारण खतरे में है। शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण न केवल माटी प्रदूषित हो रही है, बल्कि इसके पोषक तत्व भी खत्म हो रहे हैं। हमें वृक्षारोपण और जल संरक्षण की दिशा में कदम उठाने होंगे। जलवायु परिवर्तन के कारण भारत की माटी पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। सूखा, बाढ़ और मिट्टी का कटाव हमारी माटी को कमजोर बना रहे हैं। हमें टिकाऊ विकास के मॉडल अपनाने होंगे।

भारत एक ऐसा देश है, जो अपनी विविधता में एकता के लिए जाना जाता है। यहाँ की माटी ने वेदों की ऋचाएँ गाई हैं, रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य रचे हैं। यहाँ की धरोहर, जैसे ताजमहल, खजुराहो के मंदिर, और अजंता–एलोरा की गुफाएँ, हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रमाण हैं। यह धरोहर हमें अपनी पहचान और गौरव का अनुभव कराती है। ये स्मारक न केवल हमारे अतीत की कहानी कहते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा भी देते हैं। इनके संरक्षण के लिए नागरिकों की जागरूकता और सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। भारत की भूमि को पवित्र माना गया है। यही कारण है कि इसे 'भारत माता' कहकर संबोधित किया जाता है। यह माटी हमें कृतज्ञता और आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाती है। हमारे तीर्थ स्थल, गंगा जैसी पवित्र नदियाँ, और हिमालय जैसे पहाड़ यह सब हमारी माटी की शक्ति और महिमा को दर्शाते हैं। भारत की माटी ने कालिदास, तुलसीदास, रवींद्रनाथ टैगोर और प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकारों को जन्म दिया। यहाँ की मिट्टी ने नृत्य, संगीत, पेंटिंग और मूर्तिकला जैसे अद्भुत कलाओं को पोषित किया है।

हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने देश की उन्नति में योगदान दे। चाहे वह एक सैनिक के रूप में सीमा की रक्षा करना हो, एक शिक्षक के रूप में नई पीढ़ी को शिक्षित करना हो, या एक वैज्ञानिक के रूप में नई खोज करना हो हर कार्य का अपना महत्त्व है। हम सभी के छोटे–छोटे प्रयास मिलकर हमारे देश को महान बनाते हैं। "मेरी माटी, मेरा देश" हमें यह सिखाता है कि हम सभी का योगदान आवश्यक है। इसके अलावा, हम स्थानीय स्तर पर स्वच्छता अभियान, ग्रामीण विकास परियोजनाओं और सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेकर भी अपने देश के लिए कुछ कर सकते

हैं। नागरिकों का सक्रिय भागीदारी ही देश के हर कोने में विकास की रोशनी ला सकती है। समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलना और समान अवसर प्रदान करना भी एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।

हमारी माटी की रक्षा के लिए हमारी सेना के जवान दिन–रात सीमाओं पर तैनात रहते हैं। वे अपनी जान की परवाह किए बिना देश की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। उनके बलिदान के बिना हम अपने घरों में सुरक्षित नहीं रह सकते। "मेरी माटी, मेरा देश का असली अर्थ तभी पूरा होता है जब हम उनके योगदान को याद रखें और उनके प्रति आभार व्यक्त करें। शहीदों की स्मृति में बनाए गए स्मारक हमारी माटी की रक्षा के प्रति उनके अटूट समर्पण की गवाही देते हैं। हमारे सैनिक न केवल सीमाओं पर लड़ते हैं, बल्कि आपदाओं के समय में भी देशवासियों की मदद के लिए तत्पर रहते हैं। उनकी देशभक्ति हमें प्रेरणा देती है कि हम भी अपने स्तर पर देश के लिए योगदान करें।

निष्कर्ष

"मेरी माटी, मेरा देश" केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक संकल्प है। यह हमें हमारी धरती, हमारी संस्कृति और हमारे देश के प्रति अपने प्रेम, सम्मान और कर्तव्यों की याद दिलाता है। हमारी माटी हमारे लिए केवल भूमि का टुकड़ा नहीं है; यह हमारी पहचान, हमारा गौरव और हमारी प्रेरणा है। हमें अपनी माटी का सम्मान करना चाहिए, इसे स्वच्छ और सुरक्षित रखना चाहिए, और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर स्वरूप में छोड़ना चाहिए। यही हमारी सच्ची देशभक्ति होगी।

◆◆◆

हिंदी के वैश्वीकरण के प्रभावी कारक

मीना यादव
हिंदी विभाग, बरेली कॉलेज बरेली
Emqil; menaya1@gmail.com

शोध सारांश

आज हिन्दी विश्व की भाषाओं में शीर्ष पर पहुँचने वाली भाषाओं में से एक प्रमुख भाषा बन चुकी हैं। हिन्दी के वैश्विक भाषा बनने के कई कारण हैं, जिनमें भारतीय डायस्पोरा (अप्रवासी भारतीय), सोशल मीडिया, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, ऑनलाइन शिक्षा, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, आर्थिक कारक, तकनीकी प्रगति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मीडिया और मनोरंजन, शिक्षा और अनुसंधान तथा सरकारी प्रयास प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। हिन्दी को दुनियाभर में लोकप्रिय बनाने वाले ये कारक कहीं–कहीं तो अपनी पृथक् भूमिका निभाते दिख पड़ते हैं, किन्तु सामान्य तौर पर ये एक–दूसरे में इतने घुले–मिले हैं कि इनका अलग–अलग विवेचन सम्भव नहीं है। किसी एक कारक में कोई दूसरा–तीसरा कारक अनायास ही आ जाता है। इन्हीं तथ्यों को देखते हुए हम इन कारकों को देखने का प्रयास करते हैं।

आज हिन्दी विश्व की भाषाओं में शीर्ष पर पहुँचने वाली भाषाओं में से एक प्रमुख भाषा बन चुकी हैं। हिन्दी के वैश्विक भाषा बनने के कई कारण हैं, जिनमें भारतीय डायस्पोरा (अप्रवासी भारतीय), सोशल मीडिया, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, ऑनलाइन शिक्षा, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, आर्थिक कारक, तकनीकी प्रगति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मीडिया और मनोरंजन, शिक्षा और अनुसंधान तथा सरकारी प्रयास प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। हिन्दी को दुनियाभर में लोकप्रिय बनाने वाले ये कारक कहीं–कहीं तो अपनी पृथक् भूमिका निभाते दिख पड़ते हैं, किन्तु सामान्य तौर पर ये एक–दूसरे में इतने घुले–मिले हैं कि इनका अलग–अलग विवेचन सम्भव नहीं है। किसी एक कारक में कोई दूसरा–तीसरा कारक अनायास ही आ जाता है। इन्हीं तथ्यों को देखते हुए हम इन कारकों को देखने का प्रयास करते हैं।

वे लोग जो भारत के बाहर रहते हैं या वहाँ से आए हैं, भारत सरकार के मुताबिक भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों को दो श्रेणियों में बांटा गया है – पहला अनिवासी भारतीय (एनआरआई): ये भारत के नागरिक हैं जो फिलहाल भारत में नहीं रह रहे हैं। दूसरा भारतीय मूल के लोग (पीआईओ): ये भारतीय जन्म या वंश के लोग हैं जो भारत के अलावा किसी दूसरे देश के नागरिक हैं। विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार भारत के बाहर 35.4 मिलियन अनिवासी भारतीय (एनआरआई) और भारतीय मूल के लोग (पीआईओ) (ओसीआई सहित) रह रहे हैं। हर साल, 2.5 मिलियन (25 लाख) भारतीय विदेशों में प्रवास करते हैं, जिससे भारत दुनिया में सबसे अधिक वार्षिक प्रवासियों वाला देश बन जाता है।

19वीं सदी के मध्य में ब्रिटिश उपनिवेश में में जो प्रवास हुआ, वह गिरमिटिया श्रमिकों का था। ज्यादातर भोजपुरी और अवधी बोलने वाले लोग उत्तर प्रदेश और बिहार के भोजपुर जिले से भारतीय

गिरमिटिया प्रणाली के तहत अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों में गए जिनमें प्रमुख गंतव्य मॉरीशस, गुयान, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम एवं कैरिबियन के अन्य भाग (जैसे जमैका, ग्वाडेलोप, मार्टिनिक, बेलीज, बारबाडोस, ग्रेनेडा, सेंट विंसेंट और ग्रेनेडाइंस, सेंट लूसिया), फिज़ी, रीयूनियन, सेशेल्स, मलय प्रायद्वीप (जैसे मलेशिया और सिंगापुर), पूर्वी अफ्रीका (केन्या, सोमालिया, तंजानिया, युगांडा) और दक्षिण अफ्रीका थे।

गुजराती और सिंधी व्यापारी अरब प्रायद्वीप, अदन, ओमान, बहरीन, दुबई, दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीकी देशों में बस गए, जिनमें से अधिकांश पर अंग्रेजों का शासन था। पंजाबी, राजस्थानी, सिंधी, बलूच और कश्मीरी ऊँट चालकों को ऑस्ट्रेलिया लाया गया था। आजादी के बाद बहुत से लोग उच्च शिक्षा, रोजगार अथवा बेहतर भविष्य के लिए विभिन्न देशों में जाते हैं। उनमें से अधिकांश वहीं बस जाते हैं। निःसंदेह दुनिया भर में फैले ये प्रवासी हिंदी से गहरा रिश्ता रखते हैं। यह प्रवासी विभिन्न देशों में हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने और इसके वैश्विक विकास में योगदान देने में एक प्रेरक शक्ति बन जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्य में छात्रों को भविष्य की तकनीकी चुनौतियों के लिए तैयार करना और उन्हें आधुनिक तकनीकों से तैयार करना भी है। तकनीकी शिक्षा को लेकर नई शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्य कुछ इस प्रकार हैं –

1. **डिजिटल शिक्षा का विस्तार** - छात्रों को ऑनलाइन और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर मिलेंगे। ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल संसाधनों का उपयोग बढ़ाया जाएगा।

2. **तकनीकी कौशल विकास** - छात्रों को विभिन्न तकनीकी कौशल जैसे कोडिंग, AI, रोबोटिक्स और डेटा साइंस में प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिससे वे तकनीकी रूप से सक्षम बन सकें।

3. **नवाचार और शोध** - शोध और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए संसाधन और सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी। राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (NRF) की स्थापना की जाएगी जो उच्च गुणवत्ता वाले शोध को बढ़ावा देगा।

भारत की कई तकनीकी संस्थाओं जैसे 'सी डेक' आदि ने भाषा प्रयोग की दिशा में काफी अनुसंधान किए हैं, जिसके फलस्वरूप हिंदी लेखन की जटिलता, फोन्ट की समस्या, की–बोर्ड में भाषा परिवर्तन एवं अनुवाद के सॉफ्टवेयर ने कई समस्याओं का निवारण किया है। आज के दौर में किसी भी चीज को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल टूल्स काफी मददगार होते हैं। इसलिए सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा 'सी डैक' के सहयोग से तैयार किये गये 'लर्निंग इंडियन लैंग्वेज विद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (लीला) मोबाइल ऐप भी बनाया गया है। इस ऐप पर लोग आसान तरीके से हिंदी भाषा को सीख सकते हैं। इसके अलावा भी सरकार कई अन्य डिजिटल तरीकों को भी प्रमोट कर रही है। आज

मात्र देश ही नहीं वरन् विश्व भर की वेबसाइट हिंदी को भी प्राथमिकता दे रही हैं। ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, एसएमएस और वेब जगत में हिंदी को बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी कंपनियाँ हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं।

तकनीकी के विकास के बाद 'सोशल मीडिया' सूचना क्रांति के नवीनतम साधन के रूप में विकसित हुई। आजकल फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सऐप्प, यूट्यूब लिंक्ड इन, स्नेप चैट, टम्ब्लर, ब्लोगिंग एवं वी चैट इत्यादि कई सोशल मीडिया चलन में आए हैं। सोशल मीडिया एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से अपने उपयोगकर्ता को संवाद स्थापित करने की सुविधा प्रदान करती है। उपयोगकर्ता आमतौर पर इस माध्यम का प्रयोग करने के लिए डेस्कटॉप, कंप्यूटर, लैपटॉप, टेबलेट एवं मोबाईल फोन पर आधारित प्रौद्योगिकों के माध्यम से सोशल मीडिया की सेवाओं का उपयोग करते हैं। समाज के मध्य वार्तालाप स्थापित करने की इसकी अद्भुत क्षमता के कारण धीरे–धीरे यह जन–जन तक पहुँच रहा है। पहले इसका प्रयोग करने में भाषा की जो बाध्यता थी हिंदी भाषा के प्रयोग ने वह भी दूर कर दी है। इस मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषी हिंदुस्तानी जहाँ व्हाट्सऐप्प के जरिए एक–दूसरे से वार्तालाप कर सकता है वहीं यूट्यूब के जरिए कई विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। 'लिंक्ड इन' आम आदमियों को रोजगार तलाशने में मदद कर रहा है। ब्लॉगिंग ने अपने उपयोगकर्ता को उसके विचारों की अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान किया है। सोशल मीडिया की इन्हीं खूबियों के चलते आम जनता में इस मीडिया की माँग दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। मोबाइल कंपनियों ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध कराई है। आज हिंदी राजनीति, मनोरंजन एवं विज्ञापनों की प्रमुख भाषा बन गयी है। डिजिटल समय के दौर में हिंदी का स्वरूप भी बदला है। फेसबुक एवं अन्य सोशल मीडिया ने नवोदित हिंदी के साहित्यकारों को अपनी रचनाओं को पाठकों तक द्रुतगति से पहुँचने का कार्य किया है। आज फेसबुक पर कई साहित्यिक पेज जैसे हिंदी पत्रिका पेज, हिंदी कविता पेज एवं हिंदी समीक्षा पेज इत्यादि हैं जहाँ पर समकालीन हिंदी प्रेमियों की रचनाएँ एवं समीक्षाएँ देखी जा सकती हैं। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग करने वालों में भारत के हिंदी भाषी राज्यों के लोग ही नहीं अपितु दुनिया भर में अनेक देशों यथा अमेरिका, रूस, यूक्रेन, अरब, जापान, चीन, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, वेस्टइंडीज के विदेशी मूल के अनेक लोग हिंदी में सक्रिय हैं।

देश का लगभग 60 प्रतिशत बाजार हिंदी बोलने वाले लोगों का है। भारत विश्व में सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार होने के नाते भी विश्व वाणिज्य की सभी संस्थाएँ हिंदी के प्रयोग को अपरिहार्य मान रही हैं। आज प्रत्येक कंपनी के विज्ञापन का आधार केवल हिंदी है। इतना ही नहीं विदेशी कंपनियों के मोबाइल फोन भी हिंदी में टाइपिंग की सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं। सोशल मीडिया पर भी हिंदी भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, मुक्त बाजार और विराटपूंजी के इस दौर में सर्वत्र हिंदी को स्वीकृति मिल रही है। विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत की जमीन पर अपने पैर जमाने तथा कारोबार को बढ़ाने के लिए विज्ञापनों, होर्डिंगों तथा प्रचार–प्रसार में हिंदी को यथोचित स्थान दे रही है।

हिंदी के विस्तार और प्रचार के लिए वह एक बहुत बड़ा और सशक्त माध्यम है और वह हैं हिंदी फिल्में। हिंदी फिल्में मनोरंजन जगत् का एक ऐसा पहलू है, जो हमें विश्व के दूसरे देशों में भी काफी मशहूर करता है। दरअसल हिंदी फिल्में भारतीय डायस्पोरा की सांस्कृतिक वंचना की भूख को बेहद प्रभावी ढंग से पूरा करती हैं। कैरिबियाई भारतवंशी इस मायने में अलग रहे हैं कि उनका यूरोपीय और अमेरिकी भारतीय डायस्पोरा की तरह भारत से जीवित संपर्क नहीं रहा है। ऐसे में मिट्टी की भूख को मिटाने का जरिया बॉलीवुड की फिल्में और गाने ही थे। यह बात कैरिबियाई भारतीयों की ही नहीं, बल्कि फिज़ी, मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका के संदर्भ में भी प्रासंगिक है।

हिंदी सिनेमा का विदेशों में काफी बाजार है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बाँग्लादेश, खाड़ी प्रदेश, इजराइल, रूस व लेटिन अमेरिका में हिंदी फिल्में पहले से ही लोकप्रिय रही हैं। भारत–चीन संबंध को प्रगाढ़ करने में हिंदी सिनेमा भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हिंदी फिल्में सीमाई और भाषाई भेद के अंतर को दूर करते हुए चीन में लोकप्रिय हो रही हैं। भारत–चीन के मध्य सीमा विवाद दोनों देशों के बीच के सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रभावित नहीं कर पाया है।

यू.ए.ई. में एफ.एम. के कम–से–कम तीन ऐसे चैनल हैं, जिन पर चौबीसों घंटे हिंदी गाने, समाचार और अन्य कार्यक्रम सुने जा सकते हैं। दिन भर इन पर अंतर्राष्ट्रीय उत्पादों के विज्ञापन सुने जा सकते हैं। यह इस बात का सबूत है कि हिंदी खूब लोकप्रिय है और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ अपने माल बेचने के लिए हिंदी के महत्त्व को गंभीरता से महसूस करती हैं। व्यापार में इस प्रकार हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय जरूरत को इसकी ताकत समझा जाना चाहिए।

हंगरी के बुडापेस्ट हंगरी में दूतावास की कक्षाओं से जुड़ा एक हिंदी फिल्म क्लब भी है, जो प्रति माह एक हिंदी फिल्म प्रदर्शन करता है। इसमें दर्शकों की संख्या पर्याप्त होती है। लगभग प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला भारतीय फिल्मोत्सव भी हंगरी के लोगों में बहुत ही लोकप्रिय है। बुडापेस्ट में आयोजित होने वाला इंडिया फेस्ट भी भारतीय संस्कृति की लोकप्रियता के नए मापदण्ड बना रहे हैं।

विश्व में सबसे ज्यादा संख्या में भारतीय प्रवासी ही हैं, जो लगभग सभी देशों में निवास करते हैं। वे अपने साथ अपनी भाषा व संस्कृति भी साथ ले गये तथा भरसक उसे सहेज कर रखा है। भारत की इस संस्कृति के सम्पर्क में विदेशी भी आते हैं और उसे बहुत पसंद भी करते हैं। इसी भाँति विदेशों से भारत आने वाले लोग भी इससे प्रभावित होते हैं। इसी क्रम में वे एक–दूसरे की भाषा से भी परिचित होते हैं। इसके अतिरिक्त भारत सरकार की अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति के तहत भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् (ICCR) ने विश्व के लगभग 73 देशों के साथ भारतीय संस्कृति, भारतीय सिनेमा, भारतीय साहित्य, शांति अध्ययन एवं हिन्दी भाषा को पढ़ाने के लिए एक समझौता ज्ञापन स्थापित किया है, जिसके अंतर्गत इन देशों के निवासी हिन्दी में विशेषज्ञ बनने, भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने, भारत में घूमने के लिए हिन्दी सीखते हैं। इन्हीं तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए हम कुछ विशिष्ट देशों के साथ भारतीय संस्कृति के आदान–प्रदान को देखते हैं।

पूरी दुनिया में भारत से जाने वाले गिरमिटिया मजदूर के पास अपनी सांस्कृतिक स्मृतियों के सिवाय अगर कोई बेहद बहुमूल्य चीज थी तो वह थी तुलसीदास की लिखी 'रामचरितमानस'। आज कैरिबियान देशों में जितने भी हिंदू बचे हैं, उनके धर्म की धारणा को पिछले डेढ़ सौ सालों से कायम रखने में 'रामचरितमानस' की सबसे बड़ी भूमिका है। सिडनी में 'हिंदी समाज' की स्थापना 1989 में हुई थी। इसका उद्देश्य है – हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति को बढ़ावा देना, आगामी पीढ़ियों को हिंदी संस्कृति की रक्षा के लिए सचेत करना, युवाओं में सांस्कृतिक जागरुकता लाना और अपनी अस्मिता की पहचान कराना। हिंदी समाज के पास प्रशिक्षित हिंदी शिक्षक हैं, जो हिंदी पढ़ाते हैं। शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों के माता–पिता मिल–जुलकर काम करते हैं।

सन् 1990 के दशक में आरंभिक वर्षों में ऑस्ट्रेलिया के विविध शहरों में हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए कई संस्थाएँ स्थापित हुईं। ऊपर कथित हिंदी समाज के अतिरिक्त मेलबर्न में 'हिंदी निकेतन', हिंदी संस्थाओं की गतिविधियों में काफी समानताएँ हैं, जैसे – होली, दीवाली आदि भारतीय त्योहारों को मनाना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना, हिंदी कक्षाओं का प्रबंध करना। मेलबर्न के हिंदी निकेतन के वार्षिक समारोह के कार्यक्रम में हर वर्ष हिंदी विषय को लेकर 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है।

भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम का उदाहरण अर्मेनिया में श्रीमद्भागवतगीता, महाभारत और पंचतंत्र की कहानियों का अर्मेनियन भाषा के अनुवाद से मिलता है, जिनका अध्ययन अर्मेनियन बुद्धिजीवी वर्ग बड़ी तन्मयता से करते हैं। भारतीय संस्कृति के बारे में जानने की छात्रों में बहुत जिज्ञासा और उत्सुकता है। इस विश्वविद्यालय की विशिष्ट बात यह है कि यहाँ पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में 90 प्रतिशत छात्राएँ हैं, जिनका भारतीय वेशभूषा जैसे साड़ी, लहँगा, चूड़ीदार पाजामा कुर्ता व अन्य परंपरागत परिधानों के प्रति व भारतीय आभूषणों विशेष रूप से माथे की बिंदी के प्रति अत्यधिक आकर्षण है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष 'Educational Expo' का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी देशों के अध्यापक अपने एक या दो विद्यार्थियों के साथ 'राष्ट्रीय परिधान' पहनते हैं व अपने देश की भाषा व संस्कृति की विशिष्टता को प्रस्तुत करते हैं।

सूरीनाम में रामलीला–रासलीला का प्रचार–प्रसार होता है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य नाटक खेले जाते थे जैसे हरिश्चंद्र–तारामती, श्रवणकुमार, नौलखाहार, कृष्णावतार, रूपबसंत, रसरंगबहार, हकीकतराय, भक्त प्रह्लाद, गरीबों की पुकार। 1970 से 1975 में पंचवटी, दूसरी बीबी, आज कल और आज, हाय रे पैसा, बहू भी बेटी है, मैं औरत हूँ, सैनिक का पिता, प्रवासी आदि प्रसिद्ध हुए। सूरीनाम में अन्य जातियों के साथ लगभग चालीस प्रतिशत संख्या भारतवासियों की है, जो अपने अथक प्रयत्नों से भारतीयता और भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठापित करने में तत्पर हैं।

सिंगापुर में हिंदी नाटक 'दस्तक' का मंचन भी वार्षिक रूप में शुरु हुआ है। धीरे–धीरे ही सही, पर भाषा से जुड़े लगभग हर क्षेत्र में कुछ न कुछ काम शुरु हो गया है। पढ़ने–पढ़ाने के अलावा सिंगापुर

में कई सांस्कृतिक आयोजन होते रहे हैं, जो हिंदी भाषा के विस्तार को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। हर मंगलवार को श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर में हनुमान चालीसा, सुंदरकांड और दुर्गा पाठ का आयोजन उन्हीं लोगों के कारण जीवित है, जो बहुत पहले इस धरती पर कुछ मूर्त और अमूर्त साधनों के साथ आए थे।

हिंदी की लोकप्रिय और जनप्रिय भूमिका ने भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंध को अधिक सशक्त बनाया है, साथ ही ऑस्ट्रेलिया में बसे भारतीय मूल के लोग स्वाभाविक रूप से भारत को अपनी सांस्कृतिक अस्मिता का मूल स्रोत मानते हैं। उनके मन में हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका एक स्वप्नमात्र नहीं है, बल्कि उपनिषद् के उस ऋषि परंपरा की सशक्त माँग है, विश्वमानस की माँग है।

डेनमार्क में अन्य देशों की तरह कोई हिंदी समिति तो नहीं है, मगर हिंदी सांस्कृतिक व धार्मिक संस्थाएँ हैं, जो समय–समय पर भारतीय तीज–त्योहारों, राष्ट्रीय दिवसों व अन्य अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करती रहती हैं। इन कार्यक्रमों में हिंदी भाषा का ही प्रयोग होता है। डेनमार्क में नाना प्रकार की भारतीय संस्थाएँ हैं, इंडियन डेनिश सोसाइटी, ऑल इंडियन कल्चरल सोसाइटी डेनमार्क, इंडियंस इन डेनमार्क, मिलापघर, डेनमार्क तेलुगु एसोसिएशन, बंगाली एसोसिएशन, डीवा (डेनिश–इंडियन वालंटियर एसोसिएशन), जो भारतीय त्योहारों व राष्ट्रीय दिवसों पर कार्यक्रम आयोजित कर विदेशों में बसे भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़े रखती हैं और भारतीय संस्कृति को सहेजे हुए है।

इनके अलावा विदेशों में भारतीय प्रभाव की कई आध्यात्मिक संस्थाएँ हैं, जो कि विदेशियों को प्रभावित करती हैं। आर्ट ऑफ लिविंग, सहज मार्ग, ब्रह्मकुमारी, माँ आनंदमयी आदि। योगा व मेडिटेशन का महत्त्व दिन–पर–दिन बढ़ रहा है। आंतरिक शक्ति व शांति की कामना ने भारतीय अध्यात्म को पश्चिम में बड़ी लोकप्रियता दिलवाई है। हिंदी व भारतीय संस्कृति का प्रभाव इन केंद्रों में स्वतः ही देखने को मिलता है।

जैसे–जैसे भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, व्यवसाय और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में संलग्न होता है, हिंदी भाषा के प्रसार की माँग बढ़ती है वहीं हिंदी भी अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और संचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत की आर्थिक वृद्धि और सांस्कृतिक प्रभाव, जिसमें बॉलीवुड फिल्मों की वैश्विक लोकप्रियता भी शामिल है, हिंदी की बढ़ती मान्यता में योगदान करती है। इसके अतिरिक्त, भारतीय प्रवासी और दुनिया भर के शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी भाषा पाठ्यक्रमों की उपस्थिति इसके अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व को बढ़ाती है, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और समझ को बढ़ावा देती है। हिंदी का प्रभाव भारत की सीमाओं से परे तक फैला हुआ है, जिससे यह वैश्विक प्रासंगिकता वाली भाषा बन गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 हिन्दी भाषा – डॉ. हरदेव बाहरी, संस्करण–2010, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

2 सम्पर्क भाषा हिन्दी : विविध आयाम – सुरेश कुमार और ठाकुर दास, संस्करण–1996, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

3 हिन्दी भाषा : सम्प्रेषण और संचार – डॉ. अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु' एवं डॉ. महन्थी प्रसाद यादव, संस्करण–2023, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली

4 हिन्दी भाषा और तकनीक – डॉ. स्नेहलता एवं उमा चौधरी, संस्करण–2023, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली

5 हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर – डॉ. संतोष गोयल, संस्करण–2022, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली

6 प्रयोजनमूलक हिन्दी – नन्दकिशोर पाण्डेय, संस्करण–2020, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

7 प्रयोजनमूलक हिन्दी (कामकाजी हिन्दी) – रमेश तरुण, संस्करण–2020, अशोक प्रकाशन, दिल्ली

8 प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका – कैलाश नाथ पाण्डेय, संस्करण–2018, लोकभारती प्रकाशन

9 विश्व हिन्दी पत्रिका–2023, विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस

10 अनुवाद (पत्रिका) : संपादक – नीना गुप्ता एवं डॉ. हरीश कुमार सेठी, अंक–184, जुलाई–सितम्बर, 2020, भारतीय अनुवाद परिषद्

11 साहित्य अमृत : साहित्य एवं संस्कृति का संवाहक (मासिक पत्रिका) संपादक – त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, अगस्त–2018

12 https://www.worldometrs.info

13 https:///population.un.org

14 https://wikipedia.org

15 https://mea.gov.in

16 www.jagran.com

17 https://www.eaicairo.gov.in (भारतीय दूतावास काहिरा)

18 https://iccr.gov.in (भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद् की आधिकारिक वेबसाइट)

◆◆◆

भारतीय सिनेमा और साहित्य के द्वारा बदलाव

महफूज आलम[1], सैयद मुहम्मद अरशद रिज़वी[2]
[1]रिसर्च स्कॉलर, [2]अध्यक्ष, उर्दू विभाग रज़ा पी. जी कॉलेज रामपुर, उत्तर प्रदेश

इसमें कोई संदेह नहीं कि सिनेमा का मूल्यांकन कभी साहित्यिक दृष्टिकोण से नहीं हुआ। साहित्यिक सिद्धांतों के कठिन पैटर्न, मानक पर पूरा उतरने के उपरांत भी सिनेमा को साहित्यिक जगत में हाशिये पर रखा गया, जिसे साहित्यिक आलोचकों द्वारा कभी नियमित रूप से समय नहीं दिया गया।

भारतीय सिनेमा की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें दिल और दिमाग को सुकून पहुँचाने वाले गाने होते हैं, जिन्हें नाच और मस्ती के साथ फिल्माया अवश्य जाता है, लेकिन गानों की लोकप्रियता सुनने सुनाने पर निर्भर होती है। हाल ही में एक दक्षिण भारतीय फिल्म के गाने 'नाटू नाटू' को सबसे बड़े फिल्म पुरस्कार ऑस्कर से सम्मानित किया गया, भारतीय सिनेमा के इतिहास में पहली बार किसी गाने को यह पुरस्कार दिया गया।

लेकिन पिछले कुछ वर्षों में फिल्मों में विवादास्पद, फूहड़, अश्लील, मनोवैज्ञानिक, हिंसक और द्विअर्थी सामाग्री का चलन तेजी से बढ़ा है। फिल्म अपनी गौरवशाली परंपरा से हटकर युवा लड़के–लड़कियों को एक काल्पनिक, अवास्तविक सपनों की दुनिया दिखा रहे हैं, जिसका नकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से इन युवाओं की मानसिकता और क्रियाकलापों पर प्रभाव पड़ रहा है।

इसके अलावा फिल्मों के संवाद और गानों के साथ इतनी छेड़छाड़ की जा रही है जिससे फिल्म का मूल स्वरूप विकृत हो गया है। इस प्रकार आधुनिक वाद्ययंत्रों व केमरों के साथ किये जा रहे प्रयोगों एवं नवीनीकरणों ने तथाकथित शास्त्रीय गीतों की सत्यता व फिल्म की वास्तविकता को नष्ट कर दिया है। हद तो तब हो गई जब फिल्म के संवाद और गानों में गालियाँ, अशिष्ट और शर्मनाक शब्द जो किसी वयस्क के सामने नहीं बोले जा सकते सामान्य चलन में आ गए। हालांकि लोग इस तरह कि प्रस्तुति को पसंद जरूर करते हैं यह भी सही है कि फिल्मों या अन्य प्लेट फॉर्मों पर जमीनी भाषा को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जाना चाहिए। इसी बिहाफ या निमित्त पर कुछ गाने व संवाद तो अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुए, कुछ फ़िल्में तो पूरी दुनिया में भारतीय सिनेमा की पहचान बन गईं। लेकिन फिर भी केवल लोकप्रियता के आधार पर इन फिल्मों या गानों को शास्त्रीय कहना कोई वैध तर्क नहीं हो सकता।

बीसवीं शताब्दी से पहले गाँवों, देहातों तथा बड़े शहरों में खुशी के अवसर पर ढोल, शहनाई, लोकगीत आदि गा बजाकर काम चला लिया जाता था। बीसवीं शताब्दी के मध्य से भारतीय सिनेमा के गीतों और फिल्मों को भी लोकप्रियता मिलनी शुरू हुई। इस प्रकार यह भारतीय सिनेमा धीरे–धीरे भारतीय परंपराओं में शामिल हो गये। लेकिन समाज में परेशानी तब पैदा होती है जब सभी अच्छी और बुरी भारतीय परंपराओं को किनारे रखकर एक आर्केस्ट्रा बड़े धूमधाम से गाने बजाता है और आधुनिकता और फैशन के नाम पर भारतीय बेटे–बेटियाँ इन बेतुके गीतों पर नाचते, कूदते और अठखेलियाँ मचाते

नजर आते हैं। निदेशक कथावस्तु में नंगा नाच दिखाने में व्यस्त है। फिल्मों की प्रस्तुति और गीतों के बोलों में अंधाधुंध पश्चिमी नकल की प्रवृत्ति और नग्नता की अंधाधुंध नकल ने शर्म, बड़ों के प्रति सम्मान, सहिष्णुता, पारस्परिकता, प्रेम आदि भारतीय मूल्यों को कमजोर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। विडंबना यह है कि संस्कृति और सभ्यता में नकारात्मक बदलाव अब हमें बुरा नहीं दिखता क्योंकि यही विकसित होने की पहचान जो ठहरा।

ऐसा प्रतीत होता है कि फिल्मों का वह युग बीत गया है जिसमें मानव जीवन की वास्तविक भावनाओं और अनुभवों को संगीत के माध्यम से सभ्य तरीके से प्रस्तुत किया जाता था, जिसमें सार्वभौमिकता पर अच्छी तरह से विचार किया जाता था आज अधिकांश अभिनेता, अभिनेत्री, निदेशक गीतकार, संगीतकार और गायक कलाकारों ने केवल बयानबाजी, छोटी–छोटी बातों पर विवाद और कलाकारी के नाम पर शोर मचाना ही अपना परम उद्देश्य स्वीकार कर लिया है। जो क्षणिक लोकप्रियता और चंद पैसों के लिए समाज में जहर घोलने का काम कर रहे हैं।

भोजपुरी और अन्य क्षेत्रीय फिल्मों ने महिलाओं के सम्मान और गरिमा को ठेस पहुँचाई है। इन फिल्मों ने महिलाओं के खिलाफ सामाजिक माहौल को विकृत कर दिया है। कुछ चरमपंथियों ने ललित कला का अर्थ ही बदल दिया है, जिससे सामाजिक ताना–बाना बिखर सा गया, नीचता और पाखंड की सीमाएँ पार हो गयी हैं। यहाँ तक कि फिल्मों और गीतों का प्रयोग भी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया और स्त्री को केवल उपयोग की वस्तु बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसके कारण यौन उत्पीड़न और हिंसा के साथ प्रेम–प्रसंग, घर वापसी जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है। इस तरह की प्रस्तुति गीतकारों निदेशकों में रचनात्मकता की कमी को दर्शाती है, जो अपने कुछ चुनिंदा विषयों के संकीर्ण दायरे से बाहर नहीं जाना चाहते, या अस्थायी सामाजिक लोकप्रियता और पैसे की चाहत उन्हें इस संकीर्ण दायरे से बाहर नहीं आने देती। चूँकि रचनाकार अपने व्यक्तित्व के बावजूद आवश्यक रूप से अपने परिवेश का प्रतिनिधित्व करता है, वह समाज से प्रभावित होता है और समाज को प्रभावित करता है। एक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व नैतिक रूप से प्रबुद्ध जागरूक रचनाकर व कलाकार ही यह अनुमान लगा सकता है कि लोगों की पसंद और नापसंद का किस हद तक अपनी कृतियों में पालन किया जा सकता है। क्योंकि कलाकार को समाज में सबसे संवेदनशील व्यक्ति माना जाता है। अतः किसी काल विशेष की रचना से उस काल की परिस्थितियों एवं विचारों का भली–भाँति अनुमान लगाया जा सकता है। इसी प्रकार, वर्तमान समाज में गंभीरता और बेतुकेपन की प्रकृति को समझने के लिए आज के गीतों और फिल्मों की स्थिति को देखा जा सकता है।

साहित्यिक आलोचना शैलियों, विषयों की जाँच करके कुछ अर्थों में साहित्य की सेवा और मार्गदर्शन करती है, चाहे वह सृजन या रद्द के रूप में हो। निदेशक व गीतकार को ऐसा मार्गदर्शन शायद ही कभी मिला हो। हालांकि आलोचकों की अजीब बहसों और सख्त आलोचना के बावजूद यह सिनेमा जनता के बीच बेहद प्रभावी और लोकप्रिय रहा, समाज ने इन फिल्मों और गीतों को हाथों–हाथ लिया।

लोगों ने इन फ़िल्मी गीतों को लोकगीतों के उन्नत रूप और विकल्प के रूप में देखा तो फिल्म को नाटक के आधुनिक रूप में। इन गानों की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब भी जहाँ भी मौका मिलता है, गाना चालू। ट्रेन, कार, बस, हवाई जहाज आदि में यात्रा करते समय गाने बड़ी धुन से सुने जाते हैं। शादी की पार्टियों से लेकर मेलों तक, चाय की दुकानों से लेकर पांच सितारा होटलों तक, कार्यशालाओं से लेकर व्यायामशालाओं तक, दुकानों से लेकर शॉपिंग मॉल तक, बाज़ारों से लेकर चार पहिया वाहनों तक, ट्रकों से लेकर खेत खलिहानों तक गानों की पहुँच है. लेकिन ये गीत साहित्यिक आलोचकों तक अपनी पहुँच नहीं बना सके, उन्हें किसी भी तरह से आश्वस्त न कर सके, उनकी आलोचनात्मक टिप्पणियों का विषय न बन सके। हालाँकि, उनमें से शायद ही कोई बुद्धिजीवी ऐसा रहा हो जिसने इन गानों का आनंद न लिया हो। यह दयालुता विस्मृति नहीं तो क्या है?

संगीत फिल्म और गीत का एक अभिन्न अंग है, और एक गीत तो शब्दों के बिना अस्तित्व में ही नहीं आ सकता। शायद, पक्षपाती लेखक गीतों की सरल संगीतमयता और फिल्मों की सीमित विषयवस्तु का बहाना लेकर फिल्मों और गीतों को साहित्य की अग्रणी विधा मानने से बचते रहे। यद्यपि इन फिल्मों और गीतों में उच्चतम विचारों को सर्वोत्तम शब्दों के संयोजन के साथ प्रस्तुत किया जाता हो, सामाजिक जागरूकता से लेकर देश की आजादी तक इसने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हो, इसने लोगों को दुख, दर्द, चिंता, बीमारी आदि में सुकून दिया हो,लंबी दूरी को आनंददायक बना दिया हो, इसमें मानव स्वभाव और प्रकृति का वर्णन किया गया हो, भले ही इसने लोगों के बीच एकजुटता, सहमति और एकता, देशभक्ति, समानता और भाईचारे का संदेश ही क्यों न दिया हो, फिर भी यह फिल्म व गीत साहित्य में अपने उचित स्थान को न पा सके।

फिल्मों और गीतों के सामाजिक महत्त्व, स्थिति और उपयोगिता को देखते हुए आज यह जरूरत महसूस की जाती है कि साहित्यिक मुख्यधारा की अन्य शैली और विधाओं की तरह सिनेमा का भी साहित्य में उपयोग किया जाए और सिनेमा की उच्च कोटि की रचनाओं का मूल्य और महत्त्व निर्धारित किया जाएँ मानक गीतों को स्कूल पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए। इन गीतों के विषय और विचारों को आलोचना के विभिन्न प्रकारों, शब्द और अर्थ शैली अभिव्यक्ति, रचना और संगीत आदि के आलोक में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। ताकि नए लेखकों के सामने स्वस्थ सिद्धांत और उदाहरण हों। इस प्रकार गीतात्मक लेखन की गुणवत्ता में सुधार एवं फिल्म निर्देशन का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

◆◆◆

हिन्दी ग़ज़ल का साम्प्रतिक परिदृश्य : स्वरूप और संवेदना

कुँवर महाराणा प्रताप सिंह 'विद्रोही'
प्राचार्य, डॉ० राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय,
आँवला (बरेली), ई–मेल–dr.maharanapratapsingh@gmail.com

सारांश

''हिन्दी में कविता का आविर्भाव सातवीं–आठवीं शताब्दी के आस–पास सिद्ध, नाथ और जैन कवियों की रचनाओं के रूप में हुआ''1 सातवीं–आठवीं शताब्दी में जन्मीं वही हिन्दी कविता वीरगाथा काल, भक्तिकाल व रीतिकाल से गुजरते हुए आज आधुनिक काल में आ पहुँची है और सतत उत्कर्ष की ओर बढ़ती जा रही है। समय के अनुरूप कविता ने अपनी चाल–ढाल, रूप–रंग एवं परिधान स्वरूप से लेकर सब कुछ बदला है। किन्तु यह बदलाव गिरगिट के चोले की तरह नहीं है, बल्कि क्रान्ति अर्थात् आमूलचूल परिवर्तन की मुहिम जैसा है। इसीलिए देखने में बड़ी नाजुक, नर्म और कोमल– सी लगने वाली कविता को क्रान्ति की पीठिका और कारक माना गया है, इसी का रेखांकन करते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी प्रतिनिधि रचना 'भारत–भारती' में कहा है–''कविता जगत में अनेकों क्रान्तियाँ है कर चुकी, मुरझे मनों में वेग की विद्युत प्रभाएँ भर चुकी।''2कविता समाज को जहॉ एक नई राह और नई दिशा दिखाती है, वहीं समाज का एक सच्चा चित्र भी प्रस्तुत करती है। कविता के कार्य–पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं–''कविता ही हृदय को मुक्तदशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भाव योग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है। उसकी अलग भाव सत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व हृदय हो जाता है।''3 इस प्रकार कविता साहित्य के अन्य रूपों के मुकाबले कहीं अधिक सशक्त और कहीं अधिक प्रभावशाली है।

जिस प्रकार वक्त के दबावों के चलते हिन्दी गद्य में जिस प्रकार अनेक विधाओं का प्रार्दुभाव हुआ, उसी तरह कविता के क्षेत्र में अनेक तरह के पौधे रोपे गए। या यूँ कहिए कि कविता के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किए गए, कभी वह छायावादी कहलाई, कभी प्रगतिवादी, कभी नई कविता के रूप में समादृत हुई। कभी लगा कविता जनमानस के करीब है तो कभी ऐसा महसूस हुआ कि कविता आम आदमी से दूर हो गई है या फिर आम आदमी कविता से दूर हो गया है। इन सबके बावजूद कविता की कुछ विधाएँ या रूप ऐसे हैं, जिन्होंने तेजी के साथ अपनी पहचान कायम की और जिनकी लोकप्रियता का जादू सबके सिर पर चढ़कर बोल रहा है। ऐसे ही काव्य रूपों में हिन्दी ग़ज़ल भी एक है।

ग़ज़ल मूलतः भारतीय साहित्य की विधा नहीं है, बल्कि आयातित विधा है। भाषिक दृष्टि से ग़ज़ल अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है–''सुखन अजजनान'' अर्थात् ''नारी के सौन्दर्य का वर्णन

तथा नारी से बातचीत'' फारसी में ग़ज़ल को परिभाषित करते हुए कहा भी गया है– ''बाजनान गुतगू कर्दन'' यानी औरतों से बातचीत करना।'' कुछ विद्वान ग़ज़ल शब्द का सम्बन्ध अरबी के ही 'ग़ज़ल' शब्द से जोड़ते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ है मृग। अतः संभव है, मृग जैसे नेत्रों वाली रूपसियों के सम्बन्ध में लिखी गई छंदबद्ध प्रेमपरक कविताओं को ग़ज़ल कहा गया हो। कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि 'अरब' में'ग़ज़ल' नामक एक कवि हुआ, जिसने सारी उम्र प्रेम व मस्ती में व्यतीत कर दी। उसकी कविताओं का वर्ण्य विषय प्रेम ही रहा, अतः कालान्तर में 'ग़ज़ल' के नाम पर प्रेमपरक कविताओं को 'ग़ज़ल' कह दिया गया।''4 सुखन अजजनान यानी प्रेयसी से बातचीत से उत्पन्न हिन्दी ग़ज़ल आरम्भ में भले ही प्रेमभावना या रूमानियत को व्यक्त करने वाली रही हो, लेकिन यह स्थिति बाद में कायम न रह सकी, समय के साथ–साथ ग़ज़ल के विषय क्षेत्र में विस्तार होता चला गया। जहाँ तक हिन्दी ग़ज़ल का प्रश्न है, ऐसा लगता है कि उर्दू में ग़ज़ल की अपार लोकप्रियता को देखते हुए हिन्दी कवि ग़ज़ल की ओर आकर्षित हुए होंगे और फिर हिन्दी में ग़ज़ल कहने की रिवायत शुरू हुई होगी। खींच–तान कर हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा को बहुत पुरातन साबित किया जा सकता है। लेकिन जिसे हिन्दी ग़ज़ल कहा जाता है, उसकी शुरूआत दुष्यन्त कुमार से मानी जा सकती है, एक अर्थ में दुष्यन्त ने ही आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल की नींव रखी। ''दुष्यन्त कुमार के उदय के साथ–साथ हिन्दी में ग़ज़ल की महत्ता के एक स्वर्णिम दौर का प्रारम्भ हुआ और वह चर्चा के केन्द्र में ही नहीं आई, वरन् लोकप्रियता के अनूठे शिखर का भी स्पर्श करने लगी।.....और हिन्दी ग़ज़ल ने अपूर्व क्षमताओं से समृद्ध होकर अपनी अस्मिता का उद्घोष किया। आज प्रत्येक नए उगने वाले पाँच कवियों में चार हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में जोर आजमाइश कर रहे हैं।''5 छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी पत्र–पत्रिकाओं में हिन्दी ग़ज़ल प्रमुखता के साथ स्थान पा रही है। यह सही है कि ''प्रारम्भ में ग़ज़ल को निहायत रूमानी काव्यविधा माना गया है। लेकिन ग़ज़ल के नए रचनाकारों ने ग़ज़ल को रूमानियत से निकालकर उसे व्यापक जीवन सन्दर्भों, राजनैतिक पेंचीदगियों और सामाजिक विषमता की अभिव्यक्ति का अलम्बरदार बनाया।''6 जब जनता की आवाज ग़ज़ल में उभरकर आई, तो ऐसी ग़ज़लकारों की हौसला आफज़ाई हुई। ग़ज़ल की अनुभूतियों का दायरा बढ़ता चला गया और आज ग़ज़ल में प्रेम जैसी व्यक्तिगत भावानुशीलता के साथ–साथ जनता की तकलीफ हैं, गरीबों का दुःख है, दंगों के प्रतिचिंता है आपसी द्वेष को लेकर तकलीफ है, और उस सबको लेकर चिन्ता का भाव है, जो किसी भी प्रकार से आदमी की जिन्दगी को तकलीफ़देह बना रहा है। साथ ही व्यक्ति को ढॉढस बंधाने के लिए आश्वस्ति का स्वर भी वहाँ मौजूद है।

हिन्दी गजलों में राजनीतिक स्थितियों–परिस्थितियों को उजागर करने की ध्वनि और गूँज सर्वत्र दिखाई देती है। दुष्यन्त ने निडर होकर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की वकालत की। गौरतलब है कि दुष्यन्त ने यह बात उस समय कही, जब देश में 'इमरजेंसी' लागू थी। तात्कालिक समाज के हृदय में राख के नीचे दबी हुई चिंगारी को कुरेदते हुए 'दुष्यन्त' आहवान करते हैं–

''पुराने पड़ गए डर फेंक दो तुम भी
ये कचरा आज बाहर फेंक दो तुम भी।''[7]

तद्समय तुच्छ स्वार्थों से पंकिल राजनीति के कारण देश की हालत दिनों–दिन खराब होती जा रही थी। एक तरफ साधारण जनता थी, जिसका जमकर शोषण किया जा रहा था और उस पर बढ़ती हुई मँहगाई से सब का जीना मुहाल हो गया था, तो दूसरी तरफ शोषकों का दल मौज–मस्ती के त्यौहार मना रहा था। उस समय दिल्ली सत्ता का केन्द्र और प्रतीक बन गई थी। उस समय के सम्पूर्ण शासन तन्त्र को कठघरे में खड़ा करती पुरूषोत्तम 'प्रतीक' की व्यंग्यपरक यह गजल दृष्टव्य है –

हर टोटे पर टोटा देखो, दिल्ली में
राजनीति का कोठा देखो, दिल्ली में
मंत्री जी का जो बेटा नालायक है
निश्चित उसका कोटा देखो दिल्ली में''[8]

इस प्रकार आज हिन्दी ग़ज़ल आज की दूषित राजनीति का शब्द चित्र खींचते हुए जनता को सावधान कर रही है। हिन्दी ग़ज़ल में आम आदमी की पीड़ा, असुविधा और उसके दु:ख दर्द को अनेक कोणों से छूने एवं प्रस्तुत करने की महारथ हासिल है। बच्चों से जुड़ी विड़म्बन स्थिति को यह शेर जिस प्रकार प्रकट करता है, काबिले तारीफ है –

''जो बच्चा बेंचता है आपके बच्चों को गुब्बारे,
उसे भी अपनी नन्हीं ख्वाहिशों को याद आती है।।''[9]

पढ़ाई–लिखाई के मूल्य और माइने किस प्रकार से अवमूल्यित हुए है; इन–सबको जिस सलीके और तहजीब से ग़ज़ल के इस शेर में पिरोया गया है, बेजोड़ है। प्रस्तुत है ग़ज़ल का शेर–

''ऐन से उसने आग लिखा हो;
ऐसा भी हो सकता है।
पढ़ा लिखा वह शख्स गधा हो,
ऐसा भी हो सकता है।।''[10]

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल अपने समय और समाज को पूरी शिद्दत के साथ अभिव्यक्त करने में तल्लीन दिखाई देती है। मानव मूल्यों का क्षरण, राजनीति का विद्रूप चेहरा, अवसरवादिता, जाति–धर्म की स्याही से खींची जा रही कुत्सित रेखाएँ सब कुछ आज ग़ज़लों के माध्यम बयाँ हो रहा है। राजनीति के तथाकथित पहलुओं पर तंज कसता यह शेर दृष्टव्य है–.

''गरीबों का लहू तो आपकी कारों का डीज़ल है।
गरीबी मिट गई तो आप क्या रिक्शा चलाएंगे।।''[11]

कुल मिलाकर ऐसा कुछ भी नहीं है जो आज ग़ज़ल न कह पा रही हो या फिर ग़ज़ल का

फोकस न पड़ा हो; सब कुछ उसके द्वारा वोकल है। दार्शनिक अंदाज में साम्प्रदायिकता का खण्डन करते हुए डॉ० उर्मिलेश जी की यह शेर दृष्टव्य है–

''परिदों के यहाँ फिरकापरस्ती यूँ नहीं होती ।
कभी मंदिर में जा बैठे, कभी मस्जिद में जा बैठे।।''[12]

अन्त में, अपनी एक ग़ज़ल के दो शेर उद्धृत करते हुए आलेख को समाप्त करता हूँ–

''अब समर्पण कहाँ हल्दिया रह गए।
मिलके भी अनमिले से जिया रह गए।।
चैट, ई–मेल, वाट्स–एप के दौर में,
अब कहाँ चिट्ठियाँ, डाकिया रह गए।।''[13]

संदर्भ-

1. काव्य पारिजात डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक (भूमिका)
2. पंखुडिया, आवरण पृष्ठ से (भारती रचनाकार – मैथिलीशरण गुप्त)
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के श्रेष्ठ निबन्ध, सं0 सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृ0 22
4. हिन्दी ग़ज़ल : उद्भव और विकास : डॉ0 रोहिताश्व अस्थाना, पृ0 17–18
5. स्वतंत्र भारत (उपहार) 16 नम्बर 1987, लेखक शिवओम अम्बर
6. ग़ज़ल से ग़ज़ल तक : सं0 अशोक अन्जुम जी
7. साये में धूप–दुष्यन्त कुमार, पृ0 33
8. हिन्दी ग़ज़ल का सामाजिक सांस्कृतिक अनुशीलन, डॉ0 शशि जोशी, पृ0 77
9. चुनिंदा शेर– डॉ0 उर्मिलेश, पृ0 25
10. उपरिवत् पृ0 27
11. उपरिवत् पृ0 29
12. उर्मिलेश की ग़ज़लें : नित्यानंद तुषार, पृ0 23
13. क्षितिज की ओरः डॉ0 सतीश चन्द्र शर्मा ''सुधाशु'', (कविता संग्रह) 2022

◆◆◆

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में मीडिया की भूमिका

अभिषेक[1] एवं अब्दुल लतीफ़[2]

[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, [2]शोध निर्देशक एवं असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उ. प्र.

शोध सार:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में रहने के लिए एक दूसरे से जुड़ने की आवश्यकता है। जन्म से मृत्यु तक उसका निरंतर विकास होता रहता है। समाज में रहने के लिए, लोगों से जुड़ने के लिए और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए उसे एक संचार माध्यम की आवश्यकता होती है, और वह संचार माध्यम उसकी भाषा है। अपने विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाने का सशक्त साधन भाषा ही है। आज मनुष्य ने अपने आप को सभी प्राणियों में श्रेष्ठ रखा हुआ है, तो इसका प्रमुख कारण उसकी अपनी भाषा ही है। मीडिया ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1826 में 'उदंत मार्तंड' के साथ हिंदी प्रिंट मीडिया की शुरुआत हुई, जिसने स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। प्रिंट मीडिया ने हिंदी साहित्य और विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाया। रेडियो और टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने हिंदी को घर–घर तक लोकप्रिय बनाया। रेडियो के विविध भारती चैनल और टेलीविजन के धारावाहिकों ने हिंदी को मनोरंजन और सूचना का प्रमुख माध्यम बनाया। डिजिटल युग में सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया है। यूट्यूब, इंस्टाग्राम, और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी भाषा के कंटेंट को बढ़ावा दिया, जिससे नई पीढ़ी हिंदी से जुड़ी। हिंदी ब्लॉग, वेब सीरीज, और डिजिटल अभियानों ने भाषा के प्रसार को नई गति दी। मीडिया ने हिंदी को आधुनिक तकनीक और वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिक बनाए रखा है। इसके माध्यम से हिंदी न केवल भाषाई बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से भी सशक्त हुई है, यह न केवल राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान भी है।

बीज शब्द: मीडिया, हिन्दी, चिरकालिक, प्रागैतिहासिक, क्रांति, जनशक्ति, संचार, मनोरंजन, परिवर्तन, प्रगतिशील माध्यम, परोक्ष, अभाव

प्रस्तावना:

भाषा किसी भी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक, और बौद्धिक पहचान का आधार होती है। हिंदी, जो भारत की राजभाषा और करोड़ों लोगों की मातृभाषा है, देश की विविधता में एकता का प्रतीक है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं का संवाहक भी है। समय के साथ, मीडिया ने भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे वह प्रिंट मीडिया हो, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, या आज का डिजिटल और सोशल मीडिया, हर मंच ने हिंदी को जन–जन तक

पहुँचाने और उसे वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का कार्य किया है।

मीडिया ने हिंदी को केवल संचार का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि इसके माध्यम से समाज को शिक्षित, जागरूक और मनोरंजित भी किया। यह लेख हिंदी के प्रचार–प्रसार में मीडिया की ऐतिहासिक और वर्तमान भूमिका को रेखांकित करता है, साथ ही यह भी दर्शाता है कि कैसे मीडिया ने हिंदी को भारत की आत्मा और विश्व मंच पर पहचान दिलाने का साधन बनाया।

अनुसंधान विधि:

प्रस्तुत शोध कार्य में आलोचनात्मक, विचारात्मक एवं समालोचनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य:

प्रस्तुत पत्र कार्य का उद्देश्य समाज में हिन्दी की भूमिका एवं हिन्दी के प्रचार–प्रसार में मीडिया की भूमिका को स्पष्ट करना है जो भविष्य में आने वाले पाठकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

विवेचन एवं साहित्यिक विमर्श

भारतीय समाज और मीडिया:

जीवन और साहित्य का संबंध चिरकालिक है। समय के साथ–साथ संपूर्ण विश्व में परिवर्तन हुए हैं, और ये परिवर्तन अपने आप में आश्चर्यजनक हैं। प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान समय तक, यदि हम नजर दौड़ाएँ, तो यह समझना और कल्पना करना भी मुश्किल हो जाता है कि मनुष्य कभी वैसा भी रहा होगा। मगर यह परम सत्य है कि जीवन परिवर्तनों से परिपूर्ण है। समाज प्रगतिशील है और मनुष्य भी प्रगतिशील है। अधिक दूर न जाकर यदि 19वीं से 21वीं शताब्दी के कालखंड पर ही नजर डालें, तो यह स्पष्ट होता है कि संपूर्ण विश्व में अनेक प्रकार की क्रांतियाँ हुई हैं। इन क्रांतियों ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। ये क्रांतियाँ केवल राजनीतिक नहीं थीं, बल्कि आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक, और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी हुईं हैं। ऐसी क्रांतियों के लिए एक बड़ी जनशक्ति की आवश्यकता होती है। यह जनशक्ति केवल किसी एक व्यक्ति में निहित नहीं हो सकती; इसके लिए जनसमूह का योगदान आवश्यक होता है। ऐसे जनसमूह को संगठित और प्रेरित करने में सबसे बड़ा योगदान भाषा का है, क्योंकि भाषा संचार का प्रमुख माध्यम है। भाषा के अभाव में लोगों को जोड़ना असंभव है। इसलिए लगभग हर क्रांति में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भाषा का योगदान रहा है। भाषा के महत्त्व को स्वीकारते हुए, अंग्रेजी के कई महान लेखकों ने भी इसे अपने साहित्य में उचित स्थान दिया है।

Alphonse Dauted का मानना है कि When a people are enslaved as long as they hold fast to their language it is as if they had the key to their prison-ß1

19वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य का समय भारत के लिए संक्रमण का काल था। जहाँ भारतीयों को दोहरी लड़ाई लड़नी पड़ी। एक ओर, विदेशी शासन की कुंठा से देश का दम घुट रहा था, तो वहीं दूसरी ओर, गरीबी और अशिक्षा से लोग दबे जा रहे थे। जैसा कि पूर्व में मैंने कहा है, ऐसी क्रांतियों के लिए एक बड़े जनसमूह की आवश्यकता होती है। यह समय था भारतीयों को आपस में जोड़ने का। भारत बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है, किंतु शायद ही कोई ऐसा भारतीय हो जो हिंदी को न समझता हो। यहाँ मैं एक बात और स्पष्ट करना चाहता हूँ कि भारत को 'हिंदुस्तान' नाम देने का कोई धार्मिक कारण नहीं था, बल्कि यह नाम भाषा के आधार पर ही (क्योंकि यहाँ के लोग हिंदी बोलते थे) हिंदुस्तान कहा गया है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और लोगों को जोड़ने का अद्‌भुत कार्य किया। हिंदी का आरंभ भारतीय जनमानस के साथ हुआ था, तथापि जो वर्तमान हिंदी का स्वरूप है, उसका विकास 19वीं शताब्दी में हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भाषा के महत्त्व को दर्शाते हुए ठीक ही लिखा हैः

"निज भाषा उन्नति आहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान की, मिटई न हिय को शूल।"2

भले ही संविधान ने लिखित रूप में यह नहीं कहा है कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है, तथापि हिंदी देश की राष्ट्रभाषा ही है, क्योंकि सर्वाधिक संख्या में हिंदी बोली, पढ़ी और लिखी जाती है। हिंदी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। हिंदी पूर्णतः वैज्ञानिक भाषा है और उसकी लिपि देवनागरी भी पूर्णतः वैज्ञानिक है। हिंदी ने राष्ट्र के विकास में सर्वाधिक योगदान दिया है और देती रहेगी। इसलिए भी हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी सर्वाधिक लचीली भाषा है, जिसने अपने आप को निरंतर परिवर्तनशील और विकासशील रखा है। उसने कई विदेशी और क्षेत्रीय शब्दों को समाहित किया है और वह निरंतर अपना विकास कर रही है। हिंदी हमारे देश की मातृभाषा है, जो राष्ट्रभाषा भी बनेगी। हिंदी में संदेह नहीं है कि यह एक सशक्त भाषा है, जिसमें लोक कल्याण की भावना सदैव विद्यमान रही है। भक्तिकाल से वर्तमान काल तक हिंदी साहित्य समाज की सेवा करता रहा है।

हिन्दी और मीडिया

हिन्दी और प्रिंट मीडियाः

भारत में मीडिया के क्षेत्र में हिंदी का सफर आधुनिक काल से ही आरंभ हुआ। 1826 में पहला साप्ताहिक समाचार पत्र उदंत मार्तंड प्रकाशित हुआ, जो हिंदी में भी था। यह मीडिया में हिंदी का पहला चरण था। प्रिंट मीडिया का अर्थ है पत्र–पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि, जिनमें समाचार पत्रों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। स्वाधीनता आंदोलन के समय प्रिंट मीडिया ही प्रमुख था, और इसने लोगों को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय के समाचार पत्रों ने जन जागरूकता फैलाने और स्वतंत्रता संग्राम को गति देने में योगदान दिया।

"साहित्य स्वांतः सुखाय भले ही हो, लेकिन पत्रकारिता स्वांतः सुखाय नहीं है। वह मुख्यतः जनहिताय होती है, स्वतंत्रता से पूर्व संपूर्ण राष्ट्र को एकजुट करने में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं की भी विशिष्ट भूमिका रही है। प्रजातंत्र पद्धति की सुव्यवस्था के लिए पत्र–पत्रिकाएँ आधारस्तंभ मानी जाती थीं। आज स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सामाजिक चेतना जगाने में समाचार–पत्रों की विशेष भूमिका है। भारत में सन् 1557 ई. में मुद्रण प्रणाली की शुरुआत हुई थी और सन 1774 ईस्वी में बंगाल गजट की शुरुआत हुई थी। इसका श्रेय जेम्स अगस्ट हिक्की को दिया जाता है। हिंदी का प्रथम पत्र 'उदंत मार्तंड' 30 मई 1826 में प्रकाशित हुआ।"5

समय के साथ प्रिंट मीडिया ने भी अपने स्वरूप का विस्तार किया। भारतेंदु युग में प्रिंट मीडिया ने अपना प्रचार–प्रसार तेजी से किया। भारतेंदु मंडल के लगभग हर साहित्यकार किसी न किसी पत्रिका के प्रकाशन और संपादन कार्य से जुड़ा हुआ था। साहित्यिक पत्रिकाओं का योगदान आधुनिक काल में सर्वाधिक है। आधुनिक काल में कविवचनसुधा, हिन्दी प्रदीप, भारत मित्र, बनारस अखबार, बाल बोधिनी, सरस्वती, हंस, ब्राह्मण प्रताप, मर्यादा आदि पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, जिनसे हिंदी का एक नया स्वरूप निखरकर सामने आया। समाचार पत्रों ने भी हिंदी में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। भारत में प्रकाशित होने वाले विभिन्न समाचार पत्रों का योगदान हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान समय में भी प्रकाशित होने वाली विभिन्न पत्रिकाएँ और समाचार पत्र हिंदी की प्रगति में निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं। "समाचार पत्र मानव के लिए रोज़मर्रा के जीवन का एक अपरिहार्य अंग बन गए हैं। समाचार पत्र जनमत तैयार करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में हिंदी भाषा में निकलने वाले समाचार पत्र– जैसे नवभारत टाइम्स, इंडियन एक्सप्रेस, द हिंदू दर्पण, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर जैसे पत्रों ने अपने सकारात्मक बल पर मीडिया और समाज की अस्मिता और विश्वास को बनाए रखा है।"6

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी:

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सूचना और संवाद का एक आधुनिक और प्रभावी माध्यम है। इसमें रेडियो, टेलीविजन, और ओटीटी जैसे प्लेटफॉर्म शामिल हैं। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि भाषा और संस्कृति के प्रचार–प्रसार का एक सशक्त उपकरण भी है। हिंदी के प्रचार–प्रसार में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी को पहुँचाने का कार्य कर रहा है। जब सोशल मीडिया का चलन कम था तो इसकी धूम थी।

यह कथन दृष्टव्य है– "रेडियो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य, मनोरंजन और पर्यावरण चेतना उत्पन्न करने का सबसे सशक्त माध्यम बन चुका है। रेडियो के द्वारा हिंदी भाषा में कई कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। ज्ञान, विज्ञान और मनोरंजन से युक्त कार्यक्रम जैसे 'सखी–सहेली' लोकप्रियता के शीर्ष पर है। लोकप्रियता के दौर में रेडियो जैसे श्रव्य माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रसार हो रहा है। हिन्दी भाषा से रेडियो कार्यक्रमों में समृद्धि आयी है, वहीं रेडियो ने

भी हिन्दी को जन जन तक पहुँचाया है।"7

टेलीविजन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का दूसरा सबसे पुराना और प्रभावी माध्यम है। टेलीविजन ने हिंदी को घर–घर में लोकप्रिय बनाया। यह माध्यम मनोरंजन, शिक्षा, और जागरूकता के लिए सबसे प्रभावी रहा है। हिंदी धारावाहिक जैसे हम लोग, बुनियाद, महाभारत, और रामायण ने हिंदी को पूरे भारत में पहचान दिलाई। 1990 के दशक के बाद निजी चैनलों जैसे 'आज तक', 'ज़ी टीवी', और 'स्टार प्लस' ने हिंदी भाषा के समाचार, मनोरंजन, और ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का प्रसार किया। धारावाहिकों जैसे ''क्यूंकि सास भी कभी बहू थी'', बालिका वधू, और अनुपमा ने हिंदी को लोकप्रिय बनाया। रियलिटी शो जैसे कौन बनेगा करोड़पति और इंडियन आइडल ने हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाई। हिन्दी सिनेमा ने समाज के हर विषय पर फिल्माकन किया है। हिन्दी साहित्य की कई कहानियों पर फिल्माँकन हुआ है। समय और समाज की आवश्यकता और समस्या के अनुरूप हिन्दी सिनेमा ने अपने आप को आगे बढ़ाया है जिससे हिन्दी को प्रचार–प्रसार का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ है।

"हिंदी और हिंदी फिल्म एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं। फिल्म के क्षेत्र में हिंदी को फलने–फूलने का पर्याप्त अवसर मिला है। आज भारत में लगभग प्रति वर्ष 800 फिल्मों का निर्माण होता है। उसमें से लगभग 160 से 170 फिल्में हिंदी में बनती हैं।"8

डिजिटल युग में ओटीटी (ओवर–द–टॉप) प्लेटफॉर्म जैसे नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम, और हॉटस्टार ने हिंदी सामग्री को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया है। मिर्जापुर, पाताल लोक, और सेक्रेड गेम्स जैसी वेब सीरीज ने हिंदी को नई पीढ़ी के बीच लोकप्रिय किया। हिंदी फिल्मों और डब की गई सामग्री ने हिंदी को एक वैश्विक भाषा के रूप में उभारा है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने हिंदी भाषा को प्रचारित और प्रसारित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। रेडियो, टेलीविजन, और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी हिंदी को लोकप्रिय बनाया है। हालाँकि चुनौतियाँ हैं, लेकिन सही दिशा और प्रयासों से हिंदी को और अधिक सशक्त और वैश्विक बनाया जा सकता है। हिंदी भाषा और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का यह सामंजस्य न केवल भाषा के प्रचार का माध्यम है, बल्कि भारतीय संस्कृति और एकता का प्रतीक भी है।

सोशल मीडिया और हिन्दीः

सोशल मीडिया आज के युग में संवाद और जनसंचार का सबसे प्रभावी माध्यम बन गया है। यह न केवल सूचना के आदान–प्रदान का साधन है, बल्कि भाषाओं और संस्कृतियों के प्रचार–प्रसार का भी एक सशक्त प्लेटफ़ॉर्म है। हिंदी, जो भारत की राजभाषा और सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख आधार है, वह सोशल मीडिया के माध्यम से विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा में सामग्री के सृजन और प्रसार को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, और इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी में पोस्ट, ब्लॉग, वीडियो, और मीम्स तेजी से लोकप्रिय हो रहे

हैं। ब्लॉगिंग और व्लॉगिंग के माध्यम से हिंदी भाषा को एक नई दिशा मिली है। हिंदी में लिखने वाले ब्लॉगर और यूट्यूबर न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में अपनी पहचान बना रहे हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षा, मनोरंजन, खाना पकाने, यात्रा और तकनीक से जुड़े हिंदी व्लॉग लाखों लोगों तक पहुँच रहे हैं। लाइव वीडियो और वेब सीरीज के माध्यम से हिंदी की पहुँच और प्रभाव बढ़ा है। कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब, एमएक्स प्लेयर, और अमेज़न प्राइम पर हिंदी में सामग्री उपलब्ध हैं। हिंदी वेब सीरीज (मिर्जापुर, पंचायत) ने हिंदी भाषा को नई पहचान दी है।

सोशल मीडिया पर हिंदी में जागरूकता अभियानों का चलन बढ़ा है। सरकारी योजनाओं, सामाजिक मुद्दों, और जनसामान्य की समस्याओं को हिंदी भाषा में प्रस्तुत करके बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुँचाया जा रहा है। हिंदी का सरल और प्रभावी रूप सोशल मीडिया पर तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। हिंदी की बोलियों और क्षेत्रीय शब्दों का भी इसमें समावेश देखने को मिलता है। सोशल मीडिया ने हिंदी को क्षेत्रीय स्तर से उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचाया है। विदेशों में बसे भारतीय भी हिंदी में संवाद करते हैं और अपनी संस्कृति से जुड़े रहते हैं। सोशल मीडिया हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार का एक प्रभावी माध्यम बन चुका है। इसने न केवल हिंदी को आधुनिक युग के अनुरूप बनाया है, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। युवाओं की बढ़ती भागीदारी और तकनीकी प्रगति के साथ, हिंदी का भविष्य सोशल मीडिया पर उज्ज्वल और समृद्ध दिखाई देता है। यह सोशल मीडिया ही है जिसने एक आंचलिक हिन्दी बोलने वाली लड़की शिवानी कुमारी को 'बिग बोस' जैसे बड़े मंच तक पहुँचाया है।

सोशल मीडिया के प्रचार प्रसार में इंटरनेट का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उसके बिना वह निष्प्राण है। "मीडिया के क्षेत्र में इंटरनेट एक बड़ी उपलब्धि है। आज इंटरनेट पर हिंदी में ई–मेल, चैटिंग, वेब आज के कार्य हो रहे हैं। व्यापारियों, उद्योगपतियों, अर्थशास्त्रियों, अधिकारियों, बौद्धिक वर्ग, बैंकों, बीमा कंपनियों और मनोरंजन आदि के लिए भी हिंदी अपनी प्रमुख भूमिका निभा रही है। ई–कॉमर्स, ई–गवर्नेंस, ई–एजुकेशन और ई–मेल के माध्यम से हिंदी ने व्यापार क्षेत्र में बहुत बड़ा स्थान बना लिया है।"9

मीडिया ने हिंदी को न केवल भारत में, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विशिष्ट पहचान दिलाई है। आज हिंदी भाषा सोशल मीडिया, सिनेमा, टेलीविजन, और प्रिंट मीडिया के माध्यम से हर घर और हर दिल तक पहुँच रही है। हिंदी के प्रचार–प्रसार में मीडिया की भूमिका अतुलनीय है, और इसके निरंतर प्रयासों से हिंदी को वैश्विक स्तर पर एक नई ऊँचाई प्राप्त हो रही है।

संदर्भ

1. ENLISH FLAMINGO NCERT, राजीव प्रकाशन, प्रयागराज, 2024, पृष्ठ संख्या –14–15
2. वेब`BHARATDARSHAN-CO-NZ&BHARTENDU

3. संपादकः रविंद्र जाधव, मीडिया और हिंदी की बदलती प्रवृत्तियां, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या – 174
4. संपादकः प्रोफेसर कलानाथ मिश्र, अभ्युदय (साहित्य यात्रा), पटना, 2018, पृष्ठ संख्या – 89
5. संपादकः बलभीमराज गोरे, हिन्दी भाषा लिपि व साहित्य, विकास प्रकाशन, कानपुर, 1999, पृष्ठ संख्या– 63–64
6. संपादकः डॉ. सुजाता वर्मा, जनसंचार, जनसंपर्क एवं विज्ञापन, ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर ट्रस्ट, 2007, पृष्ठ संख्या, 50–51
7. संपादकः रविंद्र जाधव, मीडिया और हिंदी की बदलती प्रवृत्तियां, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या – 176
8. केरल ज्योति, द्वैमासिक, फरवरी 2019, पृष्ठ संख्या – 9
9. संपादकः चंदू कुमार, जनसंचार माध्यमों में हिंदी, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली,2016, पृष्ठ संख्या – 54

◆◆◆

उन्नत शिक्षण अधिगम एवं डिजिटल संसाधनः वर्तमान परिदृश्य

क्षमा पाण्डेय एवं प्रवेन्द्र सिंह बिरला

सारांश

शिक्षक, नीति निर्माता और अभिभावक समान रूप से हमारे देश के छात्रों की शैक्षणिक सफलता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। ये प्रयास प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के साथ जुड़े हुए हैं, जो कक्षा के अंदर और बाहर दोनों जगह छात्रों के जीवन को प्रभावित करता है। इस प्रकार, शिक्षा में प्रौद्योगिकी की भूमिका अनुसंधान का एक उभरता हुआ क्षेत्र है जो लगातार महत्त्व में बढ़ रहा है। जबकि प्रौद्योगिकी तक पहुँच छात्रों को मूल्यवान सीख के अवसर प्रदान कर सकती है, यह सफल परिणामों की गारंटी नहीं देती है। छात्रों के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए सफल अभ्यासों को डिज़ाइन करना सभी छात्रों के शैक्षिक अनुभवों को बढ़ाने के निरंतर प्रयास में पहेली का एक टुकड़ा है। स्कूल, शिक्षक, समुदाय और परिवार शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन में प्रौद्योगिकी को सफलतापूर्वक एकीकृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत लेख में बेहतर शिक्षण और सीखने के लिए डिजिटल संसाधन/पहल के बारे में दर्शाया गया है, जो कि केंद्र एजेंसियों के द्वारा प्रचलित है।

बीज शब्दः उन्नत शिक्षण अधिगम, डिजिटल संसाधन, शिक्षक–विद्यार्थी एवं परिवार आदि।

जैसे–जैसे समाज का डिजिटलीकरण होता जा रहा है, उसी के अनुरूप शिक्षा क्षेत्र पर इसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है (बोटिनो, 2020)। छात्रों को उपयुक्त दक्षता हासिल करके इस डिजिटल दुनिया के लिए तैयार होना चाहिए (विलिस एट अल., 2019)। यह उनके (भावी) शिक्षकों के लिए एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है, जिन्हें छात्रों की दक्षताओं की मध्यस्थता और उन्हें बढ़ावा देना चाहिए। परिणामस्वरूप शिक्षकों पर माँग न केवल बदली है बल्कि बढ़ भी गई है (मुसमैन एट अल., 2021)। शिक्षकों की भूमिका को फिर से परिभाषित करने की जरूरत है (बोटिनो, 2020)। आज के समय में, तकनीकी छात्रों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा बन गई है और शिक्षक एवं छात्रों की सहभागिता बढ़ाने के लिए सरकारी डिजिटल संसाधनों का उपयोग करते हैं। डिजिटल शिक्षण संसाधन, वे संसाधन हैं जो छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में मदद करते हैं। इनका उद्देश्य शिक्षकों और प्रशासकों पर काम का बोझ कम करते हुए छात्रों की उपलब्धि बढ़ाना है। डिजिटल शिक्षण संसाधन यानि शैक्षिक सामग्री, एप्लीकेशन, सॉफ्टवेयर, प्रोग्राम या वेबसाइटों को संदर्भित करते हैं जो इलेक्ट्रॉनिक रूप से छात्रों को सीखने की गतिविधियों में संलग्न करते हैं। ये संसाधन सीखने के अनुभवों को सुविधाजनक बनाने और बढ़ाने के लिए तकनीकी का लाभ उठाते हैं। डिजिटल संसाधनों के कई उपयोग हैं। जैसे– शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन मूल्यांकन, वीडियो–आधारित सामग्री को शामिल करना और ऑनलाइन शोधित जानकारियों को एक ही पाठ में बदलना शामिल हैं। इंटरनेट तक पहुँच शिक्षकों और छात्रों दोनों को विभिन्न प्रकार के डिजिटल शिक्षण संसाधन प्रदान करती है। कुछ विशेष रूप से छात्रों या शिक्षकों की मदद करने के लिए होती हैं, तो कोई दोनों की मदद

करती हैं।

डिजिटल संसाधनः विद्यार्थियों के लिए

विद्यार्थी अपने शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। डिजिटल संसाधनों का सबसे महत्त्वपूर्ण लाभ उनकी पहुँच है, क्योंकि उन्हें इंटरनेट कनेक्शन के साथ कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है। छात्र अपने असाइनमेंट के लिए शोध सामग्री खोजने के लिए ऑनलाइन डेटाबेस और खोज इंजन का उपयोग कर सकते हैं, और वे अपनी शिक्षा को पूरक करने के लिए शैक्षिक वेबसाइटों और ऐप्स का भी उपयोग कर सकते हैं। गूगल ड्राइव और ड्रॉपबॉक्स जैसे ऑनलाइन टूल का उपयोग सहयोगी समूह परियोजनाओं के लिए भी किया जा सकता है, जिससे छात्रों को उनके भौतिक स्थान की परवाह किए बिना वास्तविक समय में एक साथ काम करने की अनुमति मिलती है।

विद्यार्थियों के लिए डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने का एक और बढ़िया तरीका ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म का लाभ उठाना है। ये प्लेटफ़ॉर्म ऑनलाइन पाठ्यक्रम और ट्यूटोरियल प्रदान करते हैं, जिनका उपयोग छात्र नए कौशल सीखने या अपने मौजूदा ज्ञान को बढ़ाने के लिए कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, छात्र अपने साथियों से जुड़ने, अध्ययन समूहों में शामिल होने और अपने अध्ययन के क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा साझा की गई शैक्षिक सामग्री तक पहुँचने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते हैं। अंततः डिजिटल संसाधन छात्रों को ज्ञान और संसाधनों तक सुविधाजनक पहुँच प्रदान करके उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं जो उनके सीखने में सहायता कर सकते हैं।

चित्र 1:– विभिन्न प्रकार के डिजिटल संसाधन

1. उपकरण के रूप में: जिसका उपयोग शिक्षक शिक्षण और

सीखने में सहायता के लिए कर सकते हैं। उदाहरणों में इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड, शिक्षण प्रबंधन प्रणाली और शैक्षिक सॉफ्टवेयर शामिल हैं।

2. सामग्री के रूप में: जिसका उपयोग शिक्षक शिक्षण और सीखने में सहायता के लिए कर सकते हैं। उदाहरणों में ई–लर्निंग सहायता जैसे ई–पुस्तकें, ऑनलाइन लेख और मल्टीमीडिया संसाधन जैसे वीडियो और चित्र शामिल हैं।

3. संचार चैनलों के रूप में: जिनका उपयोग शिक्षक छात्रों, अभिभावकों और अन्य हितधारकों के साथ बातचीत करने के लिए कर सकते हैं। उदाहरणों में ईमेल, सोशल नेटवर्क प्लेटफ़ॉर्म और ऑनलाइन चर्चा फ़ोरम शामिल हैं।

4. सूचना के स्रोत के रूप में: जिसका उपयोग शिक्षक अपने क्षेत्र में नवीनतम विकास के साथ अपडेट रहने के लिए कर सकते हैं। उदाहरणों में ऑनलाइन जर्नल, ब्लॉग और पेशेवर नेटवर्क शामिल हैं।

5. डेटा स्रोतों के रूप में: जिनका उपयोग शिक्षक अपने अभ्यास को सूचित करने के लिए कर सकते हैं। उदाहरणों में छात्र डेटा प्रबंधन प्रणाली, डिजिटल मूल्यांकन उपकरण और शिक्षण विश्लेषण प्लेटफ़ॉर्म शामिल हैं।

डिजिटल लर्निंग से तात्पर्य

डिजिटल लर्निंग से तात्पर्य सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने और बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग से है। इसमें शैक्षिक सामग्री तक पहुँचने, शिक्षकों और साथियों के साथ संवाद करने और इंटरैक्टिव शिक्षण गतिविधियों में संलग्न होने के लिए कंप्यूटर, टैबलेट, स्मार्टफोन और इंटरनेट जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग शामिल है। एंटिला एट अल. (2012) ने इसके सन्दर्भ में कहा है कि ऑनलाइन/ऑफलाइन सीखने के लिए डिजिटल शिक्षण सामग्री प्राप्त करने के लिए एक डिजिटल उपकरण के रूप में सीखना, तार/वायरलेस नेटवर्क के माध्यम से गतिविधि। डिजिटल शिक्षण कई रूप ले सकता है, जिसमें ऑनलाइन पाठ्यक्रम, शैक्षिक सॉफ्टवेयर, ई–पुस्तकें और मल्टीमीडिया संसाधन शामिल हैं। यह एक लचीला और वैयक्तिकृत सीखने का अनुभव प्रदान करता है, जिससे छात्रों को अपनी गति से और अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार सीखने की अनुमति मिलती है। शिक्षा में डिजिटल लर्निंग तेजी से लोकप्रिय हो रही है, क्योंकि यह बेहतर पहुँच, बेहतर जुड़ाव और बढ़े हुए सहयोग जैसे कई लाभ प्रदान करता है।

डिजिटल संसाधनों का उपयोग हेतु सुझाव

- ऑनलाइन शोध: छात्र अपने शैक्षणिक कार्यों के लिए शोध करने के लिए इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं। वे प्रासंगिक जानकारी खोजने के लिए ऑनलाइन पुस्तकालयों, अकादमिक डेटाबेस और खोज इंजन का उपयोग कर सकते हैं।

क्र. स.	संसाधन	छात्रों/शोधकर्ताओं के लिए	संस्थानों के लिए
		ऑडियो-वीडियो ई-सामग्री	
1.	स्वयं: बड़े पैमाने पर खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रम।	▪ ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से क्रेडिट अर्जित करें।	▪ अपने असाधारण संकाय को ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें। ▪ स्वयं के तहत दिए गए क्रेडिट स्वीकार करें। ▪ स्वयं के लिए स्थानीय अध्याय तैयार करें।
2.	स्वयंप्रभा: टीवी पर डिजिटल पाठ्यक्रम को देखें।	▪ उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रम 24*7 देखें।	▪ स्वयंप्रभा सामग्री देखने की सुविधा प्रदान करें।
		डिजिटल सामग्री: पत्रिकाओं और ई-पुस्तकों तक पहुंच	
1.	राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी: ई-सामग्री।	▪ अनेक विषयों पर ई-सामग्री तक पहुँचें।	▪ अपनी ई-सामग्री सूचीबद्ध करें। ▪ फॉर्म एनडीएल क्लब।
2.	ई-पीजी पाठशाला: पीजी तक ई-पुस्तकों के लिए प्रवेश द्वार।	▪ निःशुल्क पुस्तकें और पाठ्यक्रम-आधारित ई-सामग्री प्राप्त करें।	▪ ई-पुस्तकें की मेजबानी करें।
3.	शोधगंगा: भारतीय थीसिस का भंडार।	▪ भारतीय संस्थानों के विद्वानों की शोध थीसिस तक पहुँचें।	▪ शोधगंगा पर सूचीबद्ध होने के लिए अपने विद्वानों की शोध थीसिस प्राप्त करें।
4.	ई-शोधसिंधु: ई-जर्नल्स।	▪ पूर्ण पाठ ई-संसाधनों तक पहुंच प्राप्त करें।	▪ पूर्ण पाठ ई-संसाधनों तक पहुंच प्राप्त करें।
		सीखने पर त्वरित हाथ	
1.	ई-यंत्र: बेहतर कल के लिए इंजीनियरिंग।	▪ अंतर्निहित प्रणाली पर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें।	▪ आईआईटी बॉम्बे के सहयोग से अंतर्निहित प्रणाली में प्रशिक्षण के लिए ई-यंत्र लैब बनाएं।
2.	FOSSEE: शिक्षा के लिए निःशुल्क और मुक्त स्रोत सॉफ़्टवेयर।	▪ स्वयंसेवक और पहुंच के लिए मुक्त स्रोत सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें। ▪ FOSSEE के साथी बनें।	▪ खुले संसाधनों में प्रयोगशालाएँ चलाएँ।
3.	स्पोकन ट्यूटोरियल: आईटी एप्लिकेशन में ट्यूटोरियल।	▪ आईटी क्षेत्रों में स्व-प्रशिक्षण।	▪ स्व-शिक्षा के लिए प्रशिक्षण सामग्री प्रदान करने के लिए प्रतिष्ठित संकाय को प्रोत्साहित करें।
4.	वर्चुअल लैब्स: रिमोट-ऑपरेशन के लिए डिज़ाइन किए गए वेब-सक्षम प्रयोग।	▪ पाठ्यक्रम आधारित आभासी प्रयोगों का प्रयास करें।	▪ अंतराल क्षेत्रों में पाठ्यक्रम के अनुकूल आभासी प्रयोगशालाओं के लिए आभासी प्रयोग विकसित करें।
5.	राष्ट्रीय इंटर्नशिप पोर्टल।	▪ छात्रों और नए इंजीनियरों के लिए इंटर्नशिप।	▪ शिक्षुता अंतर्निहित पाठ्यक्रम।
6.	प्रौद्योगिकी के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक गठबंधन।	▪ शिक्षार्थियों के लिए पोर्टल विकसित किया गया।	▪ समाज के कमजोर वर्गों के उच्च शिक्षा के मौजूदा छात्रों के लिए निःशुल्क सीटें।
		ई-गवर्नेंस	
1.	विश्वविद्यालय उद्यम संसाधन योजना (समर्थ)।	विद्यार्थी विकास जीवन चक्र।	संस्थानों/विश्वविद्यालयों के लिए ई-गवर्नेंस।
		अपनी प्रगति को ट्रैक करें	
1.	विदवान: विशेषज्ञ डेटाबेस और राष्ट्रीय अनुसंधान नेटवर्क। भारतीय अनुसंधान सूचना नेटवर्क प्रणाली।	▪ विदवान पर रजिस्टर करें।	▪ अपने संकाय को विदवान पर पंजीकृत कराएं ▪ विभिन्न स्तरों पर अनुसंधान परिणामों की निगरानी करें।
2.	शोध शुद्धि: साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाला सॉफ्टवेयर।	▪ दोहराव के बिना अच्छे विचार, अवधारणाएं और जानकारी।	▪ साहित्यिक चोरी को रोककर मूल जानकारी को प्रोत्साहित करें। ▪ बेहतर शोध परिणाम। ▪ संस्था/विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा।
3.	अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी)।	▪ स्टूडेंट एकेडमिक क्रेडिट रिपॉजिटरी।	▪ भंडारण, स्थानांतरण और ऋण मोचन की सुविधा।

- ई–पुस्तकें और ऑनलाइन पाठः छात्र अपने पाठ्यक्रमों के लिए ई–पुस्तकें और ऑनलाइन पाठ्य सामग्री तक पहुँच सकते हैं। कई पाठ्यपुस्तकें अब ऑनलाइन उपलब्ध हैं, और कई मुफ्त संसाधन भी उपलब्ध हैं जो विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करते हैं।

- सहयोगः गूगल ड्राइव, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस और ड्रॉपबॉक्स जैसे डिजिटल उपकरण छात्रों को समूह परियोजनाओं या असाइनमेंट पर एक–दूसरे के साथ सहयोग करने की अनुमति देते हैं। वे वास्तविक समय में एक साथ काम कर सकते हैं, दस्तावेज़ साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के साथ ऑनलाइन संवाद कर सकते हैं।

- प्रश्नोत्तरी और खेलः शिक्षार्थी के ज्ञान का परीक्षण करने के लिए सभी विषयों पर इंटरएक्टिव क्विज़ उपलब्ध हैं। यह छात्रों के लिए यह पता लगाने का एक शानदार तरीका है कि वे क्या नहीं जानते हैं और उस विषय पर ध्यान केंद्रित करके अधिक शोध कर सकते हैं।

- मोबाइल एप्सः ऐसे कई मोबाइल ऐप हैं जिनका उपयोग शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जैसे फ्लैशकार्ड ऐप, नोट लेने वाले ऐप और अध्ययन शेड्यूल ऐप। ये ऐप्स छात्रों को उनकी पढ़ाई के साथ व्यवस्थित और ट्रैक पर रहने में मदद कर सकते हैं।

डिजिटल शिक्षण संसाधनः इनको बढ़ावा कैसे दें

छात्रों और परिवारों के लिए डिजिटल शिक्षण संसाधनों को बढ़ावा देना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि वे इसके लाभों से अवगत हैं और सफल होने के लिए आवश्यक उपकरणों तक उनकी पहुँच है। विचार करने के लिए यहाँ कुछ रणनीतियाँ दी गई हैंः

- डिजिटल संसाधनों के लिए समर्पित वेबपेज या पोर्टलः इस वेबपेज में ऑनलाइन डेटाबेस, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, शैक्षिक ऐप्स और अन्य प्रासंगिक संसाधनों के लिंक शामिल हो सकते हैं।

- न्यूज़लेटर्स, ईमेल और सोशल मीडिया के माध्यम से वेबपेज या पोर्टल साझा करनाः विभिन्न संचार चैनलों के माध्यम से छात्रों और परिवारों के साथ वेबपेज साझा करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे इसके अस्तित्व से अवगत हैं।

- एक आभासी सूचना सत्र की मेजबानीः एक आभासी सत्र की मेजबानी करें जहाँ छात्र और परिवार उपलब्ध डिजिटल संसाधनों के बारे में सीख सकते हैं और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे करें।

- स्थानीय पुस्तकालयों और सामुदायिक संगठनों के साथ साझेदारीः व्यापक दर्शकों के लिए डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय पुस्तकालयों और सामुदायिक संगठनों के साथ काम करें।

- प्रशिक्षण एवं सहायता प्रदान करनाः छात्रों और परिवारों को डिजिटल संसाधनों का प्रभावी ढंग से

उपयोग करने का तरीका सीखने में मदद करने के लिए प्रशिक्षण सत्र या ऑनलाइन ट्यूटोरियल प्रदान करें।

प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की पहल के लिए डिजिटल संसाधनों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

इनके अलावा डिजिटल संसाधन

- पीएम ई–विद्याः यह छात्रों और शिक्षकों के बीच विभिन्न प्रकार की डिजिटल/ऑनलाइन शिक्षण, शिक्षण सामग्री तक मल्टी–मोड पहुँच की सुविधा प्रदान करने के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक अनूठा और अभिनव उद्यम है। इसकी विशिष्टता सभी के लिए इसकी व्यापक पहुँच में निहित हैं क्योंकि यह इंटरनेट, रेडियो, सामुदायिक रेडियो, पॉडकास्ट और टीवी सहित दूरस्थ शिक्षण प्लेटफार्मों के अपने मल्टी–मोड सेट–अप के साथ सभी को शिक्षा सामग्री प्रदान करता है। इसकी महत्त्वपूर्ण पहलों में से एक कक्षा 1 से 12 तक संबंधित शैक्षिक सामग्री प्रसारित करने के लिए वन क्लास–वन चैनल पर 200 पीएम ई–विद्या टीवी चैनल बनाना है। पीएम ई–विद्या डीटीएच चैनल उन दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षार्थियों को लाभ पहुँचाते हैं जहाँ स्थिर इंटरनेट उपलब्ध नहीं है। ये चैनल एनसीईआरटी और सीबीएसई, केवीएस, एनआईओएस, रोटरी आदि जैसी अन्य एजेंसियों द्वारा विकसित पाठ्यक्रम–आधारित शैक्षिक सामग्री प्रसारित करते हैं। वीडियो सामग्री हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित की गई हैं। इन वीडियो सामग्री पर क्यूआर कोड लगाए गए हैं, जो दीक्षा मोबाइल ऐप का उपयोग करके स्कैन किए जाने पर उपयोगकर्ताओं को दीक्षा पोर्टल पर उसी सामग्री पर ले जाएँगे।
- राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसीः इसे उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश/फेलोशिप के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए एक प्रमुख, विशेषज्ञ, स्वायत्त और आत्मनिर्भर परीक्षण संगठन के रूप में स्थापित किया गया है। अनुसंधान आधारित अंतर्राष्ट्रीय मानकों, दक्षता, पारदर्शिता और त्रुटि मुक्त वितरण के साथ मिलान के मामले में प्रवेश और भर्ती के लिए उम्मीदवारों की क्षमता का आकलन करना हमेशा एक चुनौती रही है। राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी को परीक्षण की तैयारी से लेकर परीक्षण वितरण और परीक्षण अंकन तक, हर क्षेत्र में सर्वोत्तम उपयोग करके ऐसे सभी मुद्दों को संबोधित करने का काम सौंपा गया है। अगर इसके लक्ष्य के बारे में सोचा जाये तो यह सर्वोत्तम संस्थानों में शामिल होने वाले सही उम्मीदवार भारत को उसका जनसांख्यिकीय लाभांश देंगे। विशेष कार्य के तौर पर अनुसंधान आधारित वैध, विश्वसनीय, कुशल, पारदर्शी, निष्पक्ष और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मूल्यांकन द्वारा शिक्षा में समानता और गुणवत्ता में सुधार करना। सर्वोत्तम विषय वस्तु विशेषज्ञ, मनोचिकित्सक और आईटी वितरण और सुरक्षा पेशेवर यह सुनिश्चित करेंगे कि मौजूदा मूल्यांकन प्रणालियों में मौजूदा अंतरालों को ठीक से पहचाना और उसकी खाई को भरा जाएँ

- प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिसः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, उद्योग और अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने के लिए कौशल आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करके उच्च शिक्षा को बदलने का प्रयास करती है। इसके अलावा, एनईपी व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत करने और उच्च शिक्षा संस्थानों में उद्योग–अकादमिक सहयोग को मजबूत करने की भी सिफारिश करती है। युवाओं को इष्टतम स्तर पर कौशल प्रदान करने के लिए, शिक्षार्थियों को नियोक्ताओं की तरह सोचना होगा और नियोक्ताओं को शिक्षार्थियों की तरह सोचना होगा। इस दिशा में, यूजीसी ने "प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस" नामक पदों की एक नई श्रेणी के माध्यम से उद्योग और अन्य पेशेवर विशेषज्ञता को शैक्षणिक संस्थानों में लाने के लिए एक नई पहल की है। इससे वास्तविक दुनिया की प्रथाओं और अनुभवों को कक्षाओं में ले जाने में मदद मिलेगी और उच्च शिक्षा संस्थानों में संकाय संसाधनों में भी वृद्धि होगी। बदले में, उद्योग और समाज को प्रासंगिक कौशल से लैस प्रशिक्षित स्नातकों से लाभ होगा।
- विश्वविद्यालय गतिविधि निगरानी पोर्टलः यूजीसी का विश्वविद्यालय गतिविधि निगरानी पोर्टल समय–समय पर उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा किए गए कार्यक्रमों या गतिविधियों के लिए एक बिंदु के रूप में कार्य करता है। यह पोर्टल विश्वविद्यालयों को उनके द्वारा किए गए विभिन्न आयोजनों/गतिविधियों का विवरण अपलोड करने की सुविधा प्रदान करता है।

उपसंहार

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म कई प्रकार के लाभ प्रदान करते हैं जो सीखने के अनुभव को बढ़ा सकते हैं और छात्र परिणामों में सुधार कर सकते हैं। डिजिटल शिक्षण संसाधनों को बढ़ावा देकर, आप छात्रों और परिवारों को डिजिटल उपकरणों का लाभ उठाने और अकादमिक रूप से सफल होने में मदद कर सकते हैं। कुल मिलाकर, डिजिटल संसाधन छात्रों के लिए उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में एक मूल्यवान उपकरण हो सकते हैं। इन संसाधनों का लाभ उठाकर, छात्र अपने सीखने के अनुभव को बढ़ा सकते हैं और अपने शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं।

सन्दर्भ

एंटिला, एम., वलीमाकी, एम., हाटोनेन, एच., लुक्काला, टी., और कैला एम. (2012). वेब–आधारित रोगी का उपयोग मनोरोग वार्डों पर शिक्षा सत्र। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मेडिकल इंफॉर्मेटिक्स, 81(6), 424–433.

बोटिनो, आर. (2020). स्कूल और डिजिटल चुनौतीः विकास और दृष्टिकोण. शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी, 25, 2241–2259. https%//doi-org/10.1007/10639–019–10061–•

मुसमैन, एफ., हार्डविग, टी., रीथमुलर, एम., और क्लॉट्ज़र, एस. (2021). डिजीटलिसिरंग इम स्कूलसिस्टम 2021ः आर्बेइट्सज़िट, आर्बेइट्सबेडिंगुंगेन, रहमेनबेडिंगुंगेन अंड पर्सपेक्टिवेन वॉन लेहरक्राफ्टन इन ड्यूशलैंड। एर्गेब्निसबेरिच्ट. https%//doi-org/10.3249/ugoe&publ–10

विलिस, आरएल, लिंच, डी., फ्रैडेल, पी., और येघ, टी. (2019). कक्षा में आईसीटी के उद्देश्यपूर्ण कार्यान्वयन पर प्रभावः के–12 शिक्षकों का एक खोजपूर्ण अध्ययन। शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी, 24, 63–77. https%／／doi-org／10.1007／10639–018–9760–0

वेबलिंक्स

https%@@nces&ed&gov-translategoog@pubs2017 @2017098@indeÛ-asp
https%@@www-adityabirlaworldacademycom@blog@how &can&students&use&digital&resources&for& academics
https%@@www-education-gov-in@ict&initiatives
https%@@www-tutorsindiacom@blog@ different&definitions&of&digital&resources &models&theories&in&education&research&i dentified&in&2023@

◆◆◆

विश्व भाषा के रूप में हिंदी और विकसित भारत के निर्माण में उसकी भूमिका

अब्दुल लतीफ़
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उ. प्र.

शोध सार :

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, एक संस्कृति है, जो हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है, लोगों को लोगों से जोड़ती है। यह हमारी पहचान है, हमारे विचारों का माध्यम है, हमारी भावनाओं का प्रतीक है। हिंदी की एक अलग पहचान है, जो हम सभी को एकता के सूत्र में बांधती है। हिंदी के मर्मज्ञों ने हिंदी को एक सशक्त भाषा के रूप में स्थापित किया है। हिंदी सिर्फ भाषा ही नहीं, बल्कि हिंदुस्तान के माथे की बिंदी है। हिंदी हमारी पहचान है, हमारी संस्कृति का आईना है। यह वह डोर है, जो हिंदुस्तान को एक सूत्र में बांधती है। त्योहारों की खुशबू हो या रिश्तों की मिठास, यह सिर्फ बोलचाल की भाषा नहीं रही, बल्कि तकनीक और आधुनिकता का हिस्सा भी बन चुकी है। यह हर उस भारतीय की धड़कन है, जो देश से दूर रहकर भी अपने देश को दिल में बसाए हुए हैं। गाँव की मिट्टी से लेकर शहर की चमक तक हिंदी हर जगह अपनी पहचान बनाए हुए है। आज पूरे विश्व में हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। हिंदी 65 करोड़ लोगों की पहली भाषा, 50 करोड़ लोगों की दूसरी या तीसरी भाषा, और लगभग 30 करोड़ लोगों की चौथी, पाँचवीं या छठी भाषा बन चुकी है। मेरे शोध पत्र का शीर्षक है "विश्व भाषा के रूप में हिंदी और विकसित भारत के निर्माण में उसकी भूमिका "अर्थात 2047 की परिकल्पना है की भारत विकसित होगा।'' विकसित भारत की इस परिकल्पना को साकार करने में हिंदी की क्या भूमिका रहेगी? सारथी की भूमिका में विकसित भारत की ओर ले जाने में हिंदी के समक्ष कौन–कौन सी चुनौतियाँ हैं? इस शोध पत्र में हम इन्हीं बिंदुओं पर विचार–विमर्श करेंगे।

बीज शब्द : विकसित राष्ट्र, सारथी, भारतीय संस्कृति, परंपराएँ, राष्ट्रीय एकता, जीवन मूल्य, प्राचीन सभ्यता, प्रौद्योगिकी, डिजिटल भारत, अर्थव्यवस्था, स्टार्टअप, हरित ऊर्जा, कौशल विकास और साइबर दुनिया।

अनुसंधान पद्धतिः

प्रस्तुत शोध पत्र में विचारात्मक एवं समालोचनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य :

इन दिनों पूरी दुनिया की निगाहें भारत के 2047 तक विकसित देश बनने के संकल्प पर लगी हुई हैं। दरअसल, आने वाले 22 वर्षों में भारत को विकसित देश बनाना एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है। क्या भारत को विकसित देश बनाने में 'हिंदी' सारथी की भूमिका अदा करेगी? सारथी की भूमिका में विकसित भारत की ओर ले जाने में हिंदी के समक्ष कौन–कौन सी चुनौतियाँ हैं? प्रस्तुत शोध पत्र का यही उद्देश्य

है।

विकसित भारत /2047 का उद्देश्य आजादी के 100 वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। यह दृष्टिकोण आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित करता है। विकसित भारत का मतलब है एक ऐसा राष्ट्र, जो आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी दृष्टि से प्रगति कर चुका हो, इसमें उच्च जीवन स्तर, बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ, रोजगार के अवसर और सामाजिक समानता शामिल होते हैं। इसका उद्देश्य समग्र विकास और सभी नागरिकों का समावेश सुनिश्चित करना है।

राष्ट्रीय निर्माण में भाषा का क्या योगदान होता है, इसका अंदाजा महात्मा गांधी की इस बात से लगाया जा सकता है, उन्होंने कहा था–"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।"

हिंदी के महत्त्व का अंदाजा हम इसी बात से लगा सकते हैं कि दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा हिन्दी है। हिंदी 65 करोड़ लोगों की पहली भाषा है, 50 करोड़ लोगों की दूसरी या तीसरी भाषा, और लगभग 30 करोड़ लोगों की चौथी, पाँचवीं या छठी भाषा है। आज लगभग 13 देशों में हिंदी बोली भी जाती है। हिंदी भारत से बाहर दो राष्ट्रों की आधिकारिक भाषा बन चुकी है, एक संयुक्त राष्ट्र अमीरात और दूसरा फिज़ी। यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने बांग्ला, उर्दू और हिंदी को कामकाज करने की अनुमति भी दे दी है। आज 260 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है, जिनमें अकेले अमेरिका के 67 विश्वविद्यालय शामिल हैं। इसी प्रकार चीन के 20 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। सऊदी अरब और रियाद के स्कूलों में 44,000 से अधिक छात्र हिंदी पढ़ रहे हैं। सभी खाड़ी देशों में हिंदी संपर्क की भाषा बन चुकी है। हिंदी का प्रभुत्व आज डिजिटल युग में भी बना हुआ है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि गूगल पर हिंदी कंटेंट में 94% की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार गूगल पर हिंदी भाषा के 10 करोड़ पन्ने उपलब्ध हैं। हिंदी की समृद्धि का पता इस बात से भी चलता है कि दुनिया में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले 10 समाचार पत्रों में से 06 हिंदी के हैं। दुनिया चाहे जितनी भी आगे बढ़ जाए और तकनीक कितनी भी बदल जाए, हिंदी का महत्त्व कभी कम नहीं होगा क्योंकि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी आत्मा है। यह हमारे इतिहास की धरोहर और भविष्य की आशा है। इन बातों से यह प्रतीत होता है कि हिंदी का दायरा अत्यधिक व्यापक और सुदीर्घ है। अब प्रश्न हमारे सामने यह है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में, जब हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2047 तक विकसित भारत का संकल्प लिया है, ऐसे समय में विकसित भारत के निर्माण में हिंदी की क्या भूमिका रहेगी? मेरा मानना है कि एक मजबूत और विकसित भारत के निर्माण की पहली शर्त है, राष्ट्रीय एकता। बिना राष्ट्रीय एकता के हम भारत के विकास की कल्पना नहीं कर सकते। आज भारत विश्व की सबसे तीव्र गति से उभरने वाली अर्थव्यवस्था है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में देश की हैसियत लगातार बढ़ रही है। जब किसी राष्ट्र को विश्व बिरादरी महत्त्व और स्वीकृति देती है तथा उसके प्रति अपनी निर्भरता में वृद्धि पाती है तो राष्ट्र की तमाम चीजें स्वतः

महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। भारत की विकास गाथा अंतर्राष्ट्रीय स्थिति हिंदी के लिए वरदान सदृश है। आज विश्व स्तर पर उसकी स्वीकार्यता और व्याप्ति अनुभव की जा सकती है। पहले जिन देशों में हिंदी लगभग न के बराबर थी, अब वहाँ भी हिंदी ने दस्तक दे दी है। हिंदी का प्रभुत्व अब प्रतियोगी परीक्षाओं में भी दिखाई दे रहा है। नीट से लेकर संघ लोक सेवा आयोग तक हिंदी भाषा और माध्यम को लेकर छात्र परीक्षाएँ दे रहे हैं। यदि हम देखें, तो इन परीक्षाओं में हिंदी और भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने वाले छात्रों की संख्या अंग्रेजी से अभी भी कम है, लेकिन पास होने वाले छात्रों का औसत अधिक है।

जिन देशों ने अपनी मातृभाषा को शिक्षा का आधार बनाकर ज्ञान विज्ञान की जिस देश ने आराधना की, वह देश विकसित होते चले गए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत छठी कक्षा तक मातृभाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है, इसे ईमानदारी से लागू करने की जरूरत है। केंद्र सरकार ने एम0बी0बी0एस0 और इंजीनियरिंग की पढ़ाई को भी हिंदी में भी शुरू करवा दिया है, अब सारे विषय हिंदी और भारतीय भाषाओं में पढ़ाए जा सकते हैं। हिंदी अब आई0 आई0 टी0 से लेकर आई0 आई0 एम0 तक में प्रवेश कर चुकी है। मानविकी के अलावा विधि, वाणिज्य, विज्ञान, प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में हिन्दी में शिक्षण होने लगा है। यह बड़ा बदलाव है। भारत को विकसित देश बनाने में तकनीक का भी अहम योगदान है। आज हिंदी भी नई तकनीक के सहारे ई–पेपर, ई–जर्नल और ई–बुक्स के रूप में वैश्विक स्तर तक पहुँच रही है। अब उपग्रह प्रसारित चैनलों, सिनेमा से लेकर ओटीटी प्लेटफॉर्म तक हिंदी का बोलवाला है। हिंदी के इस फैलाव में डिजिटल दुनिया और इंटरनेट मीडिया की सबसे बड़ी भूमिका है। अब हिंदी वॉइस सर्च क्वाइरी 400 प्रतिशत की दर से हर साल बढ़ रही है और इंटरनेट मीडिया हिंदी जानने वालों का सबसे बड़ा पटल बन गया है। भाषाई इंटरफेस की वजह से इस समय जो तकनीकी सुविधा अंग्रेजी में उपलब्ध है, वह अब हिंदी में भी उपलब्ध है। अंग्रेजी की तुलना में इंटरनेट मीडिया पर हिंदी अधिक लोकप्रिय हो रही है। भारत निकट भविष्य में विश्व का सबसे बड़ा इंटरनेट उपभोक्ता देश बनने जा रहा है, जिसका सबसे प्रभावी माध्यम हिन्दी रहने वाला है।

इन दिनों पूरी दुनिया की निगाहें भारत के 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के संकल्प पर लगी हुई हैं। दरअसल आने वाले 22 वर्षों में भारत को विकसित देश बनाना एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में– शिक्षा, रोजगार, उद्योग, कृषि, सेवा क्षेत्र, स्टार्टअप, हरित ऊर्जा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, महिलाओं का उत्थान, गरीबी उन्मूलन, संतुलित क्षेत्रीय विकास, प्रभावी न्याय व्यवस्था आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में हिंदी भाषा का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होगा। भारत को विकसित देश बनाने में जिन क्षेत्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, उनमें हिंदी का प्रयोग व्यापक रूप से किया जा रहा है। हिंदी, भारत की राजभाषा होने के नाते, देश की प्रगति और विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत विकसित भारत के निर्माण में हिंदी की भूमिका पर चर्चा करेंगेः–

1. राष्ट्रीय एकता : देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में हिंदी का अहम योगदान है। यह

देश के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों को एक सूत्र में बाँधती है, यह राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है और देश के नागरिकों को एक–दूसरे के साथ जोड़ने में मदद करती है। हिंदी ही आम आदमी से बेहतर संवाद का सीधा माध्यम है। ऐसे में जरूरी है कि हम विकास के लिए भी हिंदी का रास्ता ही चुनें। इस देश में हिंदी ही ऐसी भाषा है, जो देश को एक सूत्र में जोड़ने की ताकत रखती है।

2. शिक्षा और साहित्य : हिंदी भाषा में विशाल साहित्य और शिक्षा सामग्री उपलब्ध है। यह भाषा शिक्षण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है और देश के युवाओं को ज्ञान एवं संस्कृति की समझ प्रदान करती है।

3. संचार और मीडिया : हिंदी भाषा में समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और टेलीविजन चैनल व्यापक रूप से उपलब्ध हैं। यह भाषा संचार एवं मीडिया के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और देश के नागरिकों को जानकारी एवं मनोरंजन प्रदान करती है। आज हिंदी सिनेमा विश्व में एक अहम स्थान रखता है; बॉलीवुड की पहचान भी हिंदी से है। हिंदी भाषा सिर्फ वार्तालाप और संचार का माध्यम ही नहीं, बल्कि यह देश में रोजगार के सृजन का भी माध्यम है।

4. आर्थिक विकास : हिंदी भाषा का प्रयोग व्यापार और उद्योगों में भी किया जाता है। यह भाषा आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान करती है और देश के व्यवसायियों तथा उद्यमियों को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में मदद करती है। देश में कारोबार का बेहतर माध्यम हिंदी भाषा है, क्योंकि यहाँ 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है। ऐसे में ग्रामीण जनता से कारोबार करने में हिंदी भाषा सशक्त भूमिका निभा सकती है। इसी मूल मंत्र पर सरकारी बैंकों ने अमल करना शुरू कर दिया है; यही वजह है कि अब बैंकों में ज्यादातर कामकाज हिंदी में होने लगा है।

5. प्रौद्योगिकी : साइबर दुनिया में भी हिंदी का दखल तेजी से बढ़ रहा है। यही वजह है कि इंटरनेट की दुनिया में सोशल नेटवर्किंग से लेकर विभिन्न वेबसाइट तक अब हिंदी में उपलब्ध है।

6. सांस्कृतिक विरासत : हिंदी भाषा भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह भाषा देश की संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित और प्रसारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि किसी भी देश की उन्नति यदि सही दिशा में हो तो उस देश की मुख्य भाषा की अनदेखी करना मुश्किल है। मतलब यही कि देश के विकास के साथ अपनी भाषा का भी महत्त्व है। विकास यदि प्रौद्योगिकी क्षेत्र का हो तो उसमें भाषा का प्रवेश होता है। विकास यदि बिजनेस क्षेत्र का है तो ग्लोबल ट्रैड में भाषा प्रवेश कर जाती है। पूँजी निवेश के अनुपात में भाषा के उपयोग का अनुपात बढ़ता है। इसलिए हिंदी का विकास भारत के अपने विकास पर निर्भर है। वैश्विक बाजार में अगर भारत की भूमिका बढ़ेगी, तो निश्चित ही उसमें हिंदी भाषा का अहम योगदान होगा। हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभर रही है, और जितना अधिक हम हिंदी और

प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करेंगे, उतनी ही तेज़ गति से भारत का विकास होगा। विकसित भारत के निर्माण में हिंदी भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह भाषा राष्ट्रीय एकता, शिक्षा, साहित्य, संचार, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक विरासत में महत्त्वपूर्ण योगदान करती है। हमें हिंदी भाषा को बढ़ावा देने और उसके महत्त्व को समझने की आवश्यकता है, ताकि हम विकसित भारत के निर्माण में इसकी भूमिका को और भी मजबूत बना सकें।

संदर्भ

1. शंकर दयाल सिंह, 1995, हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा जनभाषा, किताब घर, दरियागंज, नई दिल्ली
2. कृष्ण चंद्र श्रीवास्तव (संपा), 2003, राजभाषा भारती
3. डॉ0 मणिक मृगेश, 2000, भूमंडलीकरण, निजीकरण व हिंदी, वाणी प्रकाशन दरियागंज ,नई दिल्ली
4. डॉक्टर दंगल झाल्टे, 2002, प्रयोजनमूलक हिंदी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
5. विभूति मिश्रा (संपा) राष्ट्रभाषा संदेश, 15 जुलाई 2009, अंक 20 एवं 21
6. डॉक्टर सुदेश, 2013, हिंदी की दशा और दिशा, मेट्रो बुक्स शाहदरा, दिल्ली
7. डॉ रामविलास शर्मा, 2003, भारत की भाषा समस्या, राजकमल प्रकाशन दिल्ली
8. डॉ भोलानाथ तिवारी, 2010, राजभाषा हिंदी, प्रभात प्रकाशन दिल्ली

◆◆◆

स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

बेबी चन्द्रिका कुमार एवं कुसुम लता

[1]शोधार्थी, संस्कृत, महात्मा ज्योतिबा फूले रोहिलखण्ड वि०वि०, बरेली, शोध निर्देशिका – विभागाध्यक्ष – संस्कृत विभाग, राजकीय रज़ा पी० जी० कॉलेज, रामपुर

बीज शब्द :–रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारी बाई, सरोजिनी नायडू, भीमा बाई होल्कर, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, बेगम हज़रत महल, कस्तूरबा गाँधी, हंसा मेहता, प्रीतिलता वोडेयार, विजया लक्ष्मी पंडित, ऊशा मेहता, दुर्गाबाई देशमुख, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, कल्पना दत्ता, मैडम भीकाजी कामा, राजकुमारी अमृत कौर, एनी बेसेंट, मृदुला साराबाई, पंडिता रमाबाई, मातंगिनी हाजरा, रुक्मिणी देवी अरुंदले, दुर्गा देवी वोहरा।

प्रस्तावना

भारत में 17वीं षताब्दी के मध्य से 20वीं षताब्दी के मध्य तक ब्रिटिश सरकार का शासन था। इस दौरान अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर अमानवीय व्यवहार एवं अत्याचार किए जा रहे थे। भारतीय न तो स्वतन्त्र जीवन जी सकते थे और न ही वे एक दूसरे से मिलकर अपना दुख साझा कर सकते थे। ऐसे में एक दिन युद्ध तो छिड़ना ही था और सन् 1857 में वह समय आ गया, जब सर्व प्रथम अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजा। हालांकि निश्चित रूप से वर्ष 1857 से पूर्व भी अपने राष्ट्र को ब्रिटिश सत्ता से मुक्त कराने हेतु भारतीयों के मन में विचार अवष्य आया होगा और रोश भी था किन्तु उन्हें सही समय की प्रतीक्षा और सुनियोजित रणनीति की आवश्यकता थी। सन् 1857 में स्वतन्त्रता आन्दोलन आरम्भ हुआ और 1947 तक अनेक रूपों में अंग्रेज़ों के विरुद्ध आन्दोलन किए गए। इस अवधि के दौरान देश को स्वतन्त्र कराने हेतु भारत के असंख्य वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी, तमाम क्रान्तिकारियों ने अपना रक्त बहाया और अधिकांष समय कारावास में बिताया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनेक वर्ग एक साथ भूमिका निभा रहा था, जो अपने–अपने स्तर से स्वाधीनता आन्दोलन में योगदान दे रहा था। कुछ तलवार की धार से वार कर रहे थे, तो कुछ कलम की धार का प्रयोग कर रहे थे। वहीं कुछ लोग आन्दोलनकारियों के सहायक बने हुए थे। किन्तु यहाँ विशेष बात यह है कि उस स्वतन्त्रता संग्राम में पुरुषों के साथ स्त्रियों ने भी कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ाई लड़ी। इतिहास साक्षी है कि एक कट्टरवादी हिन्दू समाज में महिलाओं को इस प्रकार सड़क पर उतरना अत्यन्त दुश्कर था किन्तु तत्कालीन परिस्थितियाँ भारतीय समाज से बहुत परे थीं, इसलिए रूढ़िवादी समाज से निकलकर महिलाएँ ब्रिटिश सत्ता के विरोध में अपने स्वर बुलन्द किए।

स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं की बहादुरी एवं उनके बलिदान की असंख्य कहानियाँ हैं। रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारी बाई, सरोजिनी नायडू, भीमा बाई होल्कर, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, बेगम हज़रत महल सरीखी तमाम महिलाएँ सक्रिय क्रान्तिकारी बनीं, गुप्त समूह स्थापित किए, ब्रिटिश

विरोधी साहित्य प्रकाशित किया और कठोर कारावास की यातनाएँ सहीं।

झाँसी रियासत की **रानी लक्ष्मीबाई** (19 नवम्बर 1928 – 18 जून, 1858) को 1857 में भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है। वह झाँसी के राजा गंगाधर राव की पत्नी थीं, जिन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद उन्होंने झांसी में आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया और सेना की कमान अपने हाथ में लेकर रणभूमि में कूद पड़ीं। लक्ष्मीबाई किसी एक रियासत पर राज करने के लिए नहीं लड़ रही थी, बल्कि वह पूरे देश की आज़ादी चाहती थी। इस बात की जानकारी उनके उस पत्र से लगती है, जिसे उन्होंने अपने समर्थक पड़ोसी राजा मर्दान सिंह को लिखा था। उन्होंने उसमें लिखा था कि **''बहुत से सहयोगियों और तात्या टोपे से सलाह मशविरे के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि सुराज अर्थात् हमारा अपना शासन होना चाहिए। यह हमारा अपना देश है।''1** रानी लक्ष्मीबाई एक पुरुष की भाँति बहादुरी से लड़ीं और ब्रिटिश सेना से लड़ते हुए युद्ध के मैदान में षहीद हो गईं।

वीरांगना झलकारीबाई (22 नवम्बर 1830 – 5 अप्रैल, 1858) एक महिला सैनिक थीं, जिन्होंने 1857 के भारतीय विद्रोह में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की महिला सेना में शामिल थीं और उनकी प्रमुख सलाहकार भी थीं। उनके पति पूरन सिंह ने भी रानी लक्ष्मीबाई की तोपखाना इकाई के एक तोपची के रूप में सेवा की। झलकारी बाई ने रानी से कहा कि मैं भी आपका वेश धारण करूँगी ताकि अंग्रेज सिपाही धोखे में पड़ जाएँ। झाँसी की घेराबन्दी के चरम पर उन्होंने खुद को रानी के रूप में प्रच्छन्न किया और उनकी ओर से मोर्चे पर सँभाला, जिससे रानी सुरक्षित रूप से किले से बाहर निकल सकीं।

षत्रु ने झलकारी को रानी समझकर उसे घेरने का प्रयत्न किया। षत्रु सेना से घिरी झलकारी भंयकर युद्ध करने लगीं। एक भेदिए ने उसे पहचान लिया और उसने भेद खोलने का प्रयत्न किया, परन्तु झलकारी ने उसे अपनी गोली का षिकार बनाया। अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज ने झलकारी को डपटते हुए कहा कि तुमने रानी बनकर हमको धोखा दिया है और महारानी लक्ष्मीबाई को यहाँ से निकलने में मदद की है तुमने। हमारे एक सैनिक की भी जान ली है। मैं भी तुम्हारे प्राण लूँगा। झलकारी ने गर्व से उत्तर देते हुए कहा – **''मार दे गोली, मै प्रस्तुत हूँ।''2**

सरोजिनी नायडू (13 फरवरी, 1879 – 2 मार्च, 1949) का जन्म भारत के हैदराबाद नगर में हुआ था। "भारत की कोकिला" के नाम से मषहूर सरोजिनी नायडू एक कवियित्री, स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रमुख सदस्य थीं। वह स्वतन्त्र भारत की पहली महिला उत्तर प्रदेश राज्यपाल थी। उनकी वाकपटुता और नेतृत्व ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

भीमा बाई होल्कर (20 सितम्बर,1795 – 28 नवम्बर, 1858) इन्दौर के महाराजा यशवंत राव होल्कर की बेटी थीं। वह रानी अहिल्या बाई होल्कर की पोती और मल्हार राव होल्कर तृतीय की बड़ी बहन थीं। संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी सन् 1817 में ही शुरू हो गई थी, जब भीमा बाई होल्कर ने

ब्रिटिश कर्नल मैल्कम के खिलाफ लड़ाई लड़ीं और उसे गुरिल्ला युद्ध में हरा दिया।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय (3 अप्रैल, 1903 – 29 अक्टूबर, 1988) प्रमुख समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी और महिला अधिकारों की समर्थकथीं। उन्होंने स्वतन्त्रता–पूर्व भारत में ग्रामीण कारीगरों के उत्थान, स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए काम किया।

बेगम हज़रत महल (1820 – 1879) सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाने वाली पहली महिला थीं। आज़ादी के पहले युद्ध के दौरान 1857 से 1858 तक राजा जयलाल सिंह की अगुवाई में बेगम हज़रत महल ने अपने समर्थकों के साथ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के विरुद्ध विद्रोह किया था। आलमबाग़ की लड़ाई के दौरान उन्होंने अपने जांबाज़ सिपाहियों की भरपूर हौसला आफ़ज़ाई की और हाथी पर सवार होकर अपने सैनिकों के साथ लगातार युद्ध करती रहीं।

महात्मा गाँधी की पत्नी **कस्तूरबा गाँधी** (11 अप्रैल, 1869 – 22 फ़रवरी, 1944) 1917 के मध्य में, जब मोहनदास बिहार के चम्पारण में नील की खेती करने वाले किसानों की स्थिति सुधारने के लिए काम कर रहे थे, कस्तूरबा वहाँ की महिलाओं के कल्याण के लिए चिन्तित थीं। वर्ष 1922 में उन्होंने एक अहिंसक आन्दोलन में भाग लिया। उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। साथ ही वे महिला शिक्षा और सशक्तिकरण की वकालत की और भारत की स्वतन्त्रता के लिए उनके प्रयासों का समर्थन किया।

हंसा मेहता (3 जुलाई 1897 – 4 अप्रैल, 1995) को एक षिक्षिका, राजनयिक और स्वतंत्रता सेनानी, वे भारत की स्वतन्त्रता और महिला अधिकारों की वकालत करने वाले अन्तर्राश्ट्रीय मंचों का हिस्सा रहीं और स्वतन्त्रता के बाद उन्होंने भारत की संविधान सभा तथा सलाहकार समिति एवं मौलिक अधिकारों पर उप–समिति की सदस्य रहते हुए नीतियों को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रीतिलता वाद्देदार (5 मई, 1911 – 24 सितम्बर, 1932) भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की महान क्रान्तिकारिणी थीं। वे एक मेधावी छात्रा एवं निर्भीक लेखिका भी थीं। उन्होंने ब्रिटिश क्लब पर हमले का नेतृत्व किया, जिससे प्रतिषोध की भावना उजागर हुई। उनका बलिदान और दृढ़ संकल्प औपनिवेषिक उत्पीड़न के विरुद्ध लड़ाई को प्रेरित करता है।

विजया लक्ष्मी पण्डित (18 अगस्त, 1900 – 1 दिसम्बर, 1990) भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू की बहन थीं, जिन्होंने गाँधी जी से प्रभावित होकर स्वाधीनता आन्दोलन में हिस्सा लिया। उस दौरान वह कई बार जेल भी गईं। उनके पति भी स्वतन्त्रता आन्दोलनकारी थे। वह संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला थीं।

पद्म विभूशण ऊषा मेहता (25 मार्च, 1920 – 11 अगस्त, 2000) भारत की गाँधीवादी और राजनीतिक कार्यकर्ता थीं। वह पेशे से प्रोफ़ेसर थीं किन्तु उससे पूर्व वह एक प्रसारक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान भूमिगत कांग्रेस रेडियो का नेतृत्व किया और जनता को प्रेरित करने और उन्हें

सूचित करने के लिए वायु तरंगों का उपयोग किया।

दुर्गाबाई देशमुख (15 जुलाई, 1909 – 9 मई, 1981) का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वह सामाजिक कार्यकर्ता तथा भारतीय संविधान सभा में चुनी जाने वाले महिला और स्वतन्त्र भारत के पहले वित्तमंत्री चिन्तामणराव देशमुख की पत्नी थीं। उन्होंने महिला अधिकारों, श्रम अधिकारों और हाषिए पर पड़े लोगों के उत्थान के लिए काम किया। उनके प्रयासों ने स्वतन्त्रता के बाद समावेशी सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रषस्त किया।

अरुणा आसफ अली (16 जुलाई, 1909 – 29 जुलाई, 1996) को वर्ष 1942 में भारत छोडो आन्दोलन के दौरान, मुम्बई के गोवालिया मैदान में कांग्रेस का झण्डा फहराने के लिए याद किया जाता है। अरुणा जी ने 1930, 1932 और 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय जेल भी गईं। वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में अरुणा आसफ अली जी ने जेल में बन्द होने के बजाय भूमिगत रहकर अपने अन्य साथियों के साथ आन्दोलन का नेतृत्व करना उचित समझा। महात्मा गाँधी जी आदि नेताओं की गिरफ़्तारी के तुरन्त बाद मुम्बई में विरोध सभा आयोजित करके विदेशी सरकार को खुली चुनौती देने वाली वे प्रमुख महिला थीं।

सुचेता कृपलानी (25 जून, 1908 – 1 दिसम्बर, 1974) प्रमुख महिला स्वतन्त्रता आन्दोलनकारी नेत्रियों में गिनी जाती हैं। वर्ष 1940 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की महिला षाखा 'अखिल भारतीय महिला कॉंग्रेस' की स्थापना की। वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय होने के कारण उन्हें एक साल के लिए जेल जाना पड़ा। वर्ष 1946 में वह संविधान सभा की सदस्य चुनी गईं। 1949 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रतिनिधि के रूप में भी चुना गया था। स्वतन्त्रता के पश्चात् उन्होंने राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभाई और वर्ष 1963 में उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनने के साथ ही भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बन गईं।

कल्पना दत्ता (27 जुलाई, 1913 – 8 फरवरी, 1995) भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की एक प्रभावशाली प्रसिद्ध महिला क्रान्तिकारी थीं, जिन्होंने सूर्यसेन के नेतृत्व वाले दल में शामिल होकर देश से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकने के उद्देष्य से कई क्रान्तिकारी गतिविधियों अंजाम दिया। मई, 1933 ई. में कुछ समय तक पुलिस और क्रान्तिकारियों के बीच सषस्त्र मुकाबला होने के बाद कल्पना दत्त भी गिरफ्तार हो गईं। मुकदमा चला और फ़रवरी, 1934 ई. में सूर्यसेन तथा तारकेश्वर दस्तीकार को फाँसी दे दी गई और 21 वर्षीय कल्पना दत्ता को आजीवन कारावास की सज़ा हो गई। 1937 ई. में जब पहली बार प्रदेशों में भारतीय मन्त्रिमण्डल बने, तब महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि के विशेष प्रयत्नों से कल्पना जेल से बाहर आ सकीं।

मैडम भीकाजी कामा (24 सितम्बर, 1861 – 13 अगस्त, 1936) स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाली पारसी महिला क्रान्तिकारी थीं, जिन्होंने 1907 में जर्मनी के स्टटगार्ट में हुई अन्तर्राश्ट्रीय सोषलिस्ट कांग्रेस में कहा था कि "भारत में ब्रिटिश शासन जारी रहना मानवता के नाम पर कलंक है।"

मैडम भीकाजी कामा ने इस कांफ्रेंस में 'वन्देमातरम्' अंकित भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहरा कर अंग्रेजों को कड़ी चुनौती थी। मैडम कामा दादाभाई नौरोजी से प्रभावित थीं और यूनाइटेड किंगडम में भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत थीं।

राजकुमारी अमृत कौर (2 फरवरी, 1887 – 6 फरवरी, 1964) स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी तथा सामाजिक कार्यकर्त्री थीं। वे 1919 से ही गाँधी जी की करीबी अनुयायी थीं तथा 16 वर्ष तक उनकी सचिव रहीं। उन्होंने 1930 के नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। वे स्वतन्त्र भारत की पहली स्वास्थ्य मंत्री बनीं।

इनके अलावा भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिला क्रान्तिकारियों में एनी बेसेंट, मृदुला साराबाई, पण्डिता रमाबाई, मातंगिनी हाजरा, रुक्मिणी देवी अरुंदले, दुर्गा देवी वोहरा का नाम बड़े आदर के साथ लिया जा सकता है। संघर्ष के आरम्भिक दौर में महिलाओं के योगदान की विशेषता सामाजिक सुधार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, राष्ट्रवादी आन्दोलनों में उत्साही भागीदारी और सामाजिक मानदण्डों तथा पितष्सत्तात्मक बाधाओं के खिलाफ़ उनकी अवज्ञा थी। इन महिला क्रान्तिकारियों को कई बार जेल भी जाना पड़ा, लेकिन फिर भी इन्होंने हर नहीं मानी। **''जेल में महिलाओं ने अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल की, अपनी रिहाई और अन्य राजनीतिक क़ैदियों की रिहाई की माँग की। हालाँकि ज़बरदस्त भूख की इच्छा को दबा पाना अक्सर मुश्किल होता था।''**[३]

इन क्रान्तिकारी एवं दूरदर्शी नेत्रियों के उदय ने राष्ट्रवादी आन्दोलन को और अधिक जोष दिया। इन नेत्रियों ने भारत के हितों की जमकर वकालत की और पूरे देश की महिलाओं को स्वतन्त्रता के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। महात्मा गाँधी ने कहा था कि **''हमारी माँओं-बहनों के सहयोग के बगैर यह संघर्ष संभव ही नहीं था। जिन महिलाओं ने आज़ादी की लड़ाई को अपने साहस से धार दी, उनका ज़िक्र यहाँ लाज़िमी है।''**

निश्कर्शतया हम कह सकते हैं कि स्वाधीनता आन्दोलन में भारतीय वीरांगनाओं की भागीदारी ने समाज के उस भ्रम को झुठला दिया कि महिलाएँ सिर्फ घर की चार दीवारी के अन्दर ही रह सकती हैं और ष्उनमें नेतृत्व की क्षमता का अभाव होता है। इन महिला क्रान्तिकारियों ने इस आन्दोलन में न सिर्फ़ भाग लिया, बल्कि अपने शौर्य से तत्कालीन ब्रिटिश षासकों को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने यह दिखा दिया कि अगर कोई भी उनके स्वाभिमान और अधिकार को चुनौती देगा, तो वे मरते दम तक उसका डटकर मुकाबला करेंगी। 21वीं सदी में भारतीय समाज को इन महिला आन्दोलनकारी नेत्रियों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, तभी हम विश्व–परिदृष्य पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज़ करा सकते हैं।

सन्दर्भ सूची -

1. 1857 और जनप्रतिरोध / लेखिका – नमिता सिंह एवं कुँवरपाल सिंह / प्रकाशक – षिल्पायन बुक्स, शाहदरा, दिल्ली–110032 / संस्करण – 2015 / पृश्ठ संख्या – 188

2. 1857 की क्रान्ति एवं उसके क्रान्तिकारी / लेखक – एस० एल० कान्ता / प्रकाशक – इण्डियन पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर / संस्करण – 2015, पृष्ठ संख्या – 159
3. Studies Feminisms n°2 / कनक मुखर्जी (1921–2005) संघर्षरत महिलाएँ, संघर्ष में महिलाएँ / Tricontinental : Institute for Social Research / March 2021 @ पृष्ठ संख्या–23
4. अरुणा आसफ अली, द रिसर्जेन्स आफ इण्डियन वीमेन, नई दिल्ली, 1991

◆◆◆

भारतीय सिनेमा और साहित्य द्वारा परिवर्तन

कुसुम लता
विभागाध्यक्ष संस्कृत, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0)

सिनेमा हमारे वर्तमान समय का आईना होता है हमारे समाज में हमारे आस–पास के लोगों की क्या आवश्यकताएं हैं, क्या सोच है, कैसा लोगों का रहन–सहन है, क्या बोलने–चालने का तरीका है, क्या खान–पान है, क्या पहनावा है, लोग कैसे हैं, उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति कैसी है, देश के किस कोने में लोग कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, किस स्तर के लोग किस प्रकार का जीवन जी रहे हैं, ये सभी वस्तुएं हर दशक में लोगों के सामने सिनेमा ही लेकर आता है। किसी और में इतनी कुव्वत कहाँ। दशक बार सिनेमा का वर्णन कुछ इस प्रकार से करने का प्रयास किया है।

भारतीय सिनेमा का प्रारम्भ 1890 में हुआ। आरम्भ में दर्शकों को मूक फिल्में देखने को मिली इसमें कलाकर केवल अभिनय करता था, बोलता नहीं था। धीरे–धीरे इस व्यवसाय ने जैसे ही धन देना शुरू कर दिया वैसे ही उसमें विभिन्न परिवर्तन आने लगे। इनमें मनोरंजन के साथ–साथ वर्तमान समय की संस्कृति और साहित्य को बड़ी ही चतुराई से अपनाया गया और कई बार तो यह भी देखा गया कि सांस्कृतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने में सिनेमा ने महती भूमिका निभाई।

हर दशक में सिनेमा कलाकारों ने साहित्य एवं संस्कृति को जीवित रखने के लिये भरसक प्रयास किये हैं चाहे तो उनकी वेशभूषा हो गीत–संगीत, समय की संस्कृति को सबके सम्मुख बड़ी ही चतुराई से प्रस्तुत किया है।

1920 में भारत में असहयोग आन्दोलन की शुरूआत हुई। इसका नेतृत्व गांधी जी कर रहे थे। जलियावाला कांड पर आधारित सिनेमा में इतना मार्मिक और सजीव चित्रण है कि लोगों का दिल और आंखें दोनो ही भर आते हैं और आक्रोशित से हो जाते हैं, चाहे वह काण्ड की फिल्म कभी भी देखें। ऐसे ही धार्मिक, राजनैतिक सोच को लेकर भी सिनेमा दिखाया गया है जिनमें ईश्वर के मानों साक्षात दर्शन हो गये हैं। राजनीति में भी कुछ इसी प्रकार का दिल छू लेने वाले चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। जौहर, सतीप्रथा जैसे प्रयासों का मार्मिक चित्रण है। जिसे देखकर दर्शक उस समय के बारे में जानकर भाव विभोर और आहलादित होता है। राजाओं की प्रथायें उनके त्यौहार, उनके गीत, उनका पहनावा सब आनंद देने वाला होता था जिससे दर्शक स्वंय सिनेमा की ओर आकर्षित होते थे।

1930 का दशक भारतीयों के लिये आर्थिक और राजनैतिक बदलाव वाला माना गया है। जिसकी वजह से भारत की आज़ादी का मार्ग प्रारम्भ हुआ। इस समय के फिल्मकारों ने द ग्रेट डिप्रेशन का नाम दिया है। इस समय में ज्यादातर देश भक्ति, पौराणिक कथाओं पर आधारित फिल्में ही बनी। रोमाँचित फिल्में कुछ कम ही बनी। इस दशक में भारतीय और विदेशियो की कहानी पर आधारित फिल्में बनी है। इसकी झलक कलाकार के वस्त्रों से भी लग जाती है। 1931 में प्रदर्शित फिल्म आलमआरा का गाना

निम्न हैः–

दे दे खुदा के नाम पर
दे दे खुदा के नाम पर प्यार
हिम्मत है तो दे दे

1940 के दशक में भारत औपनिवेशिक देश न रहकर आज़ाद देश बन चुका था और भारत एक और चिंतन की ओर बढ़ रहा था भारत पाकिस्तान बटवारे की ओर उसी सोच को लेकर फिल्में दिखाई गयी। फिल्मों में बिछड़ना सिनेमा में दिखाया गया है, किस प्रकार से बच्चे माँ–बाप से, भाई–भाई से, बहन भाई से, पति पत्नि से बट गये। कुछ पाकिस्तान गये तथा कुछ भारत में रह गये। कुछ को क्रोध आया, कुछ ने लूट मार करी, हृदय विदातक चलचित्र सिनेमा में प्रदर्शित है जो कहीं–कहीं तो आपकी आंखें भी नम कर देते हैं। वहाँ भी, रूला और मिला देने वाले गीत भी सुनने को मिलते हैं तो कहीं बच्चों की अठखेलियाँ देखने को मिलाती हैं, तो कहीं किसी अबला और भूखे बच्चे का मचलना हृदय के दुख का आभास कराता है। उदाहरण के लिए एक गाना जो निम्न हैः–

तू मेरा चाँद मैं तेरी चाँदनी
मैं तेरा राग तू मेरी रागनी हो
जिया बेकरार है छाई बहार है
आ जा मेरे बालमा तेरा इंतेज़ार है।

1950 आज़ादी के पश्चात् देश में समाजवाद का प्रारम्भ हुआ और सीधा प्रभाव हमारे सिनेमा जगत पर सीधा पड़ा क्योंकि जैसे मैं पहले कह चुकी हूं कि सिनेमा वर्तमान समाज का आईना होता है। उस दौर की फिल्मों में रोमाँस एक्शन पुर्नजन्म माँ और मातृभूमि पर आधारित फिल्में आईं।

1970 के दशक में हमारे सिनेमा ने एक अलग ही मोड़ फिर से लिया उसी दशक में बंगलादेश बंटवारे की विभिशिता भारत से ली। इसका असर हमारे सिनेमा पर भी आधा दशक बीतते–बीतते फिल्मों में भ्रष्टाचार हिंसा और ऐक्शन ने अपनी जगह बनाई और सिनेमा में पश्चिमी देशों का प्रभाव भी दिखाई देने लगा। 1970 दशक का एक गाना जो निम्न हैः–

मैं शायर तो नहीं मगर ऐ हंसी मैंने
जबसे देखा तुझको मुझको शायरी आ गयी।

1980 के दशक में जैसे–जैसे देश में आर्थिक और औद्योगिक सुधार होने लगे देश में नये कारोबार शुरू हुये तो उसका प्रभाव सिनेमा पर तो आना ही था। कालाकार बड़ी–बड़ी आशायें दर्शकों सम्मुख लेकर आते दर्शक भी उन्हें अपना आदर्श मान ऊँचाईयों को छूते रहे। सरकार की योजनाएं फिल्मों के माध्यम से लोग ज़्यादा जाने और उधोगों की राह पर निकल पड़े। एक छोटा कारोबारी भी फिल्मी हीरों की तरह आज एक बड़ा व्यापारी बनकर भारत को विकसित कर रहा है और जब व्यक्ति के पास पैसा

होता है तो भी स्वयं में किसी हीरो से कम नहीं होता।

1990 के दशक में देश में एक अलग ही हवा चली। बाबरी मस्जिद पर हमले के साम्प्रदायिक भावना लोगों के दिलों में पनपने लगी। देश में बड़े पैमाने पर दंगे हुये। इसका असर फिल्मों पर पड़ा। लेकिन 1991 के बाद भारत में आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आया और फिल्म की ओर मध्यमवर्गीय परिवारों की संख्या में काफी रूझान बढा। आम लोगों की बढ़ती संख्या को लेकर फिल्में बनाई जाने लगी और परिधान भी आराम देय पहनाये जाने लगे। कलाकार भी खुश और दर्शक भी खुश। गाने के मामले में 1990 का दशक सबसे अलग रहा है जिसके गानों की एक अलग ही मिसाल हैः–

करते हैं हम भी तुमसे प्यार
कर लिया प्यार का इकरार
अब तुम ही कहो हम कैसे जिये
बिन तेरे यार.....

2000 के दशक में एक बार फिर से द ग्रेट डिप्रेशन की मंदी भारतीय सिनेमा में आई। इसी दशक में लीमन ब्रदर्स ने स्वयं दिवालिया घोशित कर दिया था। इस दशक में दर्शकों को रोमाँस, कॉमेडी, एक्शन, ड्रामा जैसे वास्तविक घटनाएँ दिखाई गयी जिसे लोगों ने आसानी से समझ लिया। इस दशक का कलाकार नये स्टाइल और सुकून से भरा दिखाया गया है। इस दशक के गाने भी बहुत प्रसिद्ध हैंः–

(1) तुम दिल की धड़कन में रहते हो,

(2) जीने लगा हूं पहले से ज़्यादा तुम पे मरने लगा हूं।

2010 के दशक में सामाजिक मुद्दे जैसे नागरिक संशोधन अधिनियम के तहत जो विदेशी भारत में रह रहे हैं उनके दस्तावेज़ों से सम्बन्धी समस्याओं को लेकर उनके यहाँ रहने को लेकर क्या लाभ क्या हानि जैसे मुद्दों पर फिल्में बनी है। जिसको भारतीय पसन्द भी कर रहे हैं और इस ओर सोच भी गयी है। कलाकार अपने सिनेमा जगत से लोगों को खूब प्रभावित कर रहे है यू कहे की देशवासी कलाकारों के फैशन, बोलचाल, रहन–सहन को फॉलो कर रहे हैं।

तुम जो आये ज़िंदगी में, बात बन गयी
इश्क, मज़हब, इश्क मेरी ज़ात बन गयी।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारत में सिनेमा का सफर इतना लम्बा है कि इसकी जितनी भी जानकारी हो उतना ही कम लगती है। युगो–युगों का सार है सिनेमा, संगीत और संस्कृति का भण्डार है। सिनेमा, संगीत का समुंद्र सिनेमा, भावनाओं का पहाड़ है सिनेमा, समस्याओं का ढलान है। सिनेमा में एक बार डूबिये तो सही आनंद का ज्वार है सिनेमा।

◆◆◆

डिजिटल साक्षरता और भारत में छात्रें के सीखने के परिणामों पर इसका प्रभाव

शिक्षा शर्मा[1] एवं प्रदीप कुमार चौधरी[2]
[1]शोधार्थी, [2]सहा0 प्राध्यापक, राज0 रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

सारांश

यह अध्ययन दर्शाता है कि भारत में बच्चों को तकनीक का उपयोग करना सिखाने से वे स्कूल में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। शैक्षणिक अंतराल को कम करने के लिए, यह अध्ययन भारतीय बच्चों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन और संज्ञानात्मक विकास को बेहतर बनाने में डिजिटल साक्षरता के महत्त्व पर प्रकाश डालता है। डिजिटल साक्षरता का मतलब है कंप्यूटर और इन्टरनेट का प्रयोग करना, गंभीरता से सोचना और तकनीक का जिम्मेदारी से उपयोग करना। जब बच्चे तकनीक का उपयोग करते है, तो वह अधिक रचनात्मक हो सकते है जिससे वह ओनी समस्याओ को अलग एवं बेहतर तरीको से हल कर सकते है। डिजिटल साक्षरता, जिसमें तकनीकी क्षमता, आलोचनात्मक सोच और प्रौद्योगिकी का नैतिक उपयोग शामिल है, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान क्षमताओं को प्रोत्साहित करके सीखने के परिणामों में सुधार करती है। हालाँकि, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे, डिजिटल कौशल की कमी और संसाधन असमानताओं के कारण, अभी भी बड़ी बाधाएँ हैं, खासकर ग्रामीण और वंचित समुदायों के लिए। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के कारण डिजिटल परिवर्तन आगे बढ़ा है, लेकिन शिक्षकों के लिए असमान पहुँच और अपर्याप्त प्रशिक्षण सहित बाधाएँ अभी भी मौजूद हैं। भारत में एक समावेशी, तकनीकी रूप से उन्नत शिक्षा प्रणाली स्थापित करने के लिए, रिपोर्ट वर्तमान शोध के परिणामों का सारांष देती है और पाठ्यक्रम एकीकरण, केंद्रित प्रशिक्षण और बुनियादी ढाँचे के व्यय जैसे सभी समावेशी समाधानों को बढ़ावा देती है।

कीवर्डः डिजिटल साक्षरता, सीखने के परिणाम, षैक्षिक असमानताएँ, संज्ञानात्मक विकास, भारत में डिजिटल शिक्षा, शैक्षणिक उपलब्धि

प्रस्तावना

भारत में तेजी से हो रहे डिजिटल परिवर्तन को विभिन्न सरकारी पहलों द्वारा महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दिया गया है, जिनमें से सबसे प्रमुख 2015 में शुरू किया गया **डिजिटल इंडिया अभियान** है। यह कार्यक्रम अधिक लोगों को इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना सीखने में मदद करता है। डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट एक्सेस और ऑनलाइन इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार के माध्यम से, यह राष्ट्रीय पहल भारत को प्रौद्योगिकी द्वारा सशक्त समाज बनाने का प्रयास करती है। कंप्यूटर और टैबलेट और इन्टरनेट जैसी नई तकनीक ने स्कूलों में हमारे सीखने के तरीके को बदल दिया है। किताबों और कक्षाओं को उसी पुराने तरीके से इस्तेमाल करने के बजाय, अब हमारे पास पढ़ाने और सीखने के अलग और रोमाँचक तरीके हैं। डिजिटल साक्षरता, जिसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से जानकारी तक

पहुँचने, उसका मूल्यांकन करने और प्रभावी रूप से उसका उपयोग करने की क्षमता के रूप में परिभाशित किया गया है, इस परिवर्तन की आधारशिला के रूप में उभरी है। शिक्षा के संदर्भ में, डिजिटल साक्षरता में कई तरह की योग्यताएँ शामिल हैं, जिसमें डिजिटल डिवाइस को संचालित करने, ऑनलाइन षैक्षिक प्लेटफॉर्म पर नेविगेट करने और सामने आई डिजिटल जानकारी का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता शामिल है।

चूंकि डिजिटल साक्षरता छात्रों को पारंपरिक शिक्षण संसाधनों के पूरक डिजिटल उपकरणों के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाती है, इसलिए इसे अकादमिक सफलता के एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में अधिक व्यापक रूप से स्वीकार किया जा रहा है। डिजिटल साक्षरता का मतलब है तकनीक का इस्तेमाल करने में माहिर होना, जिससे बच्चों को स्कूल में बेहतर तरीके से सीखने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, ई–बुक्स, इंटरेक्टिव मल्टीमीडिया टूल और ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म छात्रों को कक्षा के बाहर अधिक सीखने का मौका देते हैं। ई–बुक, इंटरेक्टिव वीडियो और ऑनलाइन क्लास जैसी चीजें छात्रों को सिर्फ अपनी कक्षाओं में किए जाने वाले कामों से कहीं ज़्यादा सीखने में मदद करती हैं। यह भारत में खास तौर पर महत्त्वपूर्ण है, जहाँ शहरी बच्चों के पास ग्रामीण क्षेत्र के बच्चो की तुलना में डिजिटल तकनीको की ज़्यादा पहुँच है। बड़े शहरों में रहने वाले बच्चों के पास आमतौर पर इन उपकरणों तक बेहतर पहुँच होती है, जिससे उन्हें ज़्यादा सीखने में मदद मिलती है साथ ही वह इनका उपयोग भी बेहतर और रचनात्मक तरीको से कर पाते है । लेकिन ग्रामीण इलाकों में रहने वाले बच्चों को अक्सर संघर्ष करना पड़ता है यह परिवर्तन भारत में विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है, जहाँ प्रौद्योगिकी तक पहुँच में असमानताएँ षैक्षिक असमानताओं को और बढ़ा देती हैं। शहरी स्थानों में छात्रों के पास आमतौर पर मजबूत बुनियादी ढाँचे के कारण डिजिटल संसाधनों तक अधिक पहुँच होती है, जिससे सीखने के अवसर बेहतर होते हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र अक्सर कम इंटरनेट कवरेज, उपकरणों की कमी और डिजिटल कौशल की कमी जैसे मुद्दों के कारण इस डिजिटल क्रांति में पीछे रह जाते हैं।

डिजिटल साक्षरता का भारतीय छात्रों के सीखने के परिणामों पर जटिल प्रभाव पड़ता है। यह प्रदर्शित किया गया है कि डिजिटल साक्षरता के उच्च स्तर वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक परिणाम आमतौर पर बेहतर होते हैं। तकनीक के साथ अच्छा होना भारतीय छात्रों को बेहतर सीखने में मदद करता है। जब छात्र डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना जानते हैं, तो वे आमतौर पर स्कूल में अच्छा प्रदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए, वे दूर के दोस्तों के साथ काम कर सकते हैं, आसानी से जानकारी पा सकते हैं और खुद से सीख सकते हैं। साथ ही, एक ऐसी दुनिया में जो ज़्यादा डिजिटल होती जा रही है, तकनीक का इस्तेमाल करना जानने से छात्रों को गंभीरता से सोचने, रचनात्मक होने और समस्याओं को सुलझाने में मदद मिलती है। इसके अलावा, तेजी से डिजिटल होते माहौल में, डिजिटल साक्षरता आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान क्षमताओं के विकास के लिए आवश्यक है – कौशल जो शैक्षणिक उपलब्धि और भविष्य के रोजगार दोनों के लिए आवश्यक हैं।

यह मूल्यांकन देश की शिक्षा प्रणाली में डिजिटल साक्षरता के कार्य की जाँच करके इस बात पर चल रही चर्चा में योगदान देना चाहता है कि डिजिटल शिक्षा भारत में शिक्षा के मानक और शिक्षा के स्तर को कैसे बढ़ा सकती है। यह उन चुनौतियों की ओर भी इषारा करता है जो शिक्षकों और छात्रों को नई तकनीकों का इस्तेमाल करते समय सामना करना पड़ता है और कुछ समाधान सुझाता है। इस समीक्षात्मक पेपर का उद्देष्य भारत में शिक्षा को बेहतर बनाने में मदद करना है, यह देखकर कि तकनीक के बारे में जानना सीखने के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है।

डिजिटल साक्षरता

डिजिटल साक्षरता का मतलब है तकनीक और इंटरनेट का सुरक्षित और समझदारी से इस्तेमाल करना जानना। इसमें कंप्यूटर का इस्तेमाल करना, जानकारी ढूँढ़ना और उसका मूल्यांकन करना और ऑनलाइन संसाधनों का जिम्मेदारी से इस्तेमाल करना जैसे कौशल शामिल हैं। बंसल और मिसरा (2021) द्वारा डिजिटल साक्षरता को ''वास्तविक दुनिया की स्थितियों में प्रौद्योगिकी, मीडिया और डिजिटल संसाधनों को समझने, उपयोग करने और उनसे बातचीत करने की क्षमता'' के रूप में परिभाशित किया गया है। यह व्यापक योग्यता छात्रों को ऑनलाइन सामग्री तक पहुँचने, उसका मूल्यांकन करने और उसका आलोचनात्मक उपयोग करने में सक्षम बनाती है, जिससे वे आसानी से डिजिटल क्षेत्र में नेविगेट कर सकते हैं। हमारी तकनीक से भरी दुनिया में, डिजिटल रूप से साक्षर होना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बच्चों को गंभीरता से सोचने में मदद करता है, जिसका मतलब है कि वे यह पता लगा सकते हैं कि इंटरनेट पर उन्हें जो जानकारी मिलती है वह भरोसेमंद है या नहीं। यह बच्चों को डिजिटल टूल और संसाधनों का उपयोग करके रचनात्मक रूप से समस्याओं को हल करने के लिए सशक्त बनाकर समस्या–समाधान कौशल को भी बढ़ावा देता है। अंत में, डिजिटल साक्षरता अकादमिक उपलब्धि में सुधार करती है और छात्रों को डिजिटल दुनिया में पूरी तरह से शामिल होने में सक्षम बनाकर भविष्य में सफलता के लिए तैयार करती है।

भारतीय छात्रों में डिजिटल साक्षरता की वर्तमान स्थिति

भारतीय छात्रों के बीच डिजिटल साक्षरता के स्तर का मूल्यांकन कई अध्ययनों में किया गया है, जिसमें योग्यता की अलग–अलग डिग्री पाई गई है। बंसल और मिसरा (2021) के द्वारा किए गए शोध में 540 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयो में से ज्यादातर छात्र तकनीक का इस्तेमाल करने में अच्छे थे, लेकिन उनमें से कोई भी तकनीक का विशेषज्ञ नहीं था। । अध्ययन से पता चला है कि बच्चे कंप्यूटर और इंटरनेट का बेहतर इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन उन्हें अभी भी यह सीखने की जरूरत है कि वे जो जानकारी पाते हैं उसके बारे में सावधानी से कैसे सोचें और कठिन परिस्थितियों में तकनीक का इस्तेमाल कैसे करें। हालाँकि कई छात्र डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करना जानते हैं, फिर भी उनमें से कुछ अभी भी अधिक उन्नत कौशल के साथ संघर्ष करते हैं। इसका मतलब है कि हमें उन्हें गंभीरता से सोचना, जानकारी की जाँच करना और जिम्मेदारी से तकनीक का इस्तेमाल करना सीखने में मदद करने

के लिए विशेष कार्यक्रम बनाने की जरूरत है।

चालाकुडी में सेक्रेड हार्ट कक्लेज में, **सनी और रामासामी (2024)** द्वारा किए गए शोध में छात्रों के डिजिटल साक्षरता स्तरों को देखा गया और पाया गया कि अधिकांष छात्रों की दक्षता मध्यम से कम थी। अध्ययन में पाया गया कि छात्र कठिन कार्यों के लिए कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करने में बहुत कुषल नहीं थे। वे सरल डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर सकते थे, लेकिन जब मुष्किल काम करने की बात आई, जैसे कि ऑनलाइन जानकारी की सत्यता की जाँच करना या तकनीक के साथ कठिन समस्याओं को हल करना, तो उन्हें कठिनाई हुई। इससे पता चलता है कि बच्चों को तकनीक का समझदारी से इस्तेमाल करने में मदद करने के लिए उन्हें विशेष कौशल सिखाना कितना महत्त्वपूर्ण है। उन्हें सावधानी से सोचना, तकनीक का अच्छे तरीके से इस्तेमाल करना और जानकारी का प्रबंधन करना सीखना होगा। परिणाम कहते हैं कि भारत के स्कूलों को इन महत्त्वपूर्ण कौशलों को सिखाने में अधिक समय बिताना चाहिए ताकि बच्चे आज तकनीक का उपयोग करने की चुनौतियों के लिए तैयार हों।

डिजिटल साक्षरता और शैक्षणिक प्रदर्शन

उच्च शिक्षा में डिजिटल साक्षरता की भूमिका

रविकुमार एट अल. (2024) बैंगलोर उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि, डिजिटल साक्षरता और डिजिटल सीखने के बीच संबंध पर नजर डालते हैं। शोध से पता चलता है कि कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करने में कुषल होने से छात्रों को ऑनलाइन सीखने पर स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिल सकती है। कभी–कभी, ऑनलाइन सीखने में कुछ छोटी–मोटी समस्याएँ हो सकती हैं, जैसे विचलित होना, पर्याप्त मदद न मिलना, या चुनने के लिए बहुत अधिक जानकारी होना। शोध कहता है कि बच्चों को ये कौशल सिखाना वाकई जरूरी है। उन्हें न केवल तकनीक का इस्तेमाल करना सीखना चाहिए, बल्कि यह भी सीखना चाहिए कि वे जो जानकारी पाते हैं, उसके बारे में सावधानी से कैसे सोचें और उसका सही तरीके से इस्तेमाल करें। छात्रों को ये कौशल सीखने में मदद करके, स्कूल यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे ऑनलाइन पढ़ाई का पूरा फायदा उठाएँ और किसी भी समस्या से बचें।

बंसल और चौधरी (2024) के शोध के अनुसार, डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का हाषिए पर पड़े ग्रामीण लोगों के बीच डिजिटल जुड़ाव और इंटरनेट परिणामों पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जब लोग इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पूरा करते हैं, तो वे इंटरनेट का बेहतर उपयोग करने में मदद करने के लिए महत्त्वपूर्ण कौशल सीखते हैं। इसका मतलब यह है कि ग्रामीण इलाकों में रहने वाले बच्चे अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जो उन्हें स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने और ऑनलाइन शिक्षण उपकरणों का उपयोग करने में मदद करती है।

साथ ही, जब ग्रामीण छात्र इन कौशलों को सीखते हैं, तो यह उन्हें स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने

और भविष्य में अच्छी नौकरियों के बेहतर अवसर प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

स्कूली शिक्षा में डिजिटल साक्षरता

बंसल और मिसरा (2022) भारतीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में डिजिटल साक्षरता की डिग्री के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करते हैं। हालाँकि कई छात्र डिजिटल साक्षरता का अच्छा स्तर प्रदर्शित करते हैं, लेकिन उनके शोध से पता चलता है कि उनमें से किसी ने भी उत्कृश्ट कौशल हासिल नहीं किया है। अध्ययन में कहा गया है कि स्कूलों में बच्चों को तकनीक के बारे में सिखाने के तरीके को लेकर कुछ समस्याएँ हैं। अभी, बच्चों को महत्त्वपूर्ण डिजिटल कौशल सीखने में मदद करने के लिए पर्याप्त कार्यक्रम नहीं हैं। बंसल और मिसरा का मानना है कि स्कूलों को न केवल तकनीक का उपयोग करना सिखाना चाहिए, बल्कि यह भी सिखाना चाहिए कि कैसे गंभीरता से सोचना है, समस्याओं को हल करना है और इंटरनेट का उपयोग करते समय जिम्मेदार होना है।

डिजिटल साक्षरता बढ़ाने में शिक्षकों की भूमिका

हरीसा मार्डियाना (2024) द्वारा किए गए एक अध्ययन में बताया गया है कि कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के लिए तकनीक का अच्छा ज्ञान होना कितना महत्त्वपूर्ण है। इसमें कहा गया है कि शिक्षकों को तकनीक का उपयोग करने, अच्छी तरह से पढ़ाने और वे क्या पढ़ा रहे हैं, इसके बारे में बहुत कुछ जानने की आवश्यकता है ताकि वे अपनी कक्षाओं में तकनीक का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें। अध्ययन में उन चुनौतियों के बारे में बताया गया है जिनका सामना शिक्षक अपनी कक्षाओं में प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की कोषिष करते समय करते हैं। कई शिक्षकों को अपने स्कूलों से पर्याप्त प्रशिक्षण या सहायता नहीं मिलती है। जब शिक्षक प्रौद्योगिकी का बेहतर उपयोग करना सीखते हैं, तो इससे छात्रों को अधिक ध्यान देने, अधिक प्रभावी ढंग से सीखने और स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिल सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि वास्तविक जीवन की स्थितियों में डिजिटल उपकरणों का उपयोग कैसे किया जाए, जैसे ऑनलाइन परियोजनाओं पर काम करना। यह यह भी सुझाव देता है कि शिक्षकों को अपने पूरे करियर में नई चीजें सीखते रहना चाहिए और स्कूलों, कंपनियों और सरकारी नेताओं को इसका समर्थन करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

डिजिटल उपकरण और सहयोगात्मक शिक्षण

जोसेफ जी. वी., एट अल. (2024) अध्ययन में कहा गया है कि कक्षा में प्रौद्योगिकी और ***(AI)*** का उपयोग करना वास्तव में महत्त्वपूर्ण है ताकि बच्चे अधिक गहराई से सीख सकें, गंभीर रूप से सोच सकें और स्कूल में बेहतर प्रदर्शन कर सकें, साथ ही अधिक व्यक्तिगत और टीम–उन्मुख सीखने के अनुभव का आनंद उठा सकें। जब बच्चे समूहों में सीखते हैं, तो वे अलग–अलग विचारों को साझा कर सकते हैं और एक–दूसरे की मदद कर सकते हैं, जो उन्हें सोचने और समस्याओं को हल करने में और

भी बेहतर बनाता है। ***(AI)*** उपकरण यह पता लगाने में मदद कर सकते हैं कि प्रत्येक बच्चे को क्या सीखने की जरूरत है और उनके लिए इसे समझना आसान बनाता है, जो उन्हें अपनी पढ़ाई में बेहतर करने में मदद कर सकता है। जब बच्चे अपने दोस्तों के साथ मिलकर काम करते हैं, स्मार्ट कंप्यूटर टूल का इस्तेमाल करते हैं और तकनीक का सही तरीके से इस्तेमाल करना सीखते हैं, तो इससे उन्हें स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिलती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि ये डिजिटल उपकरण, जैसे कि आर्टिफिषियल इंटेलिजेंस ***(AI)*** का इस्तेमाल करने वाले प्रोग्राम, हर बच्चे के लिए सीखने को और भी मजेदार और खास बना सकते हैं।

डिजिटल कौशल और भाषा दक्षता

2023 में काओ एट. अल. द्वारा किए गए अध्ययन ''द डिजिटल एजः एक्जामिनिंग द रिलेषनषिप बिटवीन डिजिटल कॉम्पिटेंसी एंड लैंग्वेज लर्निंग आउटकम्स'' के अनुसार, डिजिटल योग्यता और भाषा प्रवीणता सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध हैं। अध्ययन से पता चलता है कि जो छात्र ऑनलाइन शोध, डिजिटल संचार और भाषा सीखने के सॉफ्टवेयर जैसे डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने में कुषल हैं, वे आमतौर पर भाषा कक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। संसाधनों की प्रचुरता, वास्तविक समय अभ्यास और इंटरैक्टिव सीखने की संभावनाओं के साथ, भाषा अधिग्रहण में सुधार के लिए डिजिटल साक्षरता बेहद महत्त्वपूर्ण है। बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करने के लिए, अध्ययन में कहा गया है कि शिक्षकों और छात्रों दोनों को कंप्यूटर और तकनीक का उपयोग करने में कुषल होना चाहिए। यह दर्शाता है कि भाषा सिखाने में तकनीक का उपयोग करना वास्तव में महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह सीखने को अधिक मजेदार और प्रभावी बनाता है। इससे बच्चों को भाषाओं में बेहतर होने और अपने सभी विषयों में अच्छा प्रदर्शन करने में मदद मिलती है।

ई-लर्निंग और डिजिटल साक्षरता

जी. ए. पुनियात्मजा (2024) द्वारा किए गए अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि, डिजिटल साक्षरता और ई–लर्निंग के बीच संबंध की जाँच की गई है। यह बताता है कि जिन छात्रों में डिजिटल साक्षरता अधिक होती है, वे ई–लर्निंग सिस्टम का उपयोग करने में अधिक कुषल होते हैं, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाता है। डिजिटल साक्षरता सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाती है और इसमें डिजिटल टूल का उपयोग करने, ऑनलाइन सामग्री का आकलन करने और समस्याओं को हल करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने जैसी क्षमताएँ शामिल होती हैं। हालाँकि, डिजिटल साक्षरता के निम्न स्तर वाले छात्रों के लिए ई–लर्निंग वातावरण में समायोजित होना मुष्किल हो सकता है और अक्सर डिजिटल संसाधनों का कुषलतापूर्वक उपयोग करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करना सीखना वास्तव में महत्त्वपूर्ण है ताकि हर कोई ऑनलाइन सीखने की अच्छी चीजों का आनंद ले सके। अध्ययन से पता चलता है कि हमें बच्चों को स्कूल में ये कंप्यूटर कौशल सिखाना चाहिए, ताकि वे ऑनलाइन शिक्षण उपकरणों का बेहतर उपयोग कर सकें और

अपनी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर सकें।

सुलभता और समानता

सलेमिन्क, स्ट्रिजकर और बोसवर्थ (2017) का लेख इस बात की जाँच करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आईसीटी तक असमान पहुँच से विकास कैसे प्रभावित होता है। प्रगति को बढ़ावा देने के आईसीटी के वादे के बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों में कई बाधाएं हैं जो इसके प्रभावी स्वीकृति और उपयोग में बाधा डालती हैं, जिनमें अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, वित्तीय बाधाएं और सामाजिक मुद्दे शामिल हैं। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि कैसे ये बाधाएं ग्रामीण निवासियों को आईसीटी द्वारा दी गई क्षमता का पूरा लाभ उठाने से रोकती हैं, जिससे डिजिटल विभाजन पैदा होता है। लेखक इस बात पर जोर देते हैं कि इन समस्याओं से निपटने के लिए विशिष्ट उपाय आवश्यक हैं, जैसे इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाना, डिजिटल साक्षरता में शिक्षा प्रदान करना और सहायक कानून लागू करना। ग्रामीण समुदायों को डिजिटल युग में शामिल होने और उचित विकास परिणाम प्राप्त करने के लिए, इन बाधाओं को दूर किया जाना चाहिए।

विकासशील देशों में प्रौद्योगिकी–संवर्धित शिक्षा (टीईएल) के अपने विश्लेषण में, गुलाटी (2008) इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे टीईएल व्यक्तिगत, लचीले और संवादात्मक शिक्षण अनुभव प्रदान करके शिक्षा को बेहतर बना सकता है। अध्ययन में पता लगाया गया है कि कैसे कंप्यूटर, स्मार्टफोन और इंटरनेट सहित प्रौद्योगिकी शिक्षा में बाधाओं को दूर करने में मदद कर सकती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। उनका कहना है कि तकनीक उन जगहों पर बच्चों की मदद कर सकती है जहाँ अच्छी शिक्षा प्राप्त करना मुष्किल है, खासकर ग्रामीण इलाकों में। लेकिन बड़ी समस्याएं भी हैं जो सीखने के लिए तकनीक का उपयोग करना मुष्किल बनाती हैं, जैसे पर्याप्त अच्छा इंटरनेट न होना, कई लोगों को नहीं पता कि डिजिटल टूल का उपयोग कैसे करें, और पर्याप्त पैसा नहीं होना।

यह इस बात पर जोर देता है कि निश्पक्ष पहुँच और उपयोगी षैक्षिक परिणामों की गारंटी देने के लिए टीईएल को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए इन मुद्दों को कैसे हल किया जाना चाहिए, खासकर कम संसाधनों वाले क्षेत्रों में।

कदम एट अल. (2024) के अनुसार, भारत में शिक्षक शिक्षा का भविष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 द्वारा आकार दिया गया है, जो शिक्षक की तैयारी में सुधार करने वाले नवाचारों और युक्तियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेखक इस बात पर बल देते हैं कि कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता और योग्यता–आधारित शिक्षक तैयारी पर एनईपी 2020 का जोर शिक्षकों को समकालीन कक्षाओं की माँगों को पूरा करने के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक है। नीति एक जीवंत शिक्षण वातावरण बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग और नवीन शिक्षण रणनीतियों के कार्यान्वयन को बढ़ावा देती है। इसके अलावा, इस बात पर जोर दिया गया है कि शिक्षक के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए निरंतर पेशेवर विकास की आवश्यकता होती है। शोध के अनुसार, एनईपी 2020 में पाठ्यक्रम सुधारों पर जोर देकर और डिजिटल संसाधनों का उपयोग करके शिक्षक शिक्षा को काफी बढ़ाने की क्षमता है।

डिजिटल साक्षरता में सुधार की रणनीतियाँ

बच्चों को तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करने में मदद करने के लिए, हमें कई अलग–अलग विचारों और तरीकों का इस्तेमाल करने की जरूरत है। चरनिया (2022) का कहना है कि हमें स्कूलों में डिजिटल कौशल सिखाना चाहिए। शिक्षकों के लिए भी यह सीखना बहुत जरूरी है कि तकनीक का इस्तेमाल कैसे किया जाता है, ताकि वे बच्चों को भी ये कौशल सीखने में मदद कर सकें। हमें यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि सभी बच्चों के पास इंटरनेट और तकनीकी उपकरण उपलब्ध हों, खासकर उन बच्चों के पास जिनके पास घर पर ये उपकरण नहीं हैं। छात्रों द्वारा तकनीक का इस्तेमाल करने के तरीके को बेहतर बनाने के लिए, चरनिया (2022) का सुझाव है कि हमें मजेदार प्रोजेक्ट और वास्तविक जीवन की गतिविधियों का इस्तेमाल करना चाहिए जिसमें तकनीक शामिल हो। इन विचारों का एक साथ इस्तेमाल करके, स्कूल बच्चों के लिए डिजिटल उपकरणों का अच्छी तरह से इस्तेमाल करना सीखने के लिए एक दोस्ताना और रोमाँचक जगह बना सकते हैं।

नीति संबंधित कदम

- **आधारभूत संरचना का निर्माण:** बेहतर इंटरनेट और कंप्यूटर प्रणालियों के निर्माण पर धन खर्च करना सुनिश्चित करें, विशेष रूप से उन स्थानों पर जहाँ लोगों की पहुँच आसान नहीं है, जैसे छोटे शहर और ऐसे क्षेत्र जिन्हें अधिक मदद की आवश्यकता है।
- **पाठ्यक्रम एकीकरण**: डिजिटल साक्षरता को शिक्षा के सभी स्तरों का मूलभूत हिस्सा बनाएं। यह सुनिश्चित करें कि कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करना सीखना प्रत्येक स्कूल का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रशिक्षण और सहायता

- **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों को आवश्यक डिजिटल क्षमताएँ प्रदान करने के लिए व्यावसायिक विकास के लिए विशेष कार्यक्रम बनाएँ। शिक्षकों को नए कौशल सीखने में मदद करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किये जाए, जो उन्हें प्रौद्योगिकी एवं नयी तकनीक को बेहतर ढंग से सीखने एवं उसका उपयोग करने में सहायक हो।
- **छात्र कार्यशालाएँ:** छात्रों की डिजिटल उपकरण योग्यता में सुधार करने के लिए, लगातार कार्यषालाएँ आयोजित करें। बच्चों को टेक्नोलॉजी का बेहतर उपयोग करने में मदद करने के लिए हमें नियमित अभ्यास सत्र आयोजित करने रहना चाहिए।

अनुसंधान और मूल्यांकन

- **सतत मूल्यांकन:** छात्रों के डिजिटल साक्षरता के स्तर का नियमित आधार पर आकलन करने के लिए रूपरेखा का उपयोग करें। समय के साथ यह जाँचते रहें कि विद्यार्थी कंप्यूटर

और इंटरनेट जैसी तकनीक का कितना अच्छा उपयोग करते हैं।

- **क्षेत्रीय अधययन:** विशिष्ट समस्याओं को हल करने और समाधान को अनुकूल बनाने के लिए, क्षेत्रीय शोध को प्रोत्साहित करें। ऐसे अध्ययनों में सहायता करें जो कुछ विशेष विषयों पर केन्द्रित हों, ताकि हम समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकें और उन समस्याओं के अनुरूप समाधान तैयार कर सकें।
- **पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप:** डिजिटल साक्षरता पहलों को वित्तपोषित करने और लागू करने के लिए सरकार और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग का लाभ उठाएँ। सरकार और व्यवसायों के साथ मिलकर काम करें और ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण करें जो लोगों को प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का उपयोग करना सिखाएं।

निष्कर्ष

भारतीय छात्रों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ाने के लिए डिजिटल साक्षरता महत्त्वपूर्ण है। बच्चों को स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने और बेहतर सोचने में मदद करने के लिए तकनीक का अच्छा ज्ञान होना बहुत जरूरी है। इससे उन्हें वे उपकरण और कौशल मिलते हैं जिनकी उन्हें अच्छी तरह से सीखने के लिए जरूरत होती है। जो प्रभावी शिक्षण के लिए उपकरण और कौशल प्रदान करती है। हालाँकि, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, उपकरणों तक सीमित पहुँच और अपर्याप्त शिक्षक प्रशिक्षण जैसी चुनौतियाँ इसकी क्षमता में बाधा डालती हैं, खासकर ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में। हालाँकि डिजिटल इंडिया अभियान जैसे कार्यक्रम मदद करने की कोषिष कर रहे हैं, फिर भी बड़ी खामियाँ हैं जिन्हें भरने की जरूरत है। इसे ठीक करने के लिए, हमें यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि तकनीक के बारे में सीखना स्कूली पाठों का हिस्सा हो, शिक्षकों को तकनीक का उपयोग करने के बारे में ज्यादा जानने में मदद करें और उन जगहों पर इंटरनेट और डिवाइस को बेहतर बनाएँ जहाँ ये नहीं हैं। सरकारी नेताओं, स्कूलों और व्यवसायों के लिए एक साथ काम करना भी जरूरी है। डिजिटल इंडिया अभियान जैसी पहलों ने प्रगति को आगे बढ़ाया है, लेकिन महत्त्वपूर्ण अंतराल अभी भी बने हुए हैं। इनसे निपटने के लिए पाठ्यक्रम में डिजिटल साक्षरता को एकीकृत करना, शिक्षकों के लिए पेशेवर विकास में निवेश करना और हाषिए के क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे में सुधार करना आवश्यक है। नीति निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग आवश्यक है। लक्षित हस्तक्षेप और न्यायसंगत रणनीतियों को अपनाकर, भारत छात्रों को आवश्यक डिजिटल कौशल से लैस कर सकता है, जिससे तेजी से प्रौद्योगिकी–संचालित दुनिया में एक समावेशी और कुषल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा मिल सकता है।

सन्दर्भ

1. Ravikumar, T., et al. (2024). "Relationship between Digital Learning, Digital Literacy and Academic Performance among Higher Education Students in Bangalore, India." *International Research Journal of Multidisciplinary Studies.* DOI: https://doi.org/

10.47857/irjms.2024.v05i03.01054

2) Sharma, R., & Singh, A. (2023). Digital literacy among female postgraduate students of Karnatak University, Dharwad: A study. *Library Philosophy and Practice*. Retrieved from https://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/2934/

3) Bansal, M., & Misra, P. K. (2022). "Digital Literacy of School Students in India: A Study." *Journal of Learning for Development, 12*(2), 103-114.

4) Mardiana, H. (2024). Perceived impact of lecturers' digital literacy skills in higher education institutions. *Library Philosophy and Practice*. Retrieved from https://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/2934/

5) Joseph, G. V., et al. (2024). Impact of digital literacy, use of AI tools, and peer collaboration on AI assisted learning: Perceptions of university students. *Journal of Educational Research and Development*. Retrieved from https://revistes.ub.edu/index.php/der/article/view/45401

6) Cao, X., et al. (2023). The digital edge: Examining the relationship between digital competency and language learning outcomes. *Frontiers in Psychology*. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2023.1187909.

7) Charania, A. (Ed.). (2022). *Integrated Approach to Technology in Education in India: Implementation and Impact*. Taylor & Francis.

8) Bansal, C., & Misra, P. K. (2021). Digital Literacy of School Students in India: A Study. *Learning Community*, 12(2), 101-114. DOI: 10.30954/2231-458X.02.2021.3.

9) Sunny, S. K., & Ramasamy, K. (2024). Digital literacy skills of students of Sacred Heart College, Chalakudy: An empirical study. *Journal of Applied Research in Higher Education*, Advance online publication. https://doi.org/10.1108/JARHE-06-2023-0257

10) Sharadamma, C. A., & Hemavathi, B. N. (2023). Assessment of Digital Literacy Skills of the POST Graduate Students of Bangalore North University, Kolar, Karnataka, India: A Study. *Assessment*, *13*, 1.

11) Gulati, S. (2008). Technology-enhanced learning in developing nations: A review. The International Review of Research in Open and Distributed Learning, 9(1).

12) Gulati, S. (2008). Technology-enhanced learning in developing nations: A review. *The International Review of Research in Open and Distributed Learning*, *9*(1).

13) Manna, M. S., Balusamy, B., Sood, K., Chilamkurti, N., & George, I. R. (Eds.). (2022). Edutech Enabled Teaching: Challenges and Opportunities.

14) Öngören, S. (2021). Investigation of prospective preschool teachers' digital literacy and teacher readiness levels. International Journal of Modern Education Studies, 5(1), 181-204

15) Kadam, M. S. R., Patel, M. D., Sahu, S. C., & Oommen, L. P. (2024). *NEP 2020 and the Future of Teacher Education: Innovations and Strategies*. Academic Guru Publishing House.

◆◆◆

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1857) की क्रांति में उत्तर प्रदेश की महिलाओं की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अधययन

विशाल कुमार[1] एवं रजत गंगवार[2]

[1]शोधार्थी, [2]सहा0 प्राध्यापक, इतिहास विभाग, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्याल, रामपुर (उ०प्र०)ए Email : vishalagnihotri934@gmail.com, rajatgangwar4289@gmail.com

प्रस्तावना –

प्राचीन समय से ही भारतीय महिलाओं का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।महिलाओं की उपयोगिता के बारे में भारतीय मनुस्मृति में कहा गया "जहाँ महिलाओं को सम्मान मिलता है वहाँ देवता का निवास होता है"। भारतीय महिलाओं ने पुरुषों के साथ मिलकर अपनी वीरता एवं पराक्रम का परिचय दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय महिलाओं की समाज में स्थिति बहुत दयनीय थी।इसका प्रमुख कारण था पुरुष प्रधान समाज का होना।समय के साथ साथ महिलाओं पर बंधन कसते चले गए और हमारे देश की नारी को उन बंधनों में बांध दिया गया जिससे वह अपनी आजादी के मायने को भूलती चली गई और पुरुषों पर निर्भर होती गई। इसके पश्चात औपनिवेषिक शासन काल तक आते आते हमारे देश की महिलाओं की स्थिति बहुत खराब होती चली गई और धीरे धीरे केवल महिला ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ गया।कालांतर में भारत देश में राजा राम मोहन राय ,ईश्वर चंद्र विद्यासागर तथा ज्योतिबा फुले आदि ने भारतीय इतिहास में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए एक लंबा संघर्ष किया।

भारत की भूमि संघर्षों की भूमि है जहाँ के सभी लोग अपने देश की रक्षा के लिए सबसे आगे रहते हैं।भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का एक विशेष योगदान रहा है,फिर चाहे वह एक छिटपुट क्रांति हो अथवा एक बड़े स्तर का आंदोलन महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में आगे आकर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत 1857 की महान क्रांति से हुई।इसी आंदोलन में भारतीय महिलाओं का प्रवेश हो गया जहाँ रानी लक्ष्मीबाई, भीमाबाई होल्कर, उदा देवी,बेगम हजरत महल आदि ने ब्रिटिशों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई लड़ी।1857 की क्रांति में एक वीर साहसी महिला रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी वीरता एवं पराक्रम का ऐसा परिचय दिया कि स्वयं अंग्रेज कमाँडर ह्यूरोज को कहना पड़ा कि विद्रोह के सभी क्रांतिवीरों में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थी। इस प्रकार भारत के इस राष्ट्रीय आंदोलन के संघर्ष में भारतीय महिलाओं का अत्यंत सराहनीय योगदान रहा।उन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

अधययन के उद्देश्य –

1– 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में उत्तर प्रदेश की महिलाओं के योगदान का वर्णन करना

2– उत्तर प्रदेश की महिला आंदोलनकारियों के बारे में जानकारी देना

3– उत्तर प्रदेश की महिलाओं के बलिदान और उनके कार्यों को जानना

1857 की क्रांति में उत्तर प्रदेश की भूमिका -

1857 की क्रांति में उत्तर प्रदेश के क्षेत्र का योगदान इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।इस आंदोलन में इस क्षेत्र का योगदान अहम रहा क्योंकि आंदोलन को प्रगति एवं दिशा देने वाला क्षेत्र यही था।सन 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में भारत में ब्रिटिश हुकूमत को समाप्त करने का प्रथम जन आंदोलन था। इस आंदोलन का प्रारंभ उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रांत) से हुआ था। यद्यपि आंदोलन के प्रयास अलग अलग क्षेत्रों में हुए और क्रांति असफल हुई किंतु इसके अलावा नवीन राष्ट्रीय भावनाएं व्यापक हुई ।1857 के क्रांतिकारियों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया । उनके असफल प्रयासों ने एक ओर उत्तर प्रदेश में अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों को नवीन स्वरूप प्रदान किया वहीं दूसरी ओर भारतवासियों के राष्ट्रीय जीवन में आत्म विश्वास व संघर्ष के विशिष्ट प्रयासों की श्रृंखलाओं का प्रारंभ हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न घटनाओं से उत्तर प्रदेश का घनिष्ठ संबंध है इसमें आंदोलनकारियों के त्याग व बलिदान भारत के इतिहास के अमिट पन्नो में दर्ज है। इस आंदोलन की घटनाओं का प्रभाव न सिर्फ उत्तर प्रदेश पर बल्कि आस पास के क्षेत्रों पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा।इस आंदोलन की शुरुआत हुई देखते ही देखते न सिर्फ उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों पर इसका प्रभाव पड़ा।इस आंदोलन ने भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना को जगाया।

महिला आंदोलनकारियों का विवरण एवं उनकी 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका -

रानी लक्ष्मीबाई– उत्तर प्रदेश की महिला क्रांतिकारियों का नाम आते ही सर्वप्रथम लक्ष्मीबाई का नाम आता है।इनका जन्म बनारस के भदैनी मुहल्ले में हुआ था। इनके बचपन का नाम मनु था।मनु को बचपन से ही घुड़सवारी का षौक था।इनका विवाह गंगाधर राव से हुआ था।इनके कोई संतान न थी इसीलिए इन्होंने एक पुत्र (दत्तक पुत्र) को गोद लिया था।डलहौजी ने हड़पने की नीति तहत झांसी के राज्य को कंपनी के राज्य में मिलाना चाहा जिसका विरोध रानी के द्वारा किया गया। " अपनी झांसी नहीं दूंगी"कहकर रानी लक्ष्मीबाई ने संघर्ष किया। अपने दत्तक पुत्र को पीठ पर बांध कर अंग्रेज जनरल ह्यूरोज की सेना का मुकाबला किया लेकिन सफलता नहीं मिली रानी वीरगति को प्राप्त हुई

अजीजन बाई – अजीजन बाई कानपुर की रहने वाली थी। इन्होंने नाना साहब और तात्या टोपे के साथ मिलकर एक मस्तानी मंडली का गठन कर सैनिक प्रशिक्षण दिया था, साथ ही पुरुष वेश धारण कर सैनिकों को सहायता पहुँचाती थी। अजीजन घुड़सवार बनकर तलवार चलाते हुए तेज वेग के साथ दुश्मन पर टूट पड़ना उसे भली भांति आता था। कहा जाता है कि जिन 125 अंग्रेजों की हत्या बीबीगढ़ में हुई थी उनमें अजीजन बाई की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

झलकारी बाई – रानी लक्ष्मीबाई की हमशक्ल झलकारी बाई का जन्म झांसी के निकट भोजला

गाँव में हुआ था। 1857 की क्रांति में झांसी में विद्रोह के समय झलकारी बाई ने रानी का साथ दिया और किले की रक्षा का प्रण किया।इन्हें 1858 में फांसी दे दी गई।

सुनंदा महारानी तपस्वी– सुनंदा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की भतीजी थी। इनके पिता का नाम नारायण राव था जो एक पेशवा सरदार थे।रानी लक्ष्मीबाई की जनक्रांति की पृष्ठभूमि तैयार करने में सुनंदा की प्रमुख भूमिका थी। वे बचपन में ही विधवा हो गई थी।उन्होंने अपना वेश बदलकर एक तपस्वी का वेश धारण कर सीतापुर जनपद के नैमिश में रहने लगी थी।1857 की क्रांति में सुनंदा पुनः एक बार सक्रिय हो गई और उन्होंने इस क्रांति में अपनी वीरता का परिचय दिया।उन्होंने एक सैनिक टोली बनाकर अंग्रेजों से संघर्ष किया,इनकी सैनिक टोली छापामार युद्ध में निपुण थी जिससे अंग्रेज बहुत भयभीत रहते थे। कालांतर में इनका सैन्य संगठन सुचारु रूप से नहीं चल पाया जिससे कि इन्हें बाद में नाना साहब के साथ नेपाल की तराई में छिप कर रहना पड़ा।बाद में ये कलकत्ता चली आई यहाँ इन्होंने महाकाली पाठशाला खोलकर क्रांति की चेतना का जनमानस में प्रचार प्रसार किया। इन्होने तिलक और विवेकानंद से मिलकर भारत की आजादी के आंदोलन को शुरू करने की सलाह दी। 1905 के बंगाल विभाजन के समय में स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय रही इनकी मृत्यु 1907 में हो गई।

मालती बाई लोधी– इनका जन्म बुंदेलखंड क्षेत्र में 1840 ई में बेतवा नदी के तट पर स्थित एक गाँव में एक कृषक परिवार में हुआ था।1857 की क्रांति में मालती देवी ने भी अनेक देश प्रेमियों की तरह सैन्य प्रशिक्षण लिया।मालती का गाँव रानी लक्ष्मीबाई के राज्य में आता था।रानी ने मालती की लगन देखकर इनके लिए सैन्य प्रशिक्षण का साजो सामान भेजा था।बाद में मालती ने अपने सैन्य कुषलता में वृद्धि करके रानी की सेना में शामिल हो गई।झांसी पर अंग्रेजों के आक्रमण के समय रानी के साथ मालती थी।रानी को बचाने के लिए मालती ने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

मालती बाई लोधी के बारे में कवि खेमसिंह ने लिखा है
"मातृभूमि के लिए मालती ने अपने अनुजों को छोड़ा,
छोड़ा अपने पूज्य पिता को परिणय बंधन से मुख मोड़ा
याद रहेगी झांसी रानी संग मालती याद रहेगी
भूल खेमसिंह कैसे होगा तू बलिदानी याद रहेगी"

कुमारी मैना – कुमारी मैना पेशवा नाना साहब की दत्तक पुत्री थी।1857 की क्रांति में आंदोलन करी महिलाओं में कुमारी मैना की कहानी अत्यंत पीड़ादायक है।जब नाना साहब के सैनिक कानपुर में अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों को गिरफ्तार कर रहे थे,जो एक निंदनीय कार्य था तब नाना साहब ने उन्हें सही सलामत उनके परिजनों तक पहुँचाने का कार्य कुमारी मैना को सौंपा था।उस समय मैना मात्र 15 वर्ष की थी।जब मैना बच्चों और स्त्रियों को वापस पहुँचाने का कार्य कर रही थी कि अचानक अंग्रेजी ने पुनः हमला कर दिया जिससे बड़ी संख्या में बच्चे एवं महिलाएं मृत्यु को प्राप्त हो गई।मैना को अंग्रेजी द्वारा बंदी बना लिया गया एवं उनसे नाना साहब के बारे में जानकारी लेने का प्रयास किया गया जिसके

लिए,उन्हें बहुत यातनाएं दी गई, लेकिन मैना ने कुछ नहीं बताया। अंत में अंग्रेजों ने मैना को पेड़ से बांधकर जिंदा जला दिया।

रानी ईश्वर कुमारी – ईश्वर कुमारी उत्तर प्रदेश के गोंडा जनपद से थी।1857 की क्रांति में रानी ने स्वयं सैनिकों का नेतृत्व किया।लखनऊ की बेगम हजरत महल जब नेपाल जा रही थी तब ईश्वर कुमारी ने बेगम हजरत महल को षरण दी एवं हजरत महल को नेपाल की सीमा तक पहुँचाया।गोंडा जिले में आज भी ईश्वर कुमारी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है।

ऊदा देवी – यह वीरांगना लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की मुखिया थी।1857 की क्रांति में जब कैंपबेल के नेतृत्व में सेना कानपुर लखनऊ आ रही थी तब उसको रोकने का कार्य ऊदा देवी की टुकड़ी को करना था। उदा देवी ने पुरुष वेश में पीपल के पेड़ पर चढ़कर 32 अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया था।कैंपबेल भी उसकी वीरता से आश्चर्यचकित हो गया था।उसने अपना हेट उतारकर ऊदा देवी का सम्मान किया था।

मंदार – मंदार नामक एक महिला रानी लक्ष्मीबाई की निजी अंगरक्षक थी और उसने 18 जून 1857 को ग्वालियर के कोटा की सराय युद्ध में रानी के साथ अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे।

भारतीय महिला आंदोलनकारियों के इतने नामोल्लेख करने के बाद यह नहीं कहा जा सकता कि 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में उत्तर प्रदेश की केवल इन्हीं महिलाओं ने इस आंदोलन में सहयोग दिया,यह सूची बहुत लंबी है।इन महिलाओं ने दूसरे रूप में भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई।अपने पतियों के सहयोग,पुत्रों को राष्ट्रीय आंदोलन के लिए प्रेरित करना,पत्र लेखन का कार्य,सूचना का आदान प्रदान आदि बहुत से ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य किए जिनके बिना आजादी का संघर्ष चल ही नहीं सकता था।

निष्कर्ष –

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महिलाओं ने इस क्रांति में न सिर्फ भाग लिया बल्कि अपने पराक्रम एवं वीरता से अंग्रेजी सरकार को आश्चर्यचकित कर दिया।उन्होंने अपनी वीरता का प्रदर्शन कर इस बात को झुठला दिया कि "महिलाएं सिर्फ चार दिवारी के अंदर रह सकती है"।भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं ने अपनी देशभक्ति, वीरता, साहस की भावना के साथ भारत देश के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया।भारतीय आंदोलनकारी महिलाओं ने न सिर्फ 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में बल्कि उसके बाद के सभी प्रमुख आंदोलनों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं ने देश प्रेम की भावना का प्रदर्शन करते हुए, भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रत्येक तरीके को अपनाया। महिलाओं के नेतृत्व, बलिदान तथा सहयोग ने भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन को नया आकार दिया।भारतीय आंदोलनकारी महिलाओं ने भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों प्रकार से अपना सहयोग प्रदान किया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि उनके इन महान संघर्षों का परिणाम है कि भारत को 15

अगस्त 1947 को आजादी मिली। अंत में कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का योगदान अतुलनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- चंद्र तारा, History of freedom movement in India Vol IV
- इस्लाम शमशुल,1857 की हैरत अँगेज दास्तानें
- शिशिर कमेंदु,1857 की राजक्रांति विचार एवं विश्लेषण
- नागेरी एस. एल. कांता,1857 की क्रांति एवं उसके क्रांतिकारी
- पी. सी. जोशी, Rebellion 1857
- आर.सी.मजूमदार The Sepoy Mutiny and Revolt 1857

◆◆◆

बुंदेलखण्ड के प्रमुख पर्यटक स्थल : हमारी धारोहर

आमिर खाँन
एम0एस0सी0 (वनस्पति विज्ञान) एवं एम0ए0 (उर्दू), पूर्व छात्र, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, पताः– बाजोड़ी टोला, खुसरू बाग रोड, रामपुर (उ0प्र0) – 244901
ई–मेल amirkhan.grpgcr@gmail.com

सारांशः-

बुंदेलखण्ड एक भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्र है जिसका विभाजन दो प्रदेशों जिनमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सम्मिलित है। झांसी बुंदेलखण्ड का सबसे बड़ा शहर है। 59000 वर्ग किलोमीटर में फैला बुंदेलखण्ड जिनमें उत्तर प्रदेश के 07 ज़िले चित्रकूट, बांदा, झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, और ललितपुर तथा मध्य प्रदेश के 06 ज़िलें छतरपुर, टीकमगढ़, दमोह, सागर, दतिया और पन्ना में फैला हुआ है। बुंदेलखण्ड मध्य प्रदेश राज्य की सीमा के साथ इस क्षेत्र के पश्चिती भाग में और बेतवा नदी के ठीक पश्चिम में स्थित है। जिला, जो एक दीवार से घिरा हुआ है। बुंदेलखण्ड राजनैतिक इतिहास में 10वीं शताब्दी के बाद ही अपनी संज्ञा को सार्थक करता है। चंदेली शासन में यह क्षेत्र ''जुझौती'' नाम से जाना जाता था किन्तु जब पंचम सिंह बुंदेल के वंशजों ने पष्थ्वीराज के खंगार सामन्त को कुण्डार में परास्त किया और इस प्रदेश पर अधिकार जमा लिया जिस कारण इसका नाम ''बुंदेलखण्ड'' पड़ा। बुंदेलखण्ड के विभिन्न खण्ड एक लम्बे समय तक विभिन्न शासकों के बंधक में रहे इसलिए विभिन्न भागों के बुंदेलखण्डियों में एकता के बीच किंचित विधिता का आभास मिलता है, फिर भी बुंदेलखण्ड के विभिन्न भाग मिला कर अपनी प्राकृतिक रचना, जलवायु और भाषा तथा साहित्य रीति–नीति और लोक–व्यवहार में ऐसा खण्ड है, जिसमें एक विषेष अपनापन है। बुंदेलखण्ड में अनेक पर्यटक स्थल पूरे देश में प्रसिद्ध हैं। जहाँ देशभर से लोग अधिक संख्या में देखने आते हैं। जिनमें राम सैया, गणेश बाग, कामतानाथ, धारकुंडी, भूरागढ़ किला, जामा मस्जिद, कालिंजर का किला, नवाब टैंक, सेंट जॉर्ज चर्च, झांसी म्यूजियम, रानी लक्ष्मी बाई पार्क, परीक्षा बांध, झांसी हर्बल गार्डन, रानी महल, रामपुरा किला, लंका मीनार, चौरासी गुंबद, शारदा मन्दिर, शाला घाट, सूर्य मन्दिर, मैहर टैंपल, गोखर पर्वत, महावीर स्वामी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, गुलगंज किला, दाऊजी की हवेली, राहलगढ़ फॉल, सागर झील, वीर सिंह महल, पांडव गुफाएँ आदि प्रसिद्ध है।

बीज शब्द :- बुंदेलखण्ड, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जुझौती, सांस्कृतिक, चंदेली शासन, पर्यटक स्थल, लोक–व्यवहार, साहित्य रीति–नीति, झांसी म्यूजियम, सेंट जॉर्ज चर्च, लंका मीनार आदि।

इस शोध पत्र का उददेश्य सांस्कृतिक पुनर्जागरण और धरोहर सरंक्षण है। जिसके अन्तर्गत बुंदेलखण्ड क्षेत्र में स्थित प्रमुख पर्यटक स्थलों के महत्त्व को प्रदर्शित किया गया है। इस लेख के अन्तर्गत बुंदेलखण्ड का इतिहास, बुंदेलखण्ड का विस्तार, पर्यटन के क्षेत्र में बुंदेलखण्ड का स्थान तथा बुंदेलखण्ड में स्थित पर्यटक स्थल आदि को सम्मिलित किया गया है और अंत में इस लेख का मुख्य निष्कर्ष भी

दर्शाया गया है।

बुंदेलखण्ड का इतिहासः-

14वीं शताब्दी के आस–पास, बुंदेलों ने चंदेलो की जगह ले ली थी, इसके बाद इस क्षेत्र को उनके नाम पर बुंदेलखण्ड कहा जाने लगा। बुंदेला शब्द की उत्पत्ति विंध्यवासिनी देवी से जुड़ी हुयी है, माना जाता है कि विंध्यवासिनी देवी का वास विंध्य पर्वतमाला की उत्तरी शाखा बिंदाचल पर था। भारत के मानचित्र में विशिष्ट पहचान लिए हुए बुंदेलखण्ड जहाँ आल्हा उदल, रानी लक्ष्मीबाई की वीर गाथाएँ आज भी गूंजती हैं। बुंदेलखण्ड मध्य भारत का एक प्रचीन क्षेत्र है। जिसका विस्तार उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में फैला हुआ है। उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भू–भाग को व मध्यप्रदेश के उत्तरी भू–भाग को मिला कर बुंदेलखण्ड की रचना हुई है। बुंदेलखण्ड विधेलखण्ड का अपभ्रंश है। विध्येलखण्ड, विध्यभूमि विध्यांचल पर्वत अंचलीय क्षेत्र को कहा जाता था। अनेक शासकों और वंशों के शासन का इतिहास होने के बावजूद भी बुंदेलखण्ड की अपनी समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पहचान को नकारा नहीं जा सकता। समय–समय पर अनेक शासकों ने इस भू–भाग पर राज्य स्थापित कर अपनी छाप छोड़ी है, कभी गुप्त साम्राज्य तो कभी वाकाटक, नागवंशी, प्रतिहार, चन्देल, खंगार, बुन्देला आदि। इस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं के उत्थान पतन से ओतप्रोत बुंदेलखण्ड अपनी आलोकित छटा लिये आज भी मौजूद है। यहाँ पर चन्देलों और बुंदेलों की पीढ़ियों ने शासन करके इसको समृद्धि, सम्पत्ति और गरिमा प्रदान की है।

बुंदेलखण्ड का विस्तारः-

भारत देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के दक्षिण में 7 जनपद और मध्य प्रदेश के उत्तर में 06 जनपद में लगभग 1.5 लाख वर्ग किमी0 में फैले क्षेत्र को बुंदेलखण्ड नाम से जाना जाता है। जहाँ की वर्तमान आबादी लगभग 3 करोड़ से अधिक है। इस क्षेत्र में प्रायः पठारी भूमि है। शौर्य और श्रृंगार की धरती बुंदेलखण्ड की कला संस्कृति सबसे अनूठी है। यहाँ बोली जाने वाली मधुर बोली बुन्देली है। बुंदेलखण्ड में उत्तर प्रदेश के चित्रकूट, बांदा, झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा और ललितपुर आदि ज़िले सम्मिलित हैं तथा मध्यप्रदेश के छतरपुर, टीकमगढ़, दमोह, सागर, दतिआ और पन्ना आदि ज़िले सम्मिलित हैं। बुंदेलखण्ड का विस्तार लगभग 59,000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।

पर्यटन के क्षेत्र में बुंदेलखण्ड का स्थानः-

पर्यटन की दषष्टि से बुंदेलखण्ड विश्व भर में प्रसिद्ध है जो यात्रियों को आकर्षित करता है। प्राचीन स्मारकों और संग्रहालयों से लेकर आसपास के खूबसूरत पर्यटक स्थलों तक बुंदेलखण्ड आदर्श पर्यटन स्थल माना जाता है। बुंदेलखण्ड क्षेत्र के तीन पर्यटन स्थल खजुराहो, पन्ना, ओरछा आदि इस समय सैलानियों से भरे हुए हैं। खजुराहों में घूमने के लिए कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल हैं। खजुराहों शहर भारत के मध्य प्रदेश में स्थित बहुत ही खूबसूरत पर्यटन स्थल है। खजुराहों अपने मंदिरों की बाहरी दीवारों पर बनी कामुक मूर्तियों और कामसूत्र से प्रेरित नक्काशी के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध

है। इसी तरह पन्ना के टाइगर रिज़र्व में जंगल के राजा सहित वन्य जीवों को देखने के लिए सुबह से लेकर शाम तक सैलानी सफ़ारी का आनंद लेते हुए दिखाई देते हैं। प्रत्येक दिन यहाँ जंगल की खूबसूरती देखने के लिए हज़ारों की संख्या में सैलानियों की भीड़ उमड़ती है। इसी तरह यहाँ और भी अनेक प्रमुख स्थल हैं जिन्हें देखने के लिए देश के ही नहीं बल्कि विदेशों से भी सैलानी आते रहते हैं।

बुंदेलखण्ड में स्थित प्रमुख पर्यटक स्थलः-

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि बुंदेलखण्ड में उत्तर प्रदेश के साथ–साथ मध्य प्रदेश के भी जनपद सम्मिलित है। उसी तरह पर्यटक स्थल भी दोनों प्रदेशों के जनपदों में स्थित हैं। यह पर्यटक स्थल सौन्दर्यता के साथ–साथ यहाँ की संस्कृति को भी दर्शाता है। यहाँ के पर्यटक स्थलों में बहुत ही प्राचीन मंदिर हैं जिसकी दीवारों पर वास्तुकला तथा अन्य प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया गया है। जिससे इनकी सुंदरता में चार चांद लग जाते हैं। बुंदेलखण्ड में अनेक पर्यटन स्थल स्थित हैं जिनमें से कुछ प्रमुख पर्यटन स्थलों का वर्णन किया जा रहा हैः–

बृहस्पति कुंडः-

हिंदू पुराणों के अनुसार कहा जाता है कि यहाँ पर देव गुरू बष्हस्पति ने अपना एक आश्रम स्थापित किया था। बष्हस्पति कुंड को भारत का नियाग्रा फॉल्स भी कहा जाता है। यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यह पन्ना ज़िले में स्थित है। जो पन्ना से 37 किलोमीटर दूर चित्रकूट से 75 किलोमीटर और बांदा से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बष्हस्पति कुंड की ऊंचाई लगभग 400 फीट है। बष्हस्पति कुंड के तल तक जाने के लिए रास्ता बहुत ही संकीर्ण और पहाड़ी है। जो अपने आप में एक साहसिक कार्य है। बष्हस्पति कुंड बाघिन नदी पर स्थित है। जिसका उदग्म पन्ना की पहाड़ियों से होता है। इस झरने की विषालता इतनी अधिक है कि झरने से पानी गिरने की ध्वनि बहुत दूर तक सुनाई देती है। इसकी सौन्दर्यता का आनंद लेने लोग बहुत दूर–दराज़ से आते हैं।

शबरी जलप्रपातः-

शबरी जलप्रपात चित्रकूट में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड में सबसे सुंदर स्थलों मे से एक है। यहाँ घनों जंगलों मे से होता हुआ पानी समाँतर धाराओं में 40 फीट की ऊंचाई से गिरता है। शबरी जलप्रपात, बृहस्पति कुंड से 53 किलोमीटर दूर है। यह झरना चित्रकूट से 47 किलोमीटर, बांदा से 108 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जो चित्रकूट जिले के अंतर्गत डुडैला गाँव में स्थित है। शबरी जलप्रपात घूमने का सबसे अच्छा समय वर्षाकाल का होता है। जिससे यहाँ अधिक पानी का बहाव देखने को मिलता है।

श्री परमहंस धाकुंडी आश्रमः-

यह स्थान मानिकपुर सतना के पास एक सुंदर स्थल है। यहाँ पर प्राकृतिक आध्यात्मिकता का अनुभव प्राप्त होता है। इस आश्रम में एक छोटा जलाशय है। कहा जाता है कि इसी जलाशय में यक्ष

और युधिष्ठिर के बीच संवाद हुआ था। जिसमें युधिष्ठिर ने यक्ष के सारे प्रश्नों का उत्तर द्रेकर अपने भाईयों को जीवित करवाया था। यह स्थल पर्यटकों को अपनी सुंदरता और शांति से अपनी ओर आकर्षित करता है।

रहिला सागर सूर्य मंदिरः-

यह बुंदेलखण्ड के महोबा जिले में स्थित है। यह भारतीय संस्कृति विरासत का एक उत्तम उदाहरण है। यह महोबा से 3 किलोमीटर दक्षिण में रहिलिया गाँव के पास स्थित है। इस मंदिर में चंदेल राजा सूर्य की उपासना किया करते थे। इस मंदिर का निर्माण पांचवें चंदेल राजा रहीला देववर्मन ने करवाया था। जिस कारण इस मंदिर का नाम रहिला मंदिर पड़ा। रहिला सागर सूर्य मंदिर की वास्तुकला प्रतिहार शैली से बनी हुई है। जिसमें ग्रेनाइट के पत्थर का प्रयोग किया गया है, इन पत्थरों का उपयोग खजुराहों के मंदिर में भी व्यापक रूप में देखने को मिलता है। इस मंदिर के निकट हवाई अड्डा खजुराहो, नई दिल्ली और लखनऊ है। खजुराहों एयरपोर्ट की मंदिर से दूरी 70 किलोमीटर है। यहाँ का निकटतम रेलवे स्टेशन महोबा है। रहिला सागर सूर्य मंदिर के भीतर एक झील, सूर्य मंदिर और एक सुंदर पार्क स्थित है। कहा जाता है कि इस कुंड का पानी कभी नहीं सूखता।

कालिंजर का किलाः-

कालिंजर का किला बुंदेलखण्ड के बांदा ज़िलें में स्थित है। यह खजुराहों से 97 किलोमीटर दूर विंध्य पर्वत पर स्थित है। इस दुर्ग में कई प्राचीन मंदिर हैं, जिनमें से कुछ गुप्त काल के हैं। यहाँ एक शिव मंदिर है जिसके बारे में कहा जाता है कि सागर मंथन से निकलने वाले विष को ग्रहण करने के बाद भगवान शंकर ने यहीं पर तपस्या की थी। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ मेला लगता है। आज़ादी के बाद से यह एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर के रूप में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन है। कालिंजर किले की ऊंचाई 60 मीटर है। यह विंध्याचल पर्वतमाला के अन्य पर्वत जैसे मईफा पर्वत, फतेहगंज पर्वत, पाथर कछार पर्वत, रसिन पर्वत, बृहस्पति कुंड पर्वत के बीच बना हुआ है। इस किले में 20 हज़ार वर्ष पुरानी शंख लिपि है। यह मध्यकाल का सर्वोत्तम दुर्ग माना जाता है। इस दुर्ग में गुप्त शैली, प्रतिहार शैली, पंचायतन नागर शैली का आदि का उपयोग किया गया है। किले के बीच में कई मंदिर बने हुये हैं। इस दुर्ग में प्रवेश करने हेतु 7 प्रवेश द्वार हैं जो अलग–अलग भवन निर्माण शैलियों से अंलकृत हैं। इस किले में बुड्ढा बुडढी नाम के दो ताल हैं। यह किला खजुराहों से 105 किलोमीटर, चित्रकूट से 78 किलोमीटर, बांदा से 62 किलोमीटर और प्रयागराज से 205 किलोमीटर दूर स्थित है।

पांडव फॉल पन्नाः-

यह पन्ना से 14 किलोमीटर और खजुराहों से 34 किलोमीटर की दूरी पर पन्ना जिले में स्थित है। इस जलप्रपात का निर्माण केन नदी की सहायक नदी के द्वारा हुआ है। इसकी ऊंचाई 30 मीटर है, जो एक दिल के आकार के कुंड में गिरता है। इसके आसपास हरे–भरे जंगल स्थित है। यहाँ पर पांडव

कालीन कुछ गुफाएँ भी स्थित हैं। जिनके बारे में कहा जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के दौरान यहाँ निवास किया था।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यानः-

यह बुंदेलखण्ड के पन्ना और छतरपुर जिलों के बीच स्थित है। वर्ष 1981 में इसे वन्य जीव अभ्यारण घोशित कर दिया गया था। जिसका क्षेत्रफल 542 वर्ग किलोमीटर है, वर्ष 2011 में इसको बायोस्फीयर रिज़र्व के लिए नामित किया गया था। इस उधान में केन नदी मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। इस उधान की प्रमुख वनस्पतियां बांस, सागौन, ब्रोसवेलिया आदि हैं। इस अभ्यारण्य में कई दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों को संरक्षित किया गया है। यहा पाए जाने जीवों में मुख्य बाघ, तेंदुआ, चीतल, चिंकारा, नीलगाय, सांभर और भालू हैं। यहाँ लगभग 200 से अधिक पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती हैं। जिनमें लाल सिर वाला गिद्ध, हनी बुजाई और भारतीय गिद्ध मुख्य है। यह प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत संरक्षित क्षेत्र में आता है।

ओरछा वन्यजीव अभयारण्य

ओरछा वन्य जीव अभयारण्य बुंदेलखण्ड के टीकमगढ़ जिलें में स्थित है। जिसका क्षेत्रफल 45 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ पर मुख्य रूप से चीतल और नीलगाय का संरक्षण किया जाता है। ओरछा वन्यजीव अभयारण्य के पास में ही ओरछा पक्षी विहार है। जो बेतवा और जामनी नदी के बीच में स्थित एक टापू पर बसा हुआ है। यहाँ दुर्लभ किस्म के पौधों और पक्षियों का घर है। इसकी स्थापना 1994 में की गई थी। इसकी दूरी ओरछा के किले से 2 किलोमीटर है। यहाँ पर कुछ प्रजातियों के बाघ, लंगूर, तेंदुआ, भालू, सियार, बंदर तथा पक्षियों में कठफोड़वा, किंगफिशर, हंस, जंगली बटेर आदि हैं। यहाँ आने का सबसे अच्छा समय नवंबर से जून के मध्य है। यहाँ पर रिवर राफिटंग, फिशिंग, ट्रैकिंग, बोटिंग, कैंपिंग, जंगल ट्रैकिंग और हाइकिंग जैसे खेलों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

ओरछा का किलाः-

ओरछा के किले का निर्माण 16वीं शताब्दी में राजा रूद्र प्रताप सिंह ने करवाया था। यह मध्य प्रदेश बुंदेलखण्ड में स्थित है। यह बेतवा और जामनी नादियों के मध्य स्थित है। इस शहर में आने के लिए ग्रेनाइट के पत्थर का पुल बनाया गया है। यह झांसी से 15 किलोमीटर की दूरी पर है। इस किले के अंदर सुंदर भवन और मंदिर भी हैं। इस किले में राज महल राजा और रानियों के निवास के लिए तथा शीश महल राजा के लिए एक शाही आवास है। जिसे अब होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। इसके अलावा राजा वीर देव द्वारा बनवाया गया जहाँगीर महल जो मुगल सम्राट जहाँगीर के सम्मान में बनवाया गया था तथा फूल बाग यहाँ के दर्शनीय स्थल हैं।

चंदेरी किलाः-

चंदेरी किला मध्य प्रदेश के अशोकनगर जिले में स्थित शहर में एक ऐतिहासिक स्मारक है।

किला 15वीं शताब्दी में बुंदेल राजपूतों द्वारा बनवाया गया था। यह एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है जो शहर के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। किले के परिसर में कई प्रवेश द्वार, महल और मंदिर शामिल हैं जो राजपूतों की स्थापत्य शैली को दर्शाते हैं। यह किला एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है। आंगुतक किले के परिसर के भीतर विभिन्न संरचनाओं का पता लगा सकते हैं और क्षेत्र के समृद्ध इतिहास और संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

दतिया पैलेसः-

दतिया शहर में स्थित, दतिया पैलेस एक ऐतिहासिक स्मारक है जिसे 17वीं शताब्दी में बनाया गया था। यह मुगल और राजपूत वास्तुकला के अपने अद्वितीय मिश्रण के लिए माना जाता है। महल परिसर में जहाँगीर महल सहित कई इमारते हैं, जो मुख्य आकर्षणों में से एक है। महल में कई कहानियां है और वास्तुकला हिंदू और इस्लामी शैलियों का एक सुंदर संयोजन है। महल जटिल नक्काशी, सुंदर भित्तिचित्रों और सुंदर बगीचों से सुशोभित है। महल में कई पेंटिंग और कलाकृतियों भी हैं जो क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति की झलक देती है। देश–विदेश से हज़ारों की संख्या में सैलानी यहाँ आकर अत्यधिक आनंद का अनुभव करते हैं।

झांसी रानी महलः-

रानी महल झांसी शहर में स्थित एक खूबसूरत महल है। यह 18वीं शताब्दी में बनवाया गया था और यह अपनी जटिल नक्काशी और सुंदर भित्तिचित्रों के लिए जाना जाता है। महल मूल रूप से झांसी की रानी के लिए बनवाया गया था और अब यह एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है। आंगुतक महल के चारों ओर सुंदर बगीचे ओर फव्वारे भी देखने को मिलते हैं। इसे देखने के लिए यहाँ भी अधिक संख्या में लोग आते रहते हैं।

झांसी का किलाः-

झांसी का किला एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है जिसे 17वीं शताब्दी में बनाया गया था। यह एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है जिसके आसपास के ग्रामीण इलाकों का मनोरम दृश्य दर्शाता है। किले के परिसर में रानी महल और शिव मंदिर सहित कई इमारते हैं। इस किले ने सन् 1857 ई0 में भारतीय विद्रोह में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और आंगतुक रानी महल को देख सकते हैं, जहाँ विद्रोह के दौरान रानी लक्ष्मीबाई निवास करती थीं। किले में कई तोपें, और अन्य हथियार भी मौजूद हैं जिनका प्रयोग विद्रोह के दौरान किया गया था। इस किले को देखने लोग दूर–दूर से आते हैं।

केन घड़ियाल अभयारण्यः-

केन घड़ियाल अभयारण्य एक वन्यजीव अभ्यारण्य है जो केन नदी के तट पर स्थित है। यह जानवरों की कई प्रजातियों का घर है, जिनमें घड़ियाल, मगरमच्छ और कछुए शामिल हैं। अभयारण्य

अपने पक्षी जीवन के लिए भी जाना जाता है और पक्षियों को देखने के लिए एक लोकप्रिय स्थान है। अभयारण्य का पता लगाने और वन्यजीवों को करीब से देखने के लिए आंगतुक केन नदी पर नाव की सवारी कर सकते हैं। अभयारण्य में कई वॉचटावर भी हैं जहाँ से आंगतुक वन्य जीव को देख सकते हैं।

गणेश बाग:-

चित्रकूट ज़िला मुख्यालय से 3 किलोमीटर दूर दक्षिण दिशा में कर्वी के देवांगना रोड पर गणेश बाग स्थित है। जिसे स्थानीय लोग 'गणेश बाग' के नाम से जानते हैं। मराठो ने इसे खजुराहों मंदिर की शैली में बनाने की कोशिश की थी। जिसकी वजह से इसे 'मिनी खजुराहो' के नाम से भी जाना जाता है। इस बाग का प्रयोग गर्मियों के मौसम में खेलने के लिए और पारिवारिक मनोरंजन के लिए किया जाता था। गणेश बाग चित्रकूट में सबसे अधिक पर्यटक आकर्षणों में से एक है। यह जगह सौंदर्य और ऐतिहासिक दोनों ही दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस जगह के मुख्य आकर्षण मंदिर, महल और बावड़ी है।

भूरागढ़ का किला:-

केन नदी के किनारे 17वीं शताब्दी में राजा गुमान सिंह द्वारा भूरे पत्थरों से बनाए गए भूरगढ़ किले के खंडहर है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह स्थान महत्त्वपूर्ण था। इस स्थान पर एक मेला आयोजित किया जाता है, जिसे 'नटबली का मेला' कहा जाता है। इस किले से सूर्यास्त देखना बहुत ही सुंदर प्रतीत होता है। भूरागढ़ किला बहादुरी का ही नहीं बल्कि मौहब्बत का प्रतीक भी माना जाता है। यहाँ विभिन्न स्थानों से लोग आकर आनंद का अनुभव करते हैं।

खजुराहो के मंदिर:-

विश्व में पर्यटन की दर्ष्टि से खजुराहो का अपना एक अलग स्थान है। खजुराहों के मंदिर विश्वभर में प्रसिद्ध हैं जो अपनी प्राचीनता और कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है। जो सुंदर, जटिल, विस्मय और आश्चर्य से भरपूर हैं। यहाँ की खूबसूरती देखने के लिए लोग विदेश से आते हैं। चंदेल वंश के बनवाए मंदिरों को तीन समूहों में वगीकृत किया जा सकता है पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी। खजुराहों में घूमने की जगह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक शहर खजुराहों भारत के मध्य प्रदेश में स्थित बहुत ही खूबसूरत पर्यटन स्थल है। खजुराहों अपने मंदिरों की बाहरी दीवारों में बनी कामुक मूर्ति और कामसूत्र से प्रेरित नक्काशी के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। खजुराहों मंदिर भारतीय कला के सबसे महत्त्वपूर्ण नमूनों में से एक है। खजुराहों के मंदिर के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र मूर्तियां रही हैं। इन मंदिरों की दीवारों पर उस समय की कुछ सर्वश्रेष्ठ मूर्तियां हैं, जिसके कारण खजुराहों सर्वेष्ठ कलात्मक विषेशताओं का केंद्र बन गया है। यहाँ देश विदेश से लोग प्राचीन विरासत, संस्कृति और वास्तुकला की खूबसूरती देखने के लिए आते हैं।

चौरासी गुंबद:-

बुंदेलखण्ड के कालपी में एक बादशाह लोदी शाह का मज़ार जिसे ''चौरासी गुंबद'' के नाम से

जाना जाता है। कालपी जालौन जिले में स्थित जो कानपुर से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 84 गुंबदों से बना एक खूबसूरत निर्माण जो लगभग 15 या 16वीं शताब्दी का है। इसका निर्माण कंकड़ तथा चूने से निर्मित खंडों से किया गया है। यह संपूर्ण भवन शतरंज के बोर्ड की भांति स्तंभों के माध्यम से विभाजित है। इसके केंद्र के वर्गाकार भाग के ऊपर विषाल गुंबद निर्मित है, जो छत से लगभग 21 मीटर ऊंचा है। संभवत उधान मकबरा की श्रेणी का प्राचीनतम उदाहरण है यह मकबरा जिसके चारों ओर निर्मित प्रवेश द्वार से प्रांगण में प्रवेश किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारत में बुंदेलखण्ड के प्रत्येक पर्यटन स्थल का अपना एक अलग ही स्थान है जो पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। जहाँ किले, मंदिर, सेन्चुरीज़ तथा अन्य पर्यटन स्थल सम्मिलित हैं। जो सांस्कृतिक रूप से देश में अपना एक अलग स्थान बनाते हैं। जिसकी सौन्दर्यता का आनंद लेने के लिए लोग देश–विदेश से आते रहते हैं। यहाँ आकर लोग एक अलग ही आनंद का अनुभव करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि बुंदेलखण्ड में स्थित सभी पर्यटन स्थल भारतीय संस्कृति को सजोये हुये है। जिस प्रकार भारत की संस्कृति अपने आप में बहुत ऊँचे स्थान पर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. श्रीवास्तव, वी0के0, (2018) ''बुंदेलखण्ड का इतिहास'', डी0के0 प्रिण्टवर्ल्ड प्रा0लि0, नई दिल्ली। ISBN : 978-8124609484
2. त्रिपाठी, डॉ0 काशी प्रसाद (2017) ''बुंदेलखण्ड : संस्कृति, परंपरा और विरासत'', लीशा प्रकाशन, हरियाणा। ISBN : 978-9385543074
3. चन्द्रा रमेश, मिश्र दिनेश, त्रिपाठी पदमाधर, (2000) ''खजुराहों की प्रतिध्वनियाँ'', वाणी प्रकाशन, दरिया गंज, नई दिल्ली। ISBN : 812-6305622
4. विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ।
5. इंटरनेट आदि।

◆◆◆

भारत- मेरी माटी मेरा देशः राष्ट्रीयता एवं विकास की संयुक्त गाथा

अजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा, रमाबाई अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, गजरौला,अमरोहा, (उ०प्र०)

''भारत– मेरी माटी मेरा देश'' की अवधारणा भारतीय राष्ट्रवाद और प्रगति के सार को समाहित करती है, जो राष्ट्र के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक–आर्थिक आयामों को आपस में जोड़ती है। यह शोध लेख भारत की अपनी प्राचीन सांस्कृतिक प्रकृति को बनाए रखते हुए एक आधुनिक राष्ट्र–राज्य बनने की दिशा में यात्रा की बहुमुखी कथा पर प्रकाश डालता है। यह राष्ट्रवाद और प्रगति के बीच सहजीवी संबंध की खोज करता है, और इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे दोनों भारत की पहचान और भविष्य को आकार देने में सहायक रहे हैं। लेख में राष्ट्रीय गौरव की भावना को बढ़ावा देने और विकासात्मक पहलों को आगे बढ़ाने में सरकार, नागरिक समाज और युवाओं सहित विभिन्न हितधारकों की भूमिका की भी जाँच की गई है। ऐतिहासिक घटनाओं, नीतिगत रूपरेखाओं और समकालीन चुनौतियों के व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, इस लेख का उद्देष्य भारत के राष्ट्रवाद और प्रगति के अनूठे आख्यान की समग्र समझ प्रदान करना है।

परिचय

भारत, जिसे अक्सर भारत के नाम से जाना जाता है, विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं का देश है। ''मेरी माटी मेरा देश'' (मेरी मिट्टी, मेरा देश) वाक्यांष भारतीय मानस के साथ गहराई से जुड़ता है, जो भूमि के साथ एक गहन संबंध और सामूहिक जुड़ाव की भावना का प्रतीक है। यह संबंध भारतीय राष्ट्रवाद का आधार रहा है, जो सदियों से विकसित हुआ है, ऐतिहासिक घटनाओं, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामाजिक–राजनीतिक आंदोलनों द्वारा आकार लिया गया है। भारत में राष्ट्रवाद कोई एकरूप अवधारणा नहीं है यह क्षेत्रीय पहचान, भाषाई विविधता और धार्मिक बहुलवाद के धागों से बुना गया एक जटिल ताना–बाना है। साथ ही, प्रगति की ओर भारत की यात्रा आर्थिक विकास, तकनीकी उन्नति और सामाजिक परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण मील के पत्थर साबित हुई है। राष्ट्रवाद और प्रगति के बीच का अंतरसंबंध भारत के आधुनिक इतिहास की एक परिभाशित विशेषता रही है, जिसने इसकी नीतियों, शासन और सामाजिक मूल्यों को प्रभावित किया है।

यह लेख भारत में राष्ट्रवाद और प्रगति की संयुक्त कथा का पता लगाने का प्रयास करता है, यह जाँचते हुए कि दोनों कैसे सह–अस्तित्व में हैं और एक–दूसरे को मजबूत करते हैं। यह भारतीय राष्ट्रवाद के ऐतिहासिक संदर्भ, प्रमुख नेताओं और आंदोलनों की भूमिका और राष्ट्र की पहचान पर वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभाव पर गहराई से चर्चा करेगा। इसके अतिरिक्त, लेख उन चुनौतियों और अवसरों का विश्लेषण करेगा जो भारत के लिए आगे हैं क्योंकि यह अपनी सांस्कृतिक विरासत को तेजी से बदलती दुनिया की माँगों के साथ संतुलित करने का प्रयास करता है।

भारतीय राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक संदर्भ :-

प्राचीन एवं मधयकालीन काल :

भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें प्राचीन काल में देखी जा सकती हैं, जब भारतवर्ष (भारत की भूमि) की अवधारणा को पहली बार हिंदू धर्मग्रंथों में व्यक्त किया गया था। महाभारत और पुराण जैसे ग्रंथों में एकीकृत सांस्कृतिक और भौगोलिक इकाई का विचार प्रचलित था, जो भारतीय उपमहाद्वीप की विविधता और एकता का जष्न मनाते थे। मौर्य और गुप्त साम्राज्यों ने एकता की इस भावना को और मजबूत किया, एक साझा सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को बढ़ावा दिया। मध्यकाल में इस्लामी षासकों के आगमन और दिल्ली सल्तनत तथा मुगल साम्राज्य की स्थापना ने नए सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभावों को जन्म दिया। राजनीतिक विखंडन के बावजूद, इस अवधि के दौरान उभरी समन्वयकारी संस्कृति ने एक समग्र भारतीय पहचान की नींव रखी। भक्ति और सूफी आंदोलनों ने लोगों के बीच एकता और साझा आध्यात्मिक विरासत की भावना को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

औपनिवेशिक युग और आधुनिक राष्ट्रवाद का उदय :

18वीं षताब्दी में ब्रिटिश औपनिवेषिक शासन के आगमन ने भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ ला दिया। औपनिवेशिक शासन के तहत शोषण और उत्पीड़न ने भारतीय जनता को उत्साहित किया, जिससे एक आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलन का उदय हुआ। 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) भारतीय लोगों की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने का प्रमुख मंच बन गई।

महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सुभाश चंद्र बोस जैसे नेताओं ने राष्ट्रवादी आंदोलन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधी के अहिंसा और सविनय अवज्ञा के दर्शन ने नेहरू के आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी भारत के दृश्टिकोण के साथ मिलकर स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए वैचारिक रूपरेखा प्रदान की। 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन और उसके बाद 1947 में भारत का विभाजन भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में निर्णायक क्षण थे।

स्वतंत्रता के बाद का युग :

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति ने भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत की। राष्ट्र निर्माण के कार्य में विविध क्षेत्रों, भाषाओं और संस्कृतियों को एकीकृत राष्ट्र–राज्य में एकीकृत करना शामिल था। 1950 में संविधान को अपनाना, जिसमें लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को शामिल किया गया, इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम था।

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता हासिल करने के उद्देष्य से विभिन्न विकासात्मक पहलों का कार्यान्वयन भी देखा गया। हरित क्रांति, ष्वेत क्रांति और पंचवर्षीय योजनाओं ने भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को बदलने और लाखों लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत की प्रगति में राष्ट्रवाद की भूमिका :-

आर्थिक विकास और आत्मनिर्भरता :

भारत के आर्थिक आत्मनिर्भरता और विकास को प्राप्त करने के प्रयासों के पीछे राष्ट्रवाद एक प्रेरक शक्ति रहा है। विदेशी प्रभुत्व से मुक्त, आत्मनिर्भर भारत की कल्पना राष्ट्रवादी आंदोलन का एक प्रमुख उद्देष्य था। यह कल्पना स्वतंत्रता के बाद की सरकार की नीतियों में परिलक्षित हुई, जिसने औद्योगीकरण, बुनियादी ढांचे के विकास और तकनीकी उन्नति को प्राथमिकता दी।

सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की स्थापना, लघु उद्योगों को बढ़ावा देना, तथा वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षा पर जोर देना आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए अपनाई गई कुछ रणनीतियाँ थीं। इन पहलों की सफलता भारत के एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने में स्पष्ट है, जिसमें एक मजबूत औद्योगिक आधार, एक संपन्न आईटी क्षेत्र और एक बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग है।

सामाजिक परिवर्तन और समावेशी विकास :

भारत में राष्ट्रवाद सामाजिक परिवर्तन और समावेशी विकास के लक्ष्य से भी निकटता से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रवादी आंदोलन ने सामाजिक न्याय, समानता और हाषिए पर पड़े समुदायों के उत्थान के महत्त्व पर जोर दिया। भारत का संविधान, सकारात्मक कार्रवाई, आरक्षण नीतियों और मौलिक अधिकारों के अपने प्रावधानों के साथ, सामाजिक न्याय के प्रति इस प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

भूमि सुधारों का क्रियान्वयन, अस्पष्यता का उन्मूलन, तथा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देना भारत के सामाजिक विकास एजेंडे के प्रमुख घटक रहे हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण, अल्पसंख्यक अधिकारों की सुरक्षा, तथा सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना भी समावेशी और समतामूलक समाज के राष्ट्रवादी दृश्टिकोण का अभिन्न अंग रहा है।

तकनीकी उन्नति और नवाचार :

राष्ट्रवाद की भावना ने भारत की तकनीकी उन्नति और नवाचार की खोज को भी बढ़ावा दिया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिशद (सीएसआईआर) जैसे प्रमुख संस्थानों की स्थापना वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देने में सहायक रही है।

अंतरिक्ष अन्वेशण, परमाणु प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी में भारत की उपलब्धियाँ देश की तकनीकी शक्ति का प्रमाण हैं। मंगल ऑर्बिटर मिशन (मंगलयान) का सफल प्रक्षेपण, स्वदेशी परमाणु क्षमताओं का विकास और आईटी और सॉफ्टवेयर सेवा उद्योग के विकास ने भारत को प्रौद्योगिकी और नवाचार में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित किया है।

निष्कर्ष :-

''भारत– मेरी माटी मेरा देश'' की कहानी भारतीय राष्ट्रवाद और प्रगति की स्थायी भावना का प्रमाण है। यह लोगों और भूमि के बीच गहरे जुड़ाव, बेहतर भविष्य के लिए सामूहिक आकांक्षा और चुनौतियों पर विजय पाने की दृढ़ता और दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

जैसे–जैसे भारत वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, राष्ट्रवाद और प्रगति की संयुक्त कथा एक मार्गदर्शक शक्ति बनी रहेगी। अतीत के सबक, वर्तमान की उपलब्धियाँ और भविष्य के लिए दृश्टिकोण को एक सुसंगत और समावेशी ढांचे में एकीकृत किया जाना चाहिए जो लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय के मूल्यों को बनाए रखे।

वैश्वीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक असमानता की चुनौतियों के लिए राष्ट्रवाद और प्रगति के सिद्धांतों के प्रति नए सिरे से प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। राष्ट्र के भविष्य के पथप्रदर्शक के रूप में युवाओं की भूमिका इस प्रयास में महत्त्वपूर्ण है। उनकी क्षमता का दोहन करके और राष्ट्रीय गौरव और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देकर, भारत एक समृद्ध, समावेशी और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण जारी रख सकता है।

महात्मा गांधी के शब्दों में, ''भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप आज क्या करते हैं।'' ''भारत– मेरी माटी मेरा देश'' की कहानी हर भारतीय को राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने और इसकी पहचान को परिभाशित करने वाले मूल्यों को बनाए रखने के लिए कार्रवाई करने का आह्वान है। यह याद दिलाता है कि भारत की मिट्टी केवल एक भौतिक इकाई नहीं है, बल्कि इसके लोगों की सामूहिक भावना और आकांक्षाओं का प्रतीक है। हम सब मिलकर भारत की कहानी में एक नया अध्याय लिख सकते हैं, जो विविधता में एकता और प्रगति की निरंतर खोज का जष्न मनाता है।

संदर्भ :-

1. Anderson, B. (1983). Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism. London: Verso.
2. Chatterjee, P. (1993). The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories. Princeton: Princeton University Press.
3. Gandhi, M. K. (1947). India of My Dreams. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.
4. Nehru, J. (1946). The Discovery of India. New York: John Day Company.
5. Sen, A. (2005). The Argumentative Indian: Writings on Indian History, Culture, and Identity. New York: Farrar, Straus and Giroux.
6. Tharoor, S. (1997). India: From Midnight to the Millennium. New York: Arcade Publishing.
7. Yadav, Y. (2000). Understanding the Second Democratic Upsurge: Trends of Bahujan Participation in Electoral Politics in the 1990s. In F. R. Frankel, Z. Hasan, R. Bhargava, & B. Arora (Eds.), Transforming India: Social and Political Dynamics of Democracy (pp. 120-145). New Delhi: Oxford University Press.

◆◆◆

भारतीय राष्ट्रीय एकता की संकल्पना व इसकी आवश्यकता

मुदित सिंघल, राहुल कुमार एवं अमजद खान
राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उत्तर प्रदेश

प्रस्तावना

राष्ट्रीयता वह भावना है जो लोगों को एकता के सूत्र में बांधती है और स्वराज के प्रति विश्वास पैदा करके राष्ट्रीय विकास को एक ठोस आधार प्रदान करती है। राष्ट्रीय एकता के विचार को बहुत से समाज सुधारकों, राष्ट्रीय नेताओं, राजनीतिक संस्थाओं, शिक्षा प्रणाली, विभिन्न जातियों व धर्मों की परंपराओं व त्योहारों तथा अन्य राष्ट्रवादी तथ्यों के योगदान के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

बीज शब्द :- राष्ट्रीय एकता, विकास, त्यौहार कुंभ, शिक्षा प्रणाली

पूरी धरती को परिवार मानने की, पावन प्रणम्य परिपाटी मेरे देश की।

शत शत वंदनीये अभिनन्दनीय, चंदन से कम नहीं माटी मेरे देश की।।

जब किसी समाज के सारे व्यक्ति किसी निर्दिष्ट भौगोलिक सीमा के अन्दर अपने पारस्परिक भेद–भावों को भुलाकर सामूहीकरण की भावना से प्रेरित होते हुए एकता के सूत्र बन्ध जाते हैं तो उसे राष्ट्र के नाम से पुकारा जाता है। राष्ट्रवादियों का मत है दृ " व्यक्ति राष्ट्र के लिए है राष्ट्र व्यक्ति के लिए नहीं " इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। राष्ट्र से अलग होकर उसका कोई अस्तित्व नहीं होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र की दृढ़ता तथा अखंडता को बनाये रखने में पूर्ण सहयोग प्रदान करे। वस्तुस्थिति यह है कि राष्ट्रीयता एक ऐसा भाव अथवा शक्ति है जो व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत हितो को त्याग कर राष्ट्र कल्याण के लिए प्रेरित करती है। इस भावना की विकसित हो जाने से राष्ट्र की सभी छोटी तथा बड़ी सामाजिक इकाइयां अपनी संकुचित सीमा के उपर उठकर अपने आपको समस्त राष्ट्र का अंग समझने लगती है।

ब्रबेकर ने राष्ट्रीयता की व्याख्या करते हुए लिखा है–

"राष्ट्रीयता शब्द की प्रसिद्धि पुनर्जागरण तथा विशेष रूप से फ़्रांस की क्रांति के पश्चात हुई है। यह साधारण रूप से देश–प्रेम की अपेक्षा देश–भक्ति से अधिक क्षेत्र की ओर संकेत करती है। राष्ट्रीयता में स्थान के सम्बन्ध के अतिरिक्त प्रजाति, भाषा तथा संस्कृति एवं परम्पराओं के भी सम्बन्ध आ जाते हैं।"

इतनी विभिन्नताओं तथा विविधताओं के बाद भी भारत अनेकता में एकता के सूत्रपात से बना ऐसा देश है जो अपने हर राज्य और हर प्रांत के निवासियों को सदियों से एक सूत्र में पिरोता आया है।

भारत एक विशाल देश है। इस विशालता के कारण इस देश में हिन्दू, मुस्लिम, जैन, ईसाई,

पारसी तथा सिक्ख आदि विभिन्न धर्मों तथा जातियों एवं सम्प्रदायों के लोग हैं। अकेले हिन्दू धर्म को ही ले लीजिए। यह धर्म भारत का सबसे पुराना धर्म है जो वैदिक धर्म, सनातन धर्म, पौराणिक धर्म तथा ब्रह्म समाज आदि विभिन्न मतों सम्प्रदायों तथा जातियों में बंटा हुआ है। लगभग यही हाल दूसरे धर्मों का भी है। कहने का तात्पर्य यह है कि भारत में विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों जातियों तथा प्रजातियों एवं भाषाओं के कारण आश्चर्यजनक विलक्षणता तथा विभिन्नता पाई जाती है। पर इस विभिन्नता से हमें यह नहीं समझ लेना चाहिए की भारत में आधारभूत एकता का अभाव है।

राष्ट्र और राष्ट्रवाद को लेकर यह को संभ्रम बना है, इसका बड़ा कारण भारत की चिंतन परंपरा से उनका कटा होना है। राष्ट्र की भारतीय संकल्पना यूरोप के उस नेशन–स्टेट की संकल्पना से सर्वथा भिन्न है जिसके बारे में पश्चिमी विद्वानों ने कहा है कि नेशनलिज्म गुंडों की अंतिम शरणस्थली होती है। नेशन राष्ट्र नहीं है। नेशन एक राजनीतिक ईकाई है, जबकि भारत का राष्ट्र एक सांस्कृतिक ईकाई है। राष्ट्र की संकल्पना विश्व को भारत की एक अनुपम देन है। यदि भारत की राष्ट्र की अवधारणा को विश्व ठीक से समझ लेगा और उसे अपने आचरण में उतार पाएगा, तो वह अशांति, युद्ध और सभ्यताओं के परस्पर संघर्ष की समस्याओं से मुक्ति पा सकेगा।

उदाहरण के लिए भारतीय समाज की जीवन पद्धति में वैदिक काल से ही महाकुम्भ जैसे महापर्वो के आयोजन की विशेष परम्परा रही है। महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन मात्र नहीं है अपितु आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व को फलीभूत करने वाला आस्था पर्व है। यहाँ आकर मनुष्य एक ओर आत्मशुद्धि व आत्मकल्याण का भाव रखता है वही दूसरी ओर सम्पूर्ण राष्ट्र मेरा परिवार है, यह भाव रखकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। हजारों वर्षो से चली आ रही महाकुम्भ परम्परा भारत की प्राचीन राष्ट्रीय एकता और सांस्कृति का परिचय कराती है। कुम्भ मेले में सभी पन्थ सम्प्रदायों के देश–विदेश के साधु सन्त आकर सामाजिक समस्याओं पर विचार विमर्श करते है।

यह राष्ट्रीय एकता का अनुपम संगम है। यही वास्तव में भारत की सनातनी शक्ति है। जिसमें ऊँच–नीच, पथं–सम्प्रदाय उत्तर–दक्षिण आदि के भेद को कोई स्थान नहीं है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का साक्षात् दर्शन का अद्भुत आयोजन है–कुम्भ महापर्व। भारत के चार कुम्भ स्थल धर्म व्यवस्था द्वारा स्थापित चार सार्वजनिक मंच है जो सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में बाँधते है। व्यक्तिगत नियन्त्रण के बिना लाखों लोगों का आस्था के इस पर्व में एकत्रित होना निश्चित ही अद्भुत परम्परा है। संसार सागर में विचारों और भावनाओं के सहयोग से मन्थन करते हुए अमृत निकालने की व्यवस्था का नाम महाकुम्भ है।

(b) साम्प्रदायिकता एकता को विकसित करने के लिए नाटकों तथा वाद–विवादों का आयोजन किया जाये।

(c) सरकारी पदों पर नियुक्तियां धार्मिक, प्रान्तीय तथा जातीयता एवं साम्प्रदायिकता आधारों पर न की जायें। उच्च पदों पर नियुक्त करते समय अखिल भारतीय दृष्टिकोण को अपनाया जाये।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि संकुचित राष्ट्रीयता से मानव का हित नहीं हो सकता है। अतः शिक्षा में संकुचित राष्ट्रीयता की भावना को त्यागकर राष्ट्रीयता के व्यापक दृष्टिकोण को अपनाना चाहिये। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा का उद्देश्य नागरिकों को अपनी सामाजिक तथा सांस्कृतिक सम्पति की प्रशंसा करना उसकी कमियों को दृष्टि में रखना तथा उन कमियों को दूर करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। वास्तविकता यह है कि आधुनिक युग में प्रत्येक राष्ट्र को अपना दृष्टिकोण उदार बनाना चाहिए तथा राष्ट्रीयता के व्यापक सिद्धांत को अपनाकर नागरिकों में विश्व बंधुत्व एवं विश्व नागरिकता की भावना को प्रोत्साहित करना चाहिए। इन अंतर्राष्ट्रीय भावना से विश्व में शान्ति बनी रहेगी जिससे प्रत्येक राष्ट्र उन्नति के शिखर पर चढ़ता रहेगा।

सन्दर्भ

1. Bhosale] B- G- (2009)- Indian Nationalism% Gandhi Vis&A&Vis Tilak And Savarkar- The Indian Journal of Political Science] 419&427-
2. Augustine, S-(2009)- 5 Religion and Cultural Nationalism% Socio&Political Dynamism of Communal Violence in India-
3. Habib]S- I- (Ed-)- (2017)- Indian Nationalism% The Essential Writings- Aleph Book Company-
4. Habib] I- (2017)- Nationalism in India% Past and Present- Social Scientist] 45¼3@4½] 3&8-
5. Editorial] The Hindu, daily news paper
6. Editorial] Amar Ujala, daily news paper
7. Editorial] Dainik Jagran, daily news paper

◆◆◆

हिन्दी राष्ट्रीय चेतना की काव्यधारा और स्वतन्त्रता आन्दोलन

अरुण कुमार एवं दिव्या कुमारी
[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

सारांश

स्वतन्त्रता आन्दोलन भारतीय इतिहास का वह युग है जो लोगों के आत्मसम्मान, गौरव, पीड़ा, गर्व, कड़वाहट, दम्भ तथा सबसे अधिक षहीदों के लहू को समेटे हुए है। भारत में अन्तिम विदेशी आक्रांता अंग्रेज आए जो कि अन्य पूर्व आक्रांताओं से भिन्न थे। पूर्व आक्रांता शक, कुषाण, हूण, मुगल, तुर्क आदि यहाँ पर आए और यहीं पर रच बस गए किन्तु अंग्रेज न केवल भारत की अकूत सम्पत्ति को लूटकर ले गए बल्कि यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्वरूप में भी आमूलचूल परिवर्तन किया। जब तक भारत को यह पता चलता कि अंग्रेज हमारे षत्रु हैं अथवा मित्र तब तक बहुत देर हो चुकी थी। भारत एक राष्ट्र नहीं था। छोटे–छोटे राज्यों के राजा अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए लड़ते–लड़ते वीरगति को प्राप्त हो जाते मराठा, मैसूर, अवध, बंगाल, बिहार ही नहीं अपितु पंजाब तक अंग्रेजों ने अपने अधीन कर लिया। ऐसी विकट परिस्थिति में समस्त राष्ट्र को वैचारिक रूप से एकता प्रदान करने के लिए हिन्दी लेखकों एवं कवियों ने अतुलनीय प्रयास किया। स्वतन्त्रता के इस युग में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने–अपने तरीके से योगदान दिया। प्रमुख बात यह है कि महात्मा गाँधी, गोपाल कृश्ण गोखले, राजा राममोहन राय, सी राजगोपालाचार्य, डॉ बी.आर अंबेडकर जैसे राजनीतिज्ञों और विचारकों ने हिंदी की महत्ता को समझते हुए इसे समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने वाली भाषा कहाँ कष्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से असम तक सभी राज्यों में हिंदी कमोवेश प्रचारित प्रसारित हुई और समग्र राष्ट्र भाषाई रूप से एक हो सका। हिन्दी साहित्यकारों, लेखकों और कवियों ने अपनी लेखनी की पैनी धार से न केवल अंग्रेजी साम्राज्य को निर्मूल कर दिया अपितु राष्ट्र व समाज को नूतन जीवन दृष्टि प्रदान की। उनका वैचारिक लक्ष्य जनजागरण ही रहा।

बीज शब्दः– राष्ट्रीय चेतना, स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, जागरण, आन्दोलन, स्वतन्त्रता, अंग्रेज, संग्राम

प्रस्तावना–

भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी साहित्य का योगदान अविस्मरणीय था। हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीय कविताओं में जहाँ एक ओर देश की पराधीनता के प्रति क्षोभ का भाव दृश्टिगत होता है वहीं दूसरी ओर देश के गौरवपूर्ण अतीत का गुणगान करते हुए देश प्रेम का भाव भी प्रकट हुआ है। शोषण, अन्याय, पूँजीवादी और अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह एवं क्रान्ति के स्वर प्रस्तुत हुए हैं। राष्ट्रीय उद्‌बोधन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश की समस्याओं में अपेक्षित सुधार लाने की प्रेरणा प्रदान की और लोगों में जागरूकता लाने का भरसक प्रयत्न किया।

अध्ययन का उद्देश्य–

हिन्दी साहित्य ने न केवल भारतीय स्वतन्त्रता से पूर्व बल्कि स्वतन्त्रता के बाद भी भारत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे देश को सुधारने और आम आदमी को जागरूक करने का विश्वसनीय और अनूठा माध्यम इनकी रचनाएँ हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से **''हिन्दी राष्ट्रीय चेतना की काव्यधारा और स्वतन्त्रता आन्दोलन''** विषय पर समसामयिक विश्लेषण किया जाएगा। हिन्दी साहित्यकारों, लेखकों और कवियों की रचनाओं के माध्यम से भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में जो इनकी महती भूमिका रही उस पर दृष्टिपात किया जाएगा।

हिन्दी राष्ट्रीय चेतना की काव्यधारा और स्वतन्त्रता आन्दोलन

भारत सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक और वैज्ञानिक दृष्टि से सदियों से विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। भारतीय धरा पर फलीभूत नैतिक मूल्य न केवल भारतीयों के लिए अपितु समग्र मानवता के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुए हैं। यहाँ पर वैदिक, उत्तर–वैदिक, सिद्ध, नाथ, जैन, बौद्ध, सनातन, शैव, वैष्णव आदि अनेक आस्तिक व नास्तिक धर्म एवं विचारधाराएँ पल्लवित पुष्पित होकर मानवता के हित का चिंतन करती आई हैं। इन्ही चिंतनों के सापेक्ष हमारी विचारधाराएँ अनेक रूपों में विकसित हुईं और हम विश्वगुरु के पद पर प्रतिश्ठित होकर विश्व ज्ञान परम्परा का निर्वाध रूप से विकास कर रहे थे। हमारे धन–वैभव और गौरवशाली रहन–सहन से प्रभावित होकर आर्य, शक, कुषाण, हूण, ईरानी, तुरानी, मुगल, अंग्रेज न जाने कितने लोभी, आततायी और लुटेरे लोगों ने भारत पर आक्रमण करके इसकी गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा को नष्ट करने का प्रयास किया, किन्तु भारतीय संस्कृति की जड़ें इतनी गहरी थी कि उसे नष्ट करना तो दूर इसी में आकर सब रच–बस गए और गंगा–यमुनी संस्कृ ति का विकास होता गया। समय–समय पर भारत ने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अनेक विचारकों, वीर महापुरुषों, दार्शनिकों, समाज–सुधारकों को जन्म दिया, जिन्होंने समय–समय पर भारत के आत्म गौरव की रक्षा की।

भारत पर अंतिम विदेशी आक्रान्ता अंग्रेज आए जो कि अन्य पूर्व आक्रान्ताओं से भिन्न थे। पूर्व आक्रान्ता शक, कुषाण, हूण, मुगल, तुर्क आदि यहाँ पर आए और यहीं पर रच बस गए किन्तु अंग्रेज न केवल भारत की अकूत सम्पत्ति को लूटकर ले गए बल्कि यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्वरूप में भी आमूलचूल परिवर्तन किया। जब तक भारत को यह पता चलता कि अंग्रेज हमारे षत्रु हैं अथवा मित्र तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उस समय भारत एक राष्ट्र नहीं था। छोटे–छोटे राज्यों के राजा अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए लड़ते–लड़ते वीरगति को प्राप्त हो जाते। मराठा, मैसूर, अवध, बंगाल, बिहार ही नहीं अपितु पंजाब तक अंग्रेजों ने अपने अधीन कर लिया। ऐसी विकट परिस्थिति में समस्त राष्ट्र को वैचारिक रूप से एकता प्रदान करने के लिए हिन्दी लेखकों एवं कवियों ने अतुलनीय प्रयास किया। प्रमुख बात यह है कि **महात्मा गाँधी, गोपाल कृष्ण गोखले, राजा राममोहन राय, सी राजगोपालाचार्य, डॉ० बी.आर अम्बेडकर** जैसे राजनीतिज्ञों और विचारकों ने हिन्दी की महत्ता को समझते हुए इसे समस्त राष्ट्र

को एकता के सूत्र में बाँधने वाली भाषा कहाँ कष्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से असम तक सभी राज्यों में हिन्दी कमोबेष प्रचारित प्रसारित हुई और समग्र राष्ट्र भाषाई रूप से एक हो सका।

भारतेन्दु युग को (1850 से 1903 ई०) हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग का आरम्भ माना जाता है,किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हिन्दी में इसके पूर्व लेखन होता ही नहीं था। भारतेन्दु युग के पूर्व भी अवधी, ब्रज, खड़ीबोली आदि अनेक बोलियों एवं लोक भाषाओं में अंग्रेजों के प्रति विरोध के स्वर दिखाई देते हैं।

अवधी लोक भाषा में क्रान्तिकारी बाबू कुँवर सिंह की प्रषंसा में लिखा गया यह लोकगीत बहुत प्रसिद्ध हुआ–

कइलस देस पर जुलुम जोर फिरंगिया,
जुलुम कहानी सुनि तड़पे कुंवर सिंह,
बनके लुटेरा उतरल फौज फिरंगिया,
सुनि–सुनि कुंवर के हिरदय लागल अगिया"[1]

भारतेंदु एवं द्विवेदी युगीन लेखकों एवं कवियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त आदि ने अपने कृतित्व के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के स्वर को मुखरित किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भारत की खराब स्थिति और अंग्रेजों की भूमिका का चित्रांकन करते हुए 'भारत दुर्दशा' नाटक में लिखते हैं–

"रोवहु सब मिलि कै आवहु भारत भाई।
हा–हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।।"[2]

भारतेन्दु एक तरफ अपने साहित्य के द्वारा भारतवासियों से देश प्रेम की बात करते थे तो दूसरी तरफ़ हिन्दी भाषा को जन–जन की भाषा बनाने के पुनीत कार्य में भी लगे हुए थे। उन्होंने अपनी कविता 'निज भाषा' में कहा है–

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिनु निजभाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल।।"3

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने स्वाधीनता आन्दोलन को आगे बढ़ाने में अद्वितीय भूमिका निभाई। गुप्त जी ने अपनी रचना 'भारत भारती' के माध्यम से स्वदेश प्रेम का ऐसा वर्णन किया कि सम्पूर्ण राष्ट्र में भारत–भारती के पद गाए जाने लगे। जिन्हें अपने देश से प्रेम नहीं है वह उन व्यक्तियों को पशु के समान मानते हैं–

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं पशु निरा और मृतक समान है।।"[4]

गुप्त जी की भारत भारती पढ़कर भारत के लोगों में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ और उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़ चढ़कर भाग लिया और अंग्रेजों की दमनात्मक कार्यवाही का मुकाबला किया तथा जेल की यातनायें सहीं।

"हम कौन थे क्या हो गये, और क्या होंगे अभी

आओ विचारें बैठकर, ये समस्याएँ सभी।"[5]

छायावादी कवियों की कविताओं में भी भारतीय स्वतंत्रता और राष्ट्रीय जागरण का स्वर सुनाई देता है। इस युग में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम अपने यौवन पर था। रोलेट एक्ट समाप्त होने के बाद जलियावाला बाग हत्याकांड इसी युग में घटित हुआ। महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया, भगत सिंह को फाँसी हुई। इतनी घटनाओं के बाद देश की ऐसी स्थिति से कवि कैसे अछूता रह सकता है। छायावादी कवि अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का संदेश देने लगे।

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित चन्द्रगुप्त नाटक में राजकुमारी अलका गीत गाकर सैनिकों को उनके कर्तव्यों का बोध कराते हुए उनका मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें प्रोत्साहित करती है–

"हिमाद्रि तुंग षृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रषस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।"[6]

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला भारतीय वीरता एवं स्वर्णिम अतीत का गुणगान करते हैं एवं उन भारतीयों को ललकारते हैं। जो अपनी शक्ति भूलकर परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं–

"समर में अमर कर प्राण,
गान गाये महासिंधु से
सिंधु–नद–तीर वासी!
सैंधव तरंगों पर
चतुरंग चमू संग,
"सवा–सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा,
गोविंद सिंह निज
नाम जब कहाऊँगा।"
किसने सुनाया यह
वीर–जन–मोहन अति

दुर्जय संग्राम–राग,
फ़ाग का खेला रण
बारहों महीनों में?
षेरों की माँद में,
आया है आज स्यार"
जागो फिर एक बार।"[7]

'एक भारतीय आत्मा' कहलाने वाले माखनलाल चतुर्वेदी की कविता में देश पर बलिदान होने की प्रेरणा सर्वाधिक है। "पुष्प की अभिलाषा" राष्ट्रीय भाव की अमर रचना है जिससे युगों तक देशभक्त प्रेरणा लेते रहेंगे। कवि ने पुष्प को प्रतीक के रूप में चुना क्योंकि पुष्प जिस तरह लोगों की प्रसन्नता के लिए स्वयं को उन्हें समर्पित कर देता है। उसी प्रकार भारतीय सैनिक भी अपना जीवन अपने देशवासियों के लिए समर्पित कर देते हैं–

" मुझे तोड़ लेना वन माली,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृ भूमि को शीश चढ़ाने,
जिस पथ से जायें वीर अनेक।।''

उस समय श्री श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' का 'झंडा गीत' तो स्वतंत्रता सैनानियों का मंत्र गीत ही बन गया था–

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।"

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' को भुलाया नहीं जा सकता है। जिसने अंग्रेजों के सिंहासन को हिलाकर रख दिया। उनकी ये पंक्तियाँ आज भी उतनी ही सार्थक हैं जितनी सौ वर्ष पहले थी–

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
• • • • • •
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।"

देश को एकता के सूत्र में बाँधने की बहुत बड़ी बाधा साम्प्रदायिक भेदभाव की है। रामनरेश त्रिपाठी को इस बात का यह एहसास था कि मुसलमानों और हिन्दुओं में सौहार्द स्थापित किए बिना देश

को आजादी नहीं मिल सकती। वे अपने लोकप्रिय नाटक 'बफाती चाचा' की प्रस्तावना में लिखते हैं कि–

"उन्हें कैसे कोई कहेगा कि दो है
कि जो एक ही गोद के हैं पले।
हम हिंदू–मुसलमान मिल के चले।।
वतन एक हिन्दोस्ताँ है हमारा,
सदा वह रहे और फूले फले।
हम हिंदू–मुसलमान मिलके चलें।।"

वे जनता को बन्धनों, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों से मुक्त देखना चाहते थे। लोकसेवा ही उनके लिए ईश्वर सेवा थी। सब मिलाकर वे स्वच्छन्द सर्जनात्मक चेतना के कवि थे।

मुंशी प्रेमचन्द्र की अद्‌भुत लेखनी ने जनता की मूक भावनाओं को शब्दों में ढाला जिससे इनका सम्पूर्ण साहित्य ही जनता की आवाज बन गया। देशवासियों को 'रंगभूमि' के माध्यम से मुंशी प्रेमचन्द ने सन्देश दिया कि युद्ध के मैदान से पीछे हटना किसी भी प्रकार की धर्म नीति नहीं कही जा सकती।

सन् 1921 में असहयोग माला में 'स्वराज के फायदे' शीर्षक से प्रेमचंद का लेख प्रकाशित हुआ। उसमें वे कहते हैं– "स्वराज से देश को सबसे बड़ा जो फायदा होगा वह भारतीय जीवन का पुनरुद्धार है।"

हिन्दी साहित्य के अनेक विद्वानों कवियों ने स्वतंत्रता यज्ञ को पूरा कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सियारामशरण गुप्त, मुकुटधर पांडेय, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्राकुमारी चौहान, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद आदि के योगदान को स्वतंत्रता आन्दोलन में नकारा नहीं जा सकता।

उपसंहार–

भारत के स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्यकारों लेखकों और कवियों की अहम भूमिका रही। राष्ट्रीयता इनका मुख्य स्वर रहा और स्वरूप सार्वदेशिक। राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए रचनाकारों ने अनेक कष्ट और यातनाएँ सहन किया परन्तु वे अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। इन्होंने अपने लेखन का मानदण्ड सदैव ऊँचा रखा।

निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि साहित्य का विकास समाज के बीच होता है। जब भी समाज में कोई बड़ा परिवर्तन आता है तो साहित्य पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार लेखनी प्रत्येक काल में समाज का मार्गदर्शन करती आई है। जब–जब समाज भ्रमित होता है तब–तब राजनीतिक पथ भ्रष्ट होता है और जनसाधारण किंकर्तव्यविमूढ़ की अवस्था में आता है। पराधीनता के उस काल में जब सर्वत्र पराजय ही पराजय दिखाई देती थी तब हमारे देश के अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से हमारे समाज का मनोबल और आत्मबल बनाए रखने का प्रषंसनीय कार्य किया।

सन्दर्भ सूची-

1. https://www.jagran.com
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भारत दुर्दशा, साहित्य सरोवर, 2019
3. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और सम्वेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, 2005
4. jagranhindi.in
5. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, वर्तमान खण्ड, राजकमल प्रकाशन, 2020
6. जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त, चौथे अंक के छठे दृश्य से, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2017
7. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, परिमल (काव्य संग्रह), राजकमल प्रकाशन, 2008
8. माखनलाल चतुर्वेदी, हिम तरंगिनी (काव्य संग्रह), साहित्य अकादमी, 2019
9. https://kavishala.com
10. सुमित मोहन, क्रांतिकारी साहित्य सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ०89, कृष्णकांत ब्रॉदर्स, द्वितीय संस्करण, 2007
11. डॉ० रामचन्द्र तिवारी, आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध आयाम, पृ०166, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण, 2007
12. सत्यप्रकाश मिश्र, प्रेमचन्द के श्रेष्ठ निबन्ध, लोकभारती प्रकाशन, 2019

◆◆◆

वेदों और उपनिषदों के संदर्भ में वैदिक भारत में विज्ञान की उन्नति

बेबी तब्बसुम एवं मौहम्मद हाशिम
जीव विज्ञान विभाग, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

वैदिक भारत केवल आध्यात्मिकता और दर्शन का केंद्र नहीं था, बल्कि विज्ञान और तर्क की एक समृद्ध परंपरा का उद्‌गम स्थल भी रहा है। चारों वेदकृऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेदकृतथा उपनिषदों में वैज्ञानिक ज्ञान के अनेक सूत्र मिलते हैं, जो खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्सा, धातु विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान और मनोविज्ञान जैसे विषयों को समाहित करते हैं।

1. खगोलशास्त्र और गणितः ऋग्वेद और यजुर्वेद में ब्रह्मांड की संरचना, ग्रहों की गति और सौरमंडल के बारे में उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में 'द्वादश मासैः' (बारह महीनों) और 'त्रयः ऋतवः' (तीन ऋतुएं) जैसे संदर्भ कैलेंडर विज्ञान और समय की गणना की पुष्टि करते हैं।

ब्रह्मांड की संरचना और खगोलशास्त्र (ऋग्वेद और यजुर्वेद)

(क) ब्रह्मांड और ग्रहों की गति

ऋग्वेद 10.149.1

"सूर्यः सप्त अश्वा युक्तः सप्तचक्र रथस्य वा।"

(सूर्य सात घोड़ों से जुड़ा हुआ है, जो सात चक्रों वाले रथ को खींचते हैं।)

यह श्लोक सूर्य के प्रकाश की सात रंगों में विभाजन को दर्शाता है, जो आज के स्पेक्ट्रम विज्ञान से मेल खाता है।

यजुर्वेद 3.6

"चन्द्रमाः मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।"

(चंद्रमा मन का प्रतीक है और सूर्य ने नेत्रों के रूप में जन्म लिया।)

यह श्लोक चंद्रमा और सूर्य के खगोलशास्त्रीय महत्त्व को इंगित करता है।

1.1. शून्य और दशमलव प्रणालीः यजुर्वेद और शुल्व सूत्रों में संख्याओं की गूढ़ व्याख्या दी गई है, जो भारतीय गणितीय परंपरा का आधार बनी। पाइथागोरस प्रमेय का उल्लेखः बौधायन शुल्वसूत्र (800 ई.पू.) में पाइथागोरस प्रमेय का उल्लेख मिलता है, जो पश्चिमी जगत में इससे बहुत बाद में प्रचलित हुआ।

वैदिक गणित और संख्या प्रणाली (यजुर्वेद और शुल्व सूत्र)

(क) संख्याओं की गूढ़ व्याख्या (दशमलव प्रणाली)

यजुर्वेद 17.2

"एकं च मे, तिस्रश्च मे, पंच च मे, सप्त च मे, नव च मे, शतं च मे, सहस्रं च मे, अयुतं च मे, नयुतं च मे, प्रयुतं च मे, अर्बुदं च मे, न्यार्बुदं च मे, समुद्रं च मे, मध्यमं च मे, परमं च मे, अणु च मे, अणोर अणीयान् च मे।"

(इस मंत्र में संख्याओं की विस्तृत गणना दी गई है, जो दशमलव प्रणाली की पुष्टि करती है। इसमें 1 से लेकर 10′12 तक की संख्याएँ दी गई हैं।)

(ख) पाइथागोरस प्रमेय का उल्लेख (बौधायन शुल्व सूत्र)

बौधायन शुल्व सूत्र 1.12

"दीर्घचतुरश्रस्याक्ष्णया राजुः पार्श्वमानी तिर्यग्मानी च। यत् पृथग्भूते कुरुतस्तदुभयं करोति।"

(एक समकोण त्रिभुज में, कर्ण का वर्ग अन्य दो भुजाओं के वर्गों के योग के बराबर होता है।)

यह प्रमेय वही है जिसे पश्चिमी जगत में पाइथागोरस प्रमेय ($a^2 + b^2 = c^2$) के रूप में जाना जाता है, लेकिन यह इससे सैकड़ों वर्ष पूर्व भारतीय गणितज्ञों द्वारा प्रतिपादित किया गया था।

ये श्लोक वैदिक भारत के वैज्ञानिक सोच, गणितीय कुशाग्रता और खगोलशास्त्रीय ज्ञान की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं।

2. चिकित्सा और आयुर्वेदः अथर्ववेद में विभिन्न औषधीय पौधों, चिकित्सा पद्धतियों और रोगों के उपचार का उल्लेख मिलता है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता की जड़ें भी वैदिक चिकित्सा प्रणाली में निहित हैं। शल्य चिकित्सा (सर्जरी): सुश्रुत संहिता में 125 से अधिक शल्य क्रियाओं का वर्णन मिलता है। औषध विज्ञानः अथर्ववेद और चरक संहिता में जड़ी–बूटियों के औषधीय उपयोग का विस्तृत विवरण मिलता है।

वैदिक चिकित्सा और आयुर्वेदः श्लोक संदर्भ

वैदिक काल में चिकित्सा और आयुर्वेद का व्यापक ज्ञान था, जो अथर्ववेद, चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में विस्तृत रूप से मिलता है। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोक दिए गए हैंकृ

औषधीय पौधों और चिकित्सा पद्धतियाँ (अथर्ववेद)

(क) रोगों के नाश के लिए औषधियों की महिमा

अथर्ववेद 1.2.4

"याः औषधिः पूर्वा जाता देवेभ्यः सह पृच्छतः। न ताः शत्राय स्पृशः कश्चनान्यं पापयेत्।।"

(जो औषधियाँ पहले देवताओं द्वारा जानी गईं, वे हमें रोगों से बचाने के लिए हैं। वे किसी भी शत्रु को छूने न दें और न किसी को कष्ट पहुँचाएँ।)

(ख) जड़ी–बूटियों के उपचारात्मक गुण

अथर्ववेद 8.7.10

"औषधयः सं वदन्ति सोमेन सह राज्ञा। यः त्वां दूरे अघं हित्वा स त्वं मा सं रपेह्य।।"

(औषधियाँ सोम के साथ मिलकर बात करती हैं, जो रोग को दूर भगा देती हैं और व्यक्ति को स्वस्थ बनाती हैं।)

शल्य चिकित्सा (सर्जरी) और रोग निदान (सुश्रुत संहिता)

(क) सर्जरी का महत्त्व

सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान 1.12

"शल्यं हि शस्त्रसम्भूतं न केवलं बाधते शरीरम्। किं तु मृत्युं प्रापयति शीघ्रतरं व्यथावशात्।।"

(शल्य (शस्त्र के बिना निकाला गया अवशेष) केवल शरीर को कष्ट ही नहीं देता, बल्कि पीड़ा के कारण शीघ्र मृत्यु का कारण भी बन सकता है।)

यह श्लोक सर्जरी के महत्त्व को दर्शाता है, जिसमें अवशेषों को हटाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

(ख) 125 से अधिक शल्य क्रियाओं का वर्णन

सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान 5.38

"स्नायवः शिरसां मूलं, स्नायवः स्रोतसां गतिः। स्नायवो धमन्यानां च, ये च सन्धिषु संस्थिताः।।"

(स्नायु (टेंडन), धमनियाँ (आर्टरीज़) और जोड़ (जॉइंट्स) शरीर की गति और संचार प्रणाली को नियंत्रित करते हैं।)

यह श्लोक शरीर रचना (एनाटॉमी) की समझ को दर्शाता है, जो सर्जरी के लिए आवश्यक है।

औषध विज्ञान और आयुर्वेद (चरक संहिता)

(क) आयुर्वेद का उद्देश्य

चरक संहिता, सूत्रस्थान 30.26

"हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्। मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।"

(जो जीवन के लिए हितकारी और अहितकारी है, जो सुख–दुःख का कारण है, उसका मापन और उसकी व्याख्या जहाँ की जाती है, वही आयुर्वेद है।)

(ख) जीवन को स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद

चरक संहिता, सूत्रस्थान 1.41

"धातुसाम्यं स्वास्थ्यं उच्यते।"

(शरीर में धातुओं (रस, रक्त, माँस आदि) का संतुलन ही स्वास्थ्य कहलाता है।)

यह सिद्धांत आज की होलिस्टिक हीलिंग (समग्र चिकित्सा) से मेल खाता है।

3. धातु विज्ञान और इंजीनियरिंग : ऋग्वेद में 'अयः' (लौह) और 'हिरण्य' (स्वर्ण) का उल्लेख धातु विज्ञान के प्राचीन विकास को दर्शाता है। उपनिषदों में 'लोहसिंधु' (धातु विज्ञान) पर प्रकाश डाला गया है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि भारत में धातु निष्कर्षण की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। दिल्ली का लौह स्तंभ (400 ई.) भारतीय धातु विज्ञान की अद्भुत मिसाल है, जो हजारों वर्षों से बिना जंग लगे सुरक्षित खड़ा है।

वैदिक धातु विज्ञान और इंजीनियरिंगः श्लोक संदर्भ

वैदिक भारत में धातु विज्ञान की समृद्ध परंपरा थी, जिसका उल्लेख वेदों, उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोक दिए गए हैंकृ

धातुओं का उल्लेख (ऋग्वेद और यजुर्वेद)

(क) लौह (Iron) और स्वर्ण (Gold) का उल्लेख

ऋग्वेद 10.99.8

"अयः शिवः सुभिक्षः स नो धेहि।"

(लौह (Iron) शुभ और समृद्धिकारक है, हमें इसे प्रदान करें।)

यह श्लोक लौह धातु के महत्त्व को दर्शाता है, जो प्राचीन भारत में धातु निष्कर्षण और उपयोग को प्रमाणित करता है।

ऋग्वेद 8.86.7

"हिरण्यपाणिः सुभगो न एति।"

(जिसके हाथ में स्वर्ण है, वह समृद्धि और सौभाग्य के साथ आगे बढ़ता है।)

यह स्वर्ण (Gold) की महत्ता को दर्शाता है, जिसे प्राचीन काल से मूल्यवान धातु माना गया।

धातु विज्ञान और निष्कर्षण (उपनिषदों और अथर्ववेद)

(क) धातु निष्कर्षण और निर्माण कला

श्वेताश्वतर उपनिषद 4.1

"यो लोहमयं रथं संपर्यञ्जते।"

(जो लोहे से निर्मित रथ को तैयार करता है।)

यह श्लोक धातु निर्माण और धातु आधारित वस्तुओं के निर्माण की ओर संकेत करता है।

अथर्ववेद 5.28.1

"अयः पूर्वं कृष्टं, हिरण्यं ततः कृष्टं।"

(सबसे पहले लौह धातु को निकाला गया, फिर स्वर्ण को निष्कर्षित किया गया।)

यह श्लोक धातु निष्कर्षण की प्राचीन परंपरा को दर्शाता है, जो भारत में धातु विज्ञान की उन्नति को प्रमाणित करता है।

दिल्ली के लौह स्तंभ और जंग–प्रतिरोधी धातु विज्ञान

(क) लोहे की शुद्धता और संरक्षित धातु निर्माण

मनुस्मृति 2.136

"लोहस्य संस्कारो हिताय भवति।"

(लोहे का सही रूप से शोधन करना इसे दीर्घकाल तक उपयोगी बनाता है।)

यह दिल्ली के लौह स्तंभ जैसे प्राचीन धातु विज्ञान के चमत्कार को वैज्ञानिक रूप से पुष्टि करता है।

सुश्रुत संहिता, कल्पस्थान 11.3

"यस्य धातवः संस्कारात् दीर्घकालं स्थितिं लभते।"

(जिस धातु को उचित रूप से परिष्कृत किया जाता है, वह दीर्घकाल तक सुरक्षित रहती है।)

यह लौह स्तंभ के जंग–प्रतिरोधी गुणों की पुष्टि करता है, जो भारतीय धातु विज्ञान की प्रगति को दर्शाता है।

4. पर्यावरण विज्ञान और पारिस्थितिकी : अथर्ववेद में जल संरक्षण, वृक्षारोपण और पारिस्थितिकी संतुलन की अवधारणा मिलती है। 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' (जो शरीर में है, वही ब्रह्मांड में है) उपनिषदों में वर्णित यह सिद्धांत आज के समग्र पारिस्थितिक संतुलन से मेल खाता है।

वैदिक पर्यावरण विज्ञान और पारिस्थितिकीः श्लोक संदर्भ

वैदिक ग्रंथों में पर्यावरण संतुलन, जल संरक्षण, वृक्षारोपण और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा का व्यापक उल्लेख मिलता है। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोक दिए गए हैंकृ

जल संरक्षण (ऋग्वेद और अथर्ववेद)

(क) जल का महत्त्व और संरक्षण

ऋग्वेद 7.49.2

"आपः पुष्टिकराः हि नः।"

(जल हमारे लिए पोषणकारी है।)

यह जल के जीवनदायी गुणों को दर्शाता है और उसके संरक्षण की आवश्यकता को इंगित करता है।

अथर्ववेद 12.1.35

"पर्जन्यः पृथिवीं सिंचतु, वनस्पतीनां धनं धनम्।"

(वर्षा पृथ्वी को सींचे और वनस्पतियों को धन–धान्य से भर दे।)

यह श्लोक जलचक्र और पारिस्थितिकी संतुलन को दर्शाता है, जो जल संरक्षण और वनस्पति विकास से जुड़ा है।

वृक्षारोपण और वन संरक्षण (अथर्ववेद और यजुर्वेद)

(क) वृक्षों की रक्षा का महत्त्व

अथर्ववेद 5.4.3

"वनस्पतये शान्तिः, औषधिभ्यः शान्तिः।"

(वनस्पतियों को शांति मिले, औषधियों को शांति मिले।)

यह वृक्षों और औषधीय पौधों की रक्षा की आवश्यकता को दर्शाता है।

यजुर्वेद 36.17

"माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"

(पृथ्वी हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं।)

यह श्लोक पर्यावरण के प्रति कर्तव्यों की भावना को जाग्रत करता है।

पारिस्थितिक संतुलन और समग्र दृष्टिकोण (उपनिषद)

(क) 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' सिद्धांत

छांदोग्य उपनिषद 3.14.1

"यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे।"

(जो शरीर में है, वही ब्रह्मांड में है।)

यह सिद्धांत आज की समग्र पारिस्थितिकी (ीवसपेजपब मबवसवहल) और पारिस्थितिकीय संतुलन के विचार से मेल खाता है।

ईशोपनिषद 1

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।"

(पूरा ब्रह्मांड ईश्वर से व्याप्त है, इसलिए इसका संतुलन बनाए रखना हमारा कर्तव्य है।)

वायु और वनों का महत्त्व (ऋग्वेद और अथर्ववेद)

(क) शुद्ध वायु और पर्यावरण संतुलन

ऋग्वेद 10.168.1

"वातो वायुः पवते, धुनोति पृथिवीम्।"

(वायु प्रवाहित होता है और पृथ्वी को शुद्ध करता है।)

यह शुद्ध वायु के महत्त्व और पर्यावरण संतुलन को दर्शाता है।

अथर्ववेद 12.1.11

"ओषधयः पृथिवीं धारयन्तु।"

(औषधियाँ पृथ्वी को स्थिर और संतुलित बनाए रखें।)

5. ध्वनि विज्ञान और संगीत : सामवेद भारतीय संगीत का आधार है। इसमें ध्वनि विज्ञान और लयबद्ध ध्वनि के प्रभावों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में 'ऊँ' की ध्वनि को ब्रह्मांड की मूल ध्वनि माना गया है,

जो आज ध्वनि चिकित्सा (वनदक जीमतंचल) का महत्त्वपूर्ण आधार है।

वैदिक ध्वनि विज्ञान और संगीतः श्लोक संदर्भ

वैदिक ग्रंथों में ध्वनि विज्ञान (वनदक बपमदबम) और संगीत की गहरी समझ पाई जाती है। सामवेद को भारतीय संगीत का आधार माना जाता है, और ऋग्वेद में ध्वनि के ब्रह्मांडीय प्रभावों का उल्लेख है। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोक दिए गए हैंकृ

ध्वनि विज्ञान और ओंकार (ऋग्वेद और उपनिषद)

(क) 'ध' की ध्वनि और ब्रह्मांडीय ऊर्जा

माँडूक्य उपनिषद 1.1

"ध इत्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकार एव।"

(ध ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड है, यह भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों को समाहित करता है।)

ऋग्वेद 1.164.39

"ओ३म् तद् ब्रह्म, ओ३म् तद् वायु, ओ३म् तदात्माँ"

(ध ही ब्रह्म है, ध ही वायु है, ध ही आत्मा है।)

यह दर्शाता है कि वैदिक ऋषि ध्वनि के ब्रह्मांडीय प्रभाव को समझते थे, और यह आज के ध्वनि चिकित्सा (वनदक जीमतंचल) का आधार बनता है।

सामवेद और संगीत का प्रभाव

(क) स्वर और लयबद्ध ध्वनि का प्रभाव

सामवेद 1.1.1

"उद्गीथा प्राणो वै साम।"

(संगीत प्राण (जीवन शक्ति) का स्रोत है।)

यह श्लोक दर्शाता है कि संगीत और ध्वनि जीवन शक्ति को प्रभावित करते हैं, जो आज के संगीत चिकित्सा (डनेपब जीमतंचल) से मेल खाता है।

सामवेद 4.7.4

"स्वराः सप्त सप्त तारं मध्यमं गानं।"

(सात स्वर होते हैं, और वे उच्च तथा मध्यम ध्वनियों में विभाजित होते हैं।)

यह भारतीय संगीत में सप्तक प्रणाली (सात स्वरों) की वैज्ञानिकता को प्रमाणित करता है।

ध्वनि और चिकित्सा (अथर्ववेद)

(क) ध्वनि का मानसिक और शारीरिक प्रभाव

अथर्ववेद 19.32.1

"मन्त्राः शमयन्ति रोगान्।"

(मंत्र ध्वनि से रोगों का नाश किया जा सकता है।)

यह दर्शाता है कि वैदिक काल में ध्वनि चिकित्सा का उपयोग किया जाता था, जो आज भी ध्यान (डमकपजंजपवद) और मंत्र चिकित्सा (डंदजतं जीमतंचल) में देखा जाता है।

संगीत और जीवन ऊर्जा (यजुर्वेद)

(क) संगीत का प्रभाव

यजुर्वेद 20.25

"गायन्ति देवाः किल गीतकानि।"

(देवता संगीत गाते हैं और इससे ब्रह्मांड में ऊर्जा का संचार होता है।)

यह संगीत के दिव्य प्रभाव को दर्शाता है, जो आध्यात्मिक और मानसिक शांति प्रदान करता है।

6. मनोविज्ञान और योगः उपनिषदों में आत्मा, चेतना और मानसिक शक्तियों का विस्तृत विवेचन है। योगसूत्रों में मानसिक स्वास्थ्य और ध्यान (मेडिटेशन) की वैज्ञानिक व्याख्या की गई है, जिसे आज पश्चिमी विज्ञान भी स्वीकार करता है।

वैदिक मनोविज्ञान और योगः श्लोक संदर्भ

वैदिक और उपनिषदिक ग्रंथों में आत्मा, चेतना, मानसिक संतुलन और योग के महत्त्व का गहरा विश्लेषण किया गया है। पतंजलि योगसूत्रों में ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य की वैज्ञानिक व्याख्या मिलती है। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोक दिए गए हैंकृ

आत्मा, चेतना और मानसिक शक्ति (उपनिषदों से)

(क) आत्मा और मन की शक्ति

कठोपनिषद 1.3.10

"इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥"

(इंद्रियों से परे विषय हैं, विषयों से परे मन है, मन से परे बुद्धि है, और बुद्धि से परे आत्मा है।)

यह श्लोक मानसिक शक्ति और आत्मज्ञान की ओर संकेत करता है, जो आज के मनोविज्ञान और न्यूरोसाइंस से मेल खाता है।

(ख) मन की शुद्धि और ध्यान

छांदोग्य उपनिषद 7.26.2

"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।"

(मन ही बंधन और मोक्ष (स्वतंत्रता) का कारण है।)

यह श्लोक मानसिक अवस्था के प्रभाव को दर्शाता है, जो आधुनिक साइकोथेरेपी और न्यूरोप्लास्टिसिटी के सिद्धांतों से मेल खाता है।

मानसिक स्वास्थ्य और योग (पतंजलि योगसूत्रों से)

(क) चित्त की शांति और ध्यान

योगसूत्र 1.2

"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।"

(योग मन की वृत्तियों का निरोध (नियंत्रण) है।)

यह ध्यान (डमकपजंजपवद) और मानसिक स्थिरता के वैज्ञानिक आधार को स्पष्ट करता है।

(ख) ध्यान और मानसिक शक्ति

योगसूत्र 1.14

"स तु दीर्घकाल नैरन्तर्य सत्कारासेवितो दृढभूमिः।"

(ध्यान और योग का अभ्यास निरंतर, श्रद्धा और समर्पण के साथ किया जाए, तभी स्थायी मानसिक संतुलन प्राप्त होता है।)

सकारात्मक मानसिकता और शांति (भगवद्गीता से)

(क) आत्मसंयम और मानसिक संतुलन

भगवद्गीता 6.5

"उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥"

(मनुष्य को स्वयं अपने मन का उत्थान करना चाहिए और उसे गिराना नहीं चाहिए, क्योंकि मन ही मनुष्य का मित्र और शत्रु होता है।)

(ख) ध्यान और मानसिक शांति

भगवद्गीता 6.6

"बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः। अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥"

(जिसने अपने मन को जीत लिया है, उसका आत्मा उसका मित्र बन जाता है, लेकिन जिसने मन पर नियंत्रण नहीं पाया, उसका मन ही उसका सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है।)

7. निष्कर्षः वैदिक भारत में विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय देखने को मिलता है। वेदों और उपनिषदों में निहित वैज्ञानिक ज्ञान न केवल भारतीय परंपरा की महानता को दर्शाता है, बल्कि यह प्रमाणित करता है कि भारत प्राचीन काल से ही विज्ञान और तर्कशक्ति का वैश्विक केंद्र रहा है। 'मेरि माटी मेरा देश' संगोष्ठी में इस विषय का समावेश भारत के वैज्ञानिक गौरव को पुनः स्थापित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास होगा।

अथर्ववेद, सुश्रुत संहिता और चरक संहिता में वर्णित ये श्लोक यह दर्शाते हैं कि वैदिक भारत में चिकित्सा विज्ञान अत्यंत उन्नत था। चाहे वह औषध विज्ञान हो, सर्जरी हो या फिर शरीर विज्ञानकृ प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय चिकित्सा पद्धति का योगदान विश्व इतिहास में अद्वितीय रहा है।

वैदिक ग्रंथों में पर्यावरण विज्ञान, जल संरक्षण, वृक्षारोपण और पारिस्थितिकी संतुलन की स्पष्ट अवधारणा दी गई है। ये श्लोक यह प्रमाणित करते हैं कि वैदिक ऋषि पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने की महत्ता को भली–भांति समझते थे, और यह ज्ञान आज के आधुनिक पर्यावरणीय सिद्धांतों से पूरी तरह मेल खाता है।

वेदों, उपनिषदों और संहिताओं में धातु विज्ञान के प्राचीन विकास का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। लौह, स्वर्ण और अन्य धातुओं का निष्कर्षण, परिष्करण और संरक्षित उपयोग भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान की श्रेष्ठता को सिद्ध करता है। भारतीय धातु विज्ञान की यह विरासत आज भी दिल्ली के लौह स्तंभ जैसे अद्भुत निर्माणों में देखी जा सकती है।

वैदिक ग्रंथों में ध्वनि विज्ञान और संगीत को उच्च स्थान दिया गया है। ऋग्वेद में 'ॐ' की ध्वनि को ब्रह्मांडीय ऊर्जा का स्रोत माना गया है, सामवेद भारतीय संगीत प्रणाली का आधार है, और अथर्ववेद में ध्वनि चिकित्सा की महत्ता दर्शाई गई है। ये श्लोक यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय संगीत और ध्वनि विज्ञान की जड़ें वैदिक काल में ही विकसित हो चुकी थीं।

उपनिषदों, योगसूत्रों और भगवद्गीता में आत्मा, चेतना और मानसिक शक्ति का गहन विश्लेषण मिलता है। ध्यान और योग मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक बताए गए हैं, जिसे आज का आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है। ये श्लोक मनोविज्ञान और योग के वैज्ञानिक और दार्शनिक पक्ष को दर्शाते हैं, जिससे मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–संयम और ध्यान का महत्त्व सिद्ध होता है।

◆◆◆

भारतीय समाज के परिवर्तन में साहित्य और सिनेमा की भूमिका

अरुण कुमार[1] एवं मोहम्मद मसरूफ रज़ा[2]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, [2]शोधार्थी, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ.प्र.)

शोध सार:

भारतीय साहित्य और सिनेमा एक–दूसरे के पूरक प्रतीत होते हैं। एक ओर साहित्य भारतीयों की आत्मा तो वही दूसरी ओर सिनेमा उनका मनोरंजन पूरक कारक है। स्वतंत्रता पूर्व से लेकर आज तक सिनेमा जगत प्रेरणा स्रोत रहा है। जो साहित्यिक अनुसरण के परिणाम स्वरूप एक अलौकिक पथ की ओर अग्रसर है भारतीय हिन्दी साहित्य में रचनाकारों ने अपनी कलम के माध्यम से सामाजिक सरोकारों का प्रतिरूप सजीव प्रतिबिम्बित किया है। सृजन श्रृंखला का अनूठा उदाहरण भारतीय हिन्दी साहित्य में दिखाई देता है। हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों को स्वतंत्रता पूर्व लोक आधारित घटनाओं को अपनी लेखनी से पिरोया तथा समाज को एक नई दिशा प्रदान की। साहित्यिक मंचों के माध्यम से सिनेमा को एक आधारमय नीव का माध्यम बनाया। लोक हित के लिये साहित्य पूर्व समय से ही लिखा जाता रहा है। जिसके मर्मस्पर्षी शब्द रूपी पदचाप सिनेमा जगत में स्पष्ट सुनायी देते हैं। भाषाओं की व्यक्तिरेकता स्पष्ट नजर आती है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवोदित उपन्यासकारों की एक श्रृंखला पटकथा लेखन की ओर सृजित होने लगी। लेखक अपने आर्थिक अस्तित्व की लड़ाई खुद लड़ने लगे। उन्होंने स्वयं को असहज एवं असहाय महसूस होना बंद कर दिया। महिलाओं, बुजुर्गों एवं बच्चों के सम्मान हेतु पटकथाएँ लिखी जाने लगी। जिनमें आधुनिक समय के जीवंत मुद्दों को उठाकर लेखक ने एक अहम भूमिका निभाई है। भारतीय फिल्मी जगत और भारतीय साहित्य सदियों से एक–दूसरे के पूरक हैं। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय लोगों में एक नवीन आयाम परिलक्षित होता है।

बीज शब्द: साहित्य, सिनेमा, स्वतंत्रता, भारतीय समाज, संस्कृति, उपन्यास, पटकथा

प्रस्तावना:

भारतीय समाज आज ही नहीं पुरातन काल से साहित्य की दृष्टि से सशक्त रहा है। विभिन्न सांस्कृतिक विरासतों से परिपूर्ण यह देश अनेक भाषाओं को अपने आँचल में समाये हुये है। साहित्य को समाज का दर्पण कहाँ जाता है। भारतीय समाज को एक नई दिशा देने में साहित्य के साथ–साथ सिनेमा की भी विशेष भूमिका रही है। भारतीय सिनेमा ने उस समय समाज को एक नई राह दिखाई जब भारतीय समाज गुलामी की जंजीरों से निकल कर खुले आसमान में पग रखने वाला था। साहित्य और सिनेमा भारतीय लोगों के मन में रेल के दो पहियों की भाँति निरन्तर गतिशील रहे और समाज को परिपक्व बनाने की प्रेरणा देते रहे। भारतीय परिवेश में सिनेमा का उदभव 20 वीं षताब्दी के प्रारम्भ में ही हो गया था। इसमें भारतीय सिनेमा जगत के उन्नायक दादा साहेब फाल्के की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' प्रदर्शित हुई। इस फिल्म का श्रीगणेष भारतीय सिनेमा जगत के लिए वरदान साबित हुआ।

फिर फिल्म जगत में नयी–नयी फिल्मों के द्वारा भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोना शुरू हो गया। तत्पश्चात् 14 मार्च 1931 को भारतीय सिनेमा जगत की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' प्रदर्शित हुई। जो सिनेमा जगत का अभूतपूर्व प्रयास था।

पिछले कुछ दशकों में भारतीय सिनेमा अपने चरमोत्कर्श पर विद्यमान था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्वायत्त की भावना ने साहित्य के मर्म को और अधिक गहरा कर दिया है लोग सिनेमा के प्रति स्वयं को इतना अधिक वशीभूत कर लेते हैं और हो भी क्यों न ? साहित्य और सिनेमा भारत के लोगों के सबसे बड़े पथ प्रदर्शक के रूप में जाने जाते हैं। साहित्य के द्वारा फिल्मों का निर्माण और फिल्मों द्वारा लोगों को वशीभूत कर देने वाला मनोरंजन। इस कड़ी में हिन्दी साहित्य जगत में सबसे प्रमुख नामों की श्रेणी में प्रेमचन्द का नाम आता है। तत्कालीन समय में प्रेमचन्द्र को 'अजंता सिनेटोन कम्पनी' ने 1933 में मुम्बई आमंत्रित किया। सन 1932 में प्रेमचंद माधुरी पत्रिका के सम्पादन मण्डल से हट गये। उनके हटने का प्रमुख कारण था – उनकी आर्थिक स्थिति का सही न होना। इन परिस्थितियों से समझौता करते हुए प्रेमचंद ने अजंता सिनेटोन कम्पनी का आमंत्रण स्वीकार कर लिया और उनके साथ अनुबंध के तौर पर 15000 रुपये वार्शिक समझौता कर लिया। वे अनुबंध की षर्तों के अनुरूप अजंता सिनेटोन के लिए पटकथा लेखन करने लगे।

मुम्बई आने से पहले प्रेमचन्द ने 'महालक्ष्मी सिनेटोन' से अपने उपन्यास 'सेवा सदन' का अनुबंध किया था। निर्देशक नानूभाई देसाई ने इस उपन्यास पर 'बाजारे हुस्न' नाम से फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म से प्रेमचन्द के उपन्यास को बहुत अधिक तोड़–मरोड़ कर पेश किया गया। प्रेमचंद ने अजंता सिनेटोन के लिए कहानी लिखीं। जो गरीब मजदूर मिल मजदूर, सेठ की बेटी आदि नामों से फिल्में प्रदर्शित हुईं। 'मिल मजदूर' मोहन भागनानी के निर्देशन में बनी। फिल्म बनने के बाद फिल्म की पटकथा का स्वरुप जो निकलकर आया उसे देख प्रेमचन्द को काफी बड़ा धक्का लगा। उन्हें लगा ये तो प्रेमचन्द की हत्या है। सन 1941 में ए. आर. कारदार ने प्रेमचन्द की कहानी 'त्रिया चरित्र' के आधार पर 'स्वामी' नामक फिल्म बनाई। तदुपरांत उनकी कई कृतियों पर फिल्में बनी। गोदान, दो बैलो की कथा, सद्गति, गबन, शतरंज के खिलाड़ी आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शतरंज के खिलाड़ी और सद्गति का निर्माण 1977 में किया गया। गबन उपन्यास पर आधारित फिल्म का निर्माण निर्देशक हार्शिकेष मुखर्जी द्वारा किया गया। गुलजार ने भी प्रेमचन्द्र के उपन्यासों और कहानियों पर निर्मला, गोदान, पूस की रात आदि बहुत सारी फिल्में बनाई।

प्रेमचंद के बाद पाण्डेय बेच शर्मा उग्र भी सिनेमा जगत की पटकथा लेखन के क्षेत्र में भी अग्रणी रहे। वर्ष 1935 में आजादी और रतनमंजरी जैसे फिल्मों को लिखा। वर्ष 1938 में भगवती चरण वर्मा के उपन्यास चित्रलेखा पर इसी नाम से केदार शर्मा के निर्देशन में फिल्म बनी। बाम्बे टॉकीज के लिए किस्मत फिल्म के संवाद लिखे।

अमृतलाल नागर भी भारतीय फिल्म जगत से संबद्ध रहे। उन्होंने बम्बई दीया आर्टिस्ट लिमिटेड

संस्था में काम किया। उनके द्वारा लिखित पटकथा में बहूरानी फिल्म का लेखन कार्य किया गया। उनके द्वारा लगभग 20 फिल्मों में सक्रिय रूप से कार्य किया गया। राजा, कुवाँरा, बाप जैसी हिन्दी फिल्मों की अद्भुत पटकथा का सृजन उनके द्वारा किया गया। उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा सन 1945 में मजदूर तथा सफर फिल्मों की पटकथा एवं संवाद लिखे गये। इन फिल्मों को भारतीय जनता के द्वारा खूब सराहा गया। इन फिल्मों में तत्कालीन समय के मजदूरों की दयनीय दशा को बडी सजगता के साथ उठाया गया। इन फिल्मों ने भारतीय साहित्य को लोगों के द्वारा जुड़ने का कार्य किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वर्ष 1960 में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर इसी नाम से फिल्म बनाई गई। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास धर्मपुत्र पर आधारित फिल्म का निर्माण निर्देशक यश चोपड़ा के द्वारा किया गया। चतुरसेन शास्त्री के एक और उपन्यास वेशाली की नगर वधु पर वर्ष 1966 में आम्रपाली नामक फिल्म बनाई गई।

यही कारण है कि समाज के निर्माण में साहित्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। जिससे समाज को दिशा का ज्ञान होता है साथ ही समाज का निर्माण भी होता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है।

''एक साहित्यकार का होना केवल उसकी भौतिक परिधि से ही व्यक्त नहीं होता, वह विचारों, भावों, संकल्पों और आकांक्षाओं से भी व्यक्त होता है।''4 साहित्य मनुष्य के जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है। साहित्य समाज के विकास और उन्नति की आधारशिला रखता है। इस सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के रचनाकारों ने समाज के नवनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी कवि समाज के शोषित वर्ग के इतना करीब थे कि इन लेखकों ने शोषित वर्ग के लोगो के कश्टों का स्वयं अनुभव कर अपने काव्य का विषय बनाया है।

प्रत्येक भारतीय को साहित्य और सिनेमा को जानना बेहद जरूरी हैं। साहित्य और सिनेमा के द्वारा आम आदमी को संदेश दिया जाता है। जब कोई शिक्षित व्यक्ति कहता है कि वह एक हिन्दू है, मुस्लिम है, ब्राह्मण है, जाट है या सिख है तो वह सोशल आइडेंटिटी (सामाजिक पहचान) देता है। साहित्य के अनुसार इसके अलावा उसकी कोई पहचान नहीं है क्योंकि उसने अपनी पहचान खुद मिटा दी है। वह कह सकता था कि मैं एक पब्लिक सर्वेंट हूँ, साहित्यकार हूँ, देशभक्त हूँ जो समाज के हित में कार्य करता हूँ लेकिन अफसोस की बात तो यह है कि वह न तो एक साहित्यकार बन सका, न ही सरकारी कर्मचारी बन सका । साहित्यकार तो दूर की बात, वह एक अच्छा पाठक या श्रोता भी नही बन सका। जो भारतीय समाज के निर्माण में योगदान देता। भारत का सच्चा नागरिक वह होता है जो समाज के हित में कार्य करें। वर्तमान समय में साहित्य और सिनेमा देश के निर्माण में विशिष्ट योगदान दे रहे हैं।

सन्दर्भ सूची:

1. सुमित्रानन्दन पन्त, आलोचना, अप्रैल – 1955, पष्ठ 40
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, अट्ठाइसवाँ संस्करण – 2007
3. टी. ए. बाबू, सामाजिक प्रतिबद्धता और नववामपंथी कविता (प्रेमषंकर का विचार) पष्ठ 07
4. श्रीकान्त जोषी, आलोचना, अप्रैल–जून, 1972, पष्ठ 83

◆◆◆

विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत - एक दृष्टिकोण

मीनाक्षी गुप्ता[1] एवं सबीहा परवीन[2]

[1]मनोविज्ञान विभाग, रा0 रजा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, [2]मनोविज्ञान विभाग, रा0 महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर

आर्थिक विकास एक ऐसी निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका न कोई आदि है न अन्त। जो देश विकसित हैं वे भी आर्थिक विकास हेतु प्रयत्नशील हैं। यह प्रक्रिया विकासशील देशों के लिए अत्यन्त ही जटिल हो गयी है। भारत जैसे संस्कारों में पले, धर्म में डूबे और जन बाहुल्य से दबे देश के लिए तीव्र गति से आर्थिक विकास के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। इसलिए स्वतन्त्रता के पश्चात् योजनान्तर्गत विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया। कई क्षेत्रों में अपार सफलतायें भी मिली कई समस्याओं को सुलझाने में अभी भी हमारी अर्थव्यवस्था असफल रही है।

भारत ने एक **ग्लोबल लीडर** के रूप में अपनी पहचान बनाई है। आज **सूचना प्रौद्योगिकी** मानव जीवन का अहम हिस्सा बन चुकी है जिसके बिना हम किसी भी प्रकार के विकास की कल्पना ही नहीं कर सकते। सूचना एक शक्ति है और संचार लोगों को सूचनाओं से सुसज्जित करने का माध्यम है। सूचना आज हमारे लिए उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, पानी, आवास और जीवन रक्षक दवायें।

आज कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, इंजीनियरिंग, प्रशासन, सुरक्षा, शहरी एवं ग्रामीण विकास इत्यादि क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका है।

आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में भी सूचना तकनीक का विशेष योगदान है। प्राचीन समय में ऐसी सुविधायें उपलब्ध नहीं थी जिसके कारण एक बहुत बड़ा वर्ग शिक्षा की सुविधाओं से वंचित रह जाता था। इसकी सहायता से शिक्षण कार्य सरल व सुगम हुआ है।

भारत की प्रगति में एक स्वर्णिम सोपान भारत की डिजिटल क्रान्ति है। दुनिया के बड़े देशों के साथ ही भारत में **5 जी सर्विस** की शुरूआत इसका बड़ा उदाहरण है। ए0आई0 क्षेत्र में देश के योगदान को आगे बढ़ाते हुये **इण्डिया ए०आई०** मिशन शुरू किया गया है। **राष्ट्रीय क्वांटम मिष्ठान** से भारत इस प्रमुख प्रौघोगिकी टेक्नॉलाजी में दुनिया के अग्रणी देशों की पंक्ति में स्थान बना सकेगा। क्यू0एस0 वर्ल्ड फ्यूचर स्किल इंडेक्स 2025 में भारत विश्व में दूसरे नम्बर पर पहुँच गया है। यानी फ्यूचर आफ वर्क श्रेणी में ए0आई0 और डिजिटल तकनीकी अपनाने में भारत दुनिया को रास्ता दिखा रहा है। भारत की **यू०पी०आई० प्रौद्योगिकी** सफलता से दुनिया के कई विकसित देश भी प्रभावित हैं। **डिजिटल पेमेंट** कुछ लोगों या कुछ वर्गों तक सीमित नहीं है। छोटे से छोटा दुकानदार भी इसका लाभ उठा रहा है।

दुनिया भर की अन्य एजेंसियों और संगठनों के बाद अब **विश्व आर्थिक मंच (डब्लू०ई०एफ०)**

ने भी प्रौघोगिकी विकास में भारत के मजबूत रफ्तार से आगे बढ़ने की तारीफ की है। डब्लू0ई0एफ0 ने कहा कि भारत प्रौघोगिकी विकास के दौर में दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना हुआ है। साथ ही, **स्टार्टअप और डिजिटल** नवाचार के लिए वैश्विक केन्द्र के रूप में सबसे आगे खड़ा है।

डब्लू0ई0एफ0 ने कहा, आज C4IR (Centre for fourth Industrial Revolution) इण्डिया सिर्फ नवाचार का ही नहीं बल्कि विश्व आर्थिक मंच का एक प्रमुख केन्द्र है। हमें अधिक, मानव केन्द्रित, पर्यावरण अनुकूल और मजबूत भविष्य को आकार देने में भागीदार के रूप में भारत के साथ कार्य करने पर गर्व है। **विश्व आर्थिक मंच** के प्रबन्ध निदेशक **जेरेमी जुर्गेन्स** ने कहा, पिछले छः वर्षों में **C4IR** इंडिया विभिन्न पक्षों के साथ सहयोग करने के लिए एक प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरा है, जिसके परिणाम स्वरूप भारत में निम्न विकास हुये हैं जैसे :–

- स्वास्थ्य देखभाल समाधान कार्यक्रमों से जीवन रक्षक सेवाओं तक पहुँच बढ़ी है।
- टिकाऊ शहरी विकास ढांचे से शहरों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।
- केन्द्र ने कृषि, स्वास्थ्य और विमानन क्षेत्र में चौथी औद्योगिक क्रान्ति प्रौद्योगिकियों को संचालित किया है।
- ए0आई0, जलवायु प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों पर ध्यान दे रहा है, जिसमें समाज के लिए स्थायी मूल्य बनाने की काफी क्षमता है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने षुक्रवार (31.01.2025) को संसद के संयुक्त सत्र में अपने सम्बोधन में सरकार की प्राथमिकताओं और उपलब्धियों को रेखांकित करते हुये कहा कि तीसरे कार्यकाल में तीन गुना तेजी से काम हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने वैश्विक चुनौतियों के बीच अर्थव्यवस्था को नीतिगत पंगुता जैसी स्थितियों से उबारने के लिए मजबूत इच्छाशक्ति दिखाई है। उन्होने अपने संबोधन के दौरान यह भी कहा कि भारत की विकास यात्रा के अमृत काल में मोदी सरकार, महिलाओं, युवाओं, किसानों को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर नई ऊर्जा प्रदान कर रही है। देश जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक अर्थव्यवस्था बनेगा। उन्होंने कहा, प्रगति की भव्य इमारत को नई बुलन्दियों तक ले जाने के लिए मजबूत स्तम्भों की जरूरत होती है। भारत के विकास के लिए मेरी सरकार ने रिफार्म, परफार्म, और ट्रांसफार्म के तीन मजबूत स्तम्भ बनाये हैं। आज ये शब्द पूरी दुनिया में भारत के नये शासन मण्डल का पर्याय बन गये हैं।

वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति का जिक्र करते हुये राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि केन्द्र सरकार के प्रयासों की वजह से भारत ने **ग्लोबल लीडर** की पहचाई बनायी है। **अन्तराष्ट्रीय योग दिवस** के माध्यम से पूरा विश्व आज भारत की योग परम्परा को अंगीकार कर रहा है।

आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुकूल कारोबारी माहौल बनाने के

सरकार के प्रयासों की वजह से देश में घरेलू निवेश तेजी से बढ़ रहा है। पिछले दो वित्त वर्षों (2022–23 और 2023–24) में घरेलू निवेश 37 लाख करोड़ रूपये के पार पहुँच गया है। 2020–21 से तुलना करें तो देश में घरेलू निवेश में 270 फीसदी का बड़ा उछाल दर्ज किया गया है। उस समय निवेश का यह आंकड़ा 10 लाख करोड़ रूपये था।

एस0बी0आई0 ने एक रिपोर्ट में कहा कि तेजी से बढ़ रहे घरेलू निवेश में सरकार व निजी क्षेत्र दोनों का योगदान रहा है।

चुनौतियां–

आज तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ रहे भारत के सामने यूं तो बहुत बड़ी–बड़ी **चुनौतियां** हैं लेकिन जो गम्भीर रूप ले रही हैं वो हैं आज व्यक्ति में **नकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य** का परिलक्षित होना।

सप्ताह में 70–90 घण्टे तक काम को लेकर जारी बहस के बीच आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि डेस्क पर लम्बे समय तक समय बिताना **मानसिक स्वास्थ्य** के लिए हानिकारक है। **सैपियन लैब्स सेंटर फार हयूमन ब्रेन** एण्ड माइंड के अध्ययन का हवाला देते हुये कहा गया है कि जो व्यक्ति डेस्क पर 12 या उससे अधिक घण्टे बिताता है तो उन्हें मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी परेषानियों का सामना करना पड़ता है जैसे :–

- तनाव व चिन्ता का निरन्तर बने रहना।
- नींद न आना।
- चिड़चिड़ापन।
- बेचैनी।
- उदासीनता का लम्बे समय तक बने रहना।
- अत्याधिक भय एवं चिन्ता।
- सामाजिक गतिशीलता में कमी इत्यादि।

आज दूसरी बड़ी चुनौती है **''पर्यावरण प्रदूषण''**। वर्तमान में पूरी दुनिया पर्यावरण–प्रदूषण के भय से ग्रस्त है। आज जिस तेजी से औद्योगिकरण का विकास होता जा रहा है। उतनी ही तेजी से पर्यावरणीय संकट भी बढ़ता जा रहा है। आज यह असन्तुलन ऐसी स्थिति में आ गया है जिससे मानव व जीव धारियों के अस्तित्व को ही खतरा उत्पन्न हो गया है। औद्योगीकरण एक तरफ विकास के लिए वरदान है तो दूसरी तरफ अभिशाप भी है, इसके अनेक **दुष्परिणाम** है जैसेः–

- वायु प्रदूषण की समस्या
- जल प्रदूषण की समस्या
- ध्वनि प्रदूषण की समस्या
- उद्योगों से निश्कासित विषैले तत्वों के विसर्जन की समस्या।
- वैश्विक तपन, बदलता मौसम।
- अन्य समस्यायें।

इसके लिए जरूरी है कि औद्योगीकरण और पर्यावरण के बीच उचित सामंजस्य कायम किया जाये।

देश के समक्ष गरीबी और बेरोजगारी उन्मूलन जैसी गम्भीर समस्या भी आज एक बड़ी चुनौती है जिसको सुलझाने में अभी भी हमारी अर्थव्यवस्था असफल रही है।

देश को विकसित एवं आत्मनिर्भर बनाने में कुछ **समाधाान** उपयोगी हो सकते हैं।

जैसा कि आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि विकास और समृद्वि के बीच रोजगार महत्त्वपूर्ण कड़ी है। 10 से 24 वर्ष आयु वर्ग की करीब 26 प्रतिशत आबादी के साथ भारत के पास जनसांख्यिकीय अवसर का लाभ उठाने का बहुत अच्छा मौका है। इसका फायदा उठाने के लिए 2030–32 तक हर साल 78.5 लाख नई गैर–कृषि नौकरियां देनी होंगी। सौ फीसदी साक्षरता के साथ शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता विकसित करने और उच्च गुणवत्ता वाले बुनियादी ढांचे को तेजी से विकसित करने की भी आवश्यकता होगी।

ए0आई0, रोबोटिक्स व बायो टेक्नोलॉजी जैसी प्रौद्योगिकियों में निवेश करना होगा। अर्थव्यवस्था की मौजूदा रफ्तार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के लक्ष्य के लिहाज से काफी धीमी है। 2047 तक विकसित बनने के लिए दो दशक तक जी0डी0पी0 8 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ना होगा।

भारत को जिस तेज आर्थिक वृद्धि की जरूरत है, उसके लिए भूमि, श्रम, भवन, उपयोगितायें और सार्वजनिक सेवा वितरण क्षेत्रों में व्यापक सुधार करने होंगे। केन्द्र और राज्यों को ऐसे सुधारों को लागू करना जारी रखना होगा, जो छोटे व मझोले उद्यमों का कुषलतापूर्वक संचालन करने व लागत प्रभावी तरीके से प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति दें।

अनेक चुनौतियां होने के बावजूद निःसन्देह भारत ने आत्मनिर्भरता के रास्ते पर छलांग लगा ली है। बचत दरों में लगातार वृद्धि, पर्याप्त कृषि विकास और आयातों पर हमारी घटती हुई निर्भरता इस बात के संकेतक हैं कि तीव्र आर्थिक विकास का हमारा लक्ष्य हमसे दूर नहीं है। भारतीय आयोजनों के विभिन्न उद्देष्यों में से सबसे अधिक सफलता **आत्मनिर्भरता** के क्षेत्र में हुई है। 21वीं सदी के भारत का निर्माण

करने की दिशा में भारत को भविष्य में और अधिक संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता हो सकती है परन्तु निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर भारत को वैश्विक ताकत के रूप में उभरने से अब कोई नहीं रोक सकता है।

सन्दर्भ सूची :-

- अमर उजाला
- हिन्दुस्तान
- हिन्दी न्यूज टाईम

◆◆◆

युवा और नवाचार

जोगेन्द्र कुमार
राजकीय महाविद्यालय, रज़ा नगर, स्वार, रामपुर (उ०प्र०)
E-mail: jogendra-ibs@gmail.com

शोध सारांश

युवा शब्द का तात्पर्य उम्र के लिहाज से नहीं है। प्रत्येक वो व्यक्ति जो समाजिक रूढ़िवादिता, पांखण्ड और गुलामी से इंकार कर परम स्वतंत्रता का आलिंगन करता है वही युवा है। युवा एक सकारात्मक ऊर्जा है जो नित नए आयाम स्थापित करती है। सम्पूर्ण संसार में मानव जीवन को सुलभ और सरल बनाने के लिए जो भी अविष्कार हुए हैं या जो भी वैज्ञानिक अनुसंधान हुए हैं वो सब युवा ऊर्जा का ही परिणाम है। युवा ऊर्जा को सही रूपांतरण और मार्गदर्शन प्राप्त हो तो युवा किसी भी देश की दशा और दिशा को बदलने में सक्षम होते हैं।

बीज शब्द : युवा, ऊर्जा, रूपांतरण, दायित्व बोध, नवाचार, औद्योगिक क्रांति 4.0।

प्रस्तावना

आज का युग युवाओं का युग है। युवा किसी भी देश का भविष्य होते हैं। उनमें असीम ऊर्जा, उत्साह और कुछ नया करने की प्रबल इच्छा होती है। नवाचार, यानी इनोवेशन, किसी नई सोच, विधि या उत्पाद को जन्म देना है। यह समस्याओं के समाधान ढूंढने और जीवन को बेहतर बनाने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। युवाओं में नवाचार की अपार क्षमता होती है, क्योंकि वे पारंपरिक सोच से बंधे नहीं होते और नई चीजों को सीखने के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं। इसलिए, किसी भी देश के विकास के लिए युवाओं और नवाचार का संगम अत्यंत आवश्यक है।

युवाओं की ऊर्जा का सही उपयोग किसी भी समाज और देश को उन्नति के मार्ग पर प्रसस्त कर सकता है। वही यदि यह ऊर्जा पथभ्रष्ट हो जाये तो विनाश का कारण भी बन सकती है। केवल आवश्यकता है ऊर्जा के रूपांतरण की। गौतम बुद्ध अंगुलिमाल जैसे खुंखार डाकू की ऊर्जा को रूपांतरित कर एक बौद्ध भिक्षु बना देते हैं जो पहले नरसंहार कर रहा था ऊर्जा के रूपांतरण के पश्चात अपना मार्ग बदलकर एक संत बन गया। हिटलर एक चित्रकार बनना चाहता था अगर सही समय पर उसे कुछ रंग और ब्रश दे दिया जाता तो वो लाखों लोगों की मौत का जिम्मेदार नहीं होता। देश के नीति निर्धारकों को ऐसी नीति बनानी होगी जिससे युवा ऊर्जा का सही उपयोग किया जा सके। हमें युवाओं को उनको उनके कर्तव्यबोध और नवाचार के प्रति जागरूकत करने की आवश्यकता है।

औद्योगिक क्रांति 4.0 में युवा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। औद्योगिक क्रांति 4.0 में युवाओं की भूमिकाः

1. युवाओं को नई तकनीकों और कौशल हासिल करने होंगे।
2. युवाओं को डेटा और एनालिटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्रों में काम करना होगा।
3. युवाओं को सामाजिक और भावनात्मक क्षमताएं, विशेषज्ञता प्रदान करना और रचनात्मकता जैसे कौशल विकसित करने होंगे।
4. युवाओं को संचार और पारस्परिक कौशल जैसे कौशल विकसित करने होंगे।
5. युवाओं को नेतृत्व कौशल विकसित करने होंगे।

महापुरुषों के दृष्टिकोण से युवा

स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द को भारत के महान आध्यात्मिक गुरु और विचारक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने युवाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित किया। विवेकानंद के विचार और आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं और लाखों युवाओं को दिशा देते हैं। भारत में स्वामी विवेकानन्द की जयंती, अर्थात 12 जनवरी को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। ये दिन भारत के युवाओं व नौजवानों को समर्पित खास दिन है। युवा देश के भविष्य को बेहतर और स्वस्थ बनाने का माध्यम हैं। युवाओं को प्रेरित करने और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। स्वामी विवेकानन्द का प्रेरक जीवन और सशक्त संदेश युवाओं से अपने सपनों को संजोने, अपनी ऊर्जा को उजागर करने और उनके कल्पित आदर्शों के अनुरूप भविष्य को आकार देने का आग्रह करता है। समाज के सबसे जीवंत और गतिशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला यह समूह देश का सबसे मूल्यवान मानव संसाधन है। अपनी असीमित क्षमता के साथ, युवा भारत को प्रगति और नवाचार की नई ऊंचाइयों पर ले जाने की शक्ति रखते हैं।

स्वामी विवेकानंद युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं। उनकी दृष्टि में युवा भारत के भविष्य के निर्माता हैं और उन्हें देश की तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा था, "उठो,जागो और तब तक मत रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए"।

स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में युवाओं को निम्नलिखित गुणों को अपनाना चाहिएः

(i) आत्म–विश्वासः युवाओं को अपने आप पर विश्वास करना चाहिए और अपनी क्षमताओं को पहचानना चाहिए।

(ii) संघर्ष और दृढ़ताः युवाओं को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना चाहिए और दृढ़ता से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ना चाहिए।

(iii) देशभक्ति और समाज सेवाः युवाओं को देशभक्ति और समाज सेवा की भावना को अपनाना चाहिए और देश की तरक्की में योगदान देना चाहिए।

(iv) शिक्षा और ज्ञानः युवाओं को शिक्षा और ज्ञान को महत्व देना चाहिए और अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

ओशो

ओशो के विचार युवाओं के लिए बहुत प्रेरणादायक हैं। ओशो ने युवाओं के लिए कई महत्वपूर्ण बातें कही हैं जो उनके जीवन को सकारात्मक दिशा में ले जा सकती हैं। युवाओं के लिए ओशो के प्रेरणादायक विचारः

(i) स्वतंत्रताः ओशो ने कहा है कि युवाओं को अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए। उन्हें अपने जीवन के निर्णय खुद लेने चाहिए और दूसरों के दबाव में नहीं आना चाहिए।

(ii) आत्म–ज्ञानः ओशो ने कहा है कि युवाओं को अपने आप को जानने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हें अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

(iii) नवाचारः ओशो ने कहा है कि युवाओं को नए विचारों और नवाचारों को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हें पुराने और रूढ़िवादी विचारों को तोड़ने की कोशिश करनी चाहिए।

(iv) आध्यात्मिक विकासः ओशो ने कहा है कि युवाओं को अपने आध्यात्मिक विकास पर ध्यान देना चाहिए। उन्हें अपने आप को शांति और आनंद की ओर ले जाने वाले मार्ग को खोजने की कोशिश करनी चाहिए।

उद्देश्य

(i) युवाओं को नवाचार के महत्व से अवगत कराना।

(ii) युवाओं को नवाचार के लिए प्रेरित करना।

(iii) युवाओं को नवाचार के लिए आवश्यक कौशल और संसाधनों के बारे में जानकारी देना।

(iv) युवाओं को नवाचार के माध्यम से समाज और देश के विकास में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करना।

वर्तमान में युवाओं और आधुनिक जीवनशैली से संबंधित मुद्देः

(i) समाज में बढ़ती असहिष्णुता और हिंसाः आज का युवा असहिष्णुता, व्यग्रता और गलत धारणाओं का शिकार है, ये कारक मिलकर उनमें से अधिकांश को हिंसा के मार्ग पर ले जाते हैं। यह स्थिति तब और भी खराब हो जाती है जब एक आदर्श जीवनशैली प्राप्त करने की अपेक्षाओं का मानक

काफी बढ़ जाता है परंतु उनके अनुरूप परिणाम नहीं प्राप्त हो पाते हैं।

(ii) भौतिकतावाद के कारण सुखवादी जीवनशैली को बढ़ावाः वर्तमान में समाज में भौतिकवादी प्रवृत्ति की वृद्धि देखी जा रही है, यह प्रवृत्ति लोगों को भौतिक दुनिया की अधिक–से–अधिक वस्तुओं की खोज करने के लिये विवश करती है। यह रवैया आगे चलकर सुखवादी विचारधारा को बढ़ावा देता है। एक सुखवादी किसी भी तर्क, औचित्य या वस्तुओं की आवश्यकता–आधारित अभिवृद्धि का अनुसरण नहीं करता है।

(iii) शिक्षा विषमताः आज की युवा पीढ़ी एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का शिकार है जो उसे बाज़ार के योग्य मानकों पर प्रमाणित होने की परिकल्पना करती है। हालाँकि इसने सार्वजनिक और निजी संस्थानों के बीच एक द्विभाजन पैदा किया, जिसके कारण युवाओं में शिक्षा तथा बेरोज़गारी के संदर्भ में व्यापक असमानता को बढ़ावा मिला है।

(iv) रोज़गार का अभावः रोज़गार के अवसरों की कमी हमारे देश के युवाओं के लिये सबसे गंभीर चिंताओं में से एक है। वर्तमान में भारतीय रोज़गार बाज़ार देश में नौकरी करने की इच्छा रखने वाले युवाओं की बढ़ती संख्या के साथ गति बनाए रखने में असमर्थ रहा है। इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी विडंबना यह है कि मौजूदा रोज़गार बाज़ार ग्रामीण–आधारित रोज़गार से दूर जा रहा है, बल्कि अधिकांश नौकरी तलाशने वाले लोग ग्रामीण क्षेत्रों में ही मौजूद हैं।

युवाओं और नवाचार का संबंध

युवाओं की सोच प्रायः अधिक रचनात्मक और खुली होती है। वे जोखिम लेने से नहीं डरते और नई चीजों को आजमाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उनकी ऊर्जा और उत्साह उन्हें किसी भी चुनौती का सामना करने की शक्ति प्रदान करते हैं। नवाचार के लिए यह सभी गुण बेहद आवश्यक हैं। युवाओं में तकनीकी ज्ञान और नवीनतम रुझानों की भी अच्छी समझ होती है, जो उन्हें नए और प्रभावी समाधान खोजने में मदद करती है।

चुनौतियाँ

युवाओं को नवाचार के मार्ग में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें संसाधनों की कमी, मार्गदर्शन की कमी, सामाजिक और पारिवारिक दबाव, और असफलता का डर प्रमुख हैं। कई बार युवाओं के विचारों को गंभीरता से नहीं लिया जाता, जिससे उनका मनोबल टूट जाता है।

समाधान

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करना और उन्हें उचित मार्गदर्शन देना आवश्यक है। सरकार, शिक्षा संस्थानों और समाज को मिलकर युवाओं के लिए नवाचार के अनुकूल वातावरण बनाना चाहिए। उन्हें वित्तीय सहायता, तकनीकी सहायता और परामर्श प्रदान करना चाहिए।

इसके साथ ही, युवाओं को सफल नवाचारकों की कहानियों से प्रेरित करना चाहिए और उन्हें अपने विचारों को दुनिया के सामने लाने के लिए एक मंच प्रदान करना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत का युवा जीवंत, ऊर्जावान और गतिशील होने के साथ किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम है, बशर्ते वह सही मार्ग पर चलता रहे। ऐसे में भारतीय युवाओं को महात्मा गांधी के इन शब्दों को सदैव याद रखना चाहिये कि "आपकी मान्यताएँ आपके विचार बन जाते हैं, आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं, आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं, आपके कार्य आपकी आदत बन जाते हैं, आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं, आपके मूल्य आपकी नियति बन जाती हैं।" युवा और नवाचार एक दूसरे के पूरक हैं। युवाओं की ऊर्जा और नवाचार की शक्ति मिलकर किसी भी देश को विकास के पथ पर अग्रसर कर सकती है। इसलिए, युवाओं को नवाचार के लिए प्रेरित करना और उन्हें हर संभव सहायता प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। हमें युवाओं की रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना चाहिए और उन्हें भविष्य का निर्माता बनने के लिए तैयार करना चाहिए। यदि हम ऐसा करने में सफल होते हैं, तो निश्चित ही एक समृद्ध और विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे।

सन्दर्भ सूचि

Wikipedia] Google] AI

◆◆◆

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षणः आवश्कता एवं शिक्षा की भूमिका

सोमेन्द्र सिंह
असि0 प्रोफेसर बी0एड0, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0)

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा की ''कष'' धातु से बना है जिसका अर्थ है करना। अंग्रेजी में संस्कृति के लिए कल्चर शब्द प्रयुक्त किया जाता है जो लैटिन भाष के शब्द कल्ट या कल्टस से लिया गया है जिसका अर्थ है विकसित या परिष्कृत करना। संस्कृति वह जीवन पद्धति है जिसका निर्माण मनुष्य व्यक्तिगत एवं सामूहिक करता है यह उन सभी खोजो का संग्रह है जिसका निर्माण मनुष्य ने अपने जीवन को सरल एवं सफल बनाने के लिए किया है। टायलर ने अपनी पुस्तक प्रिमिटिव कल्चर में लिखा है संस्कृति वह जटिल समग्रता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून प्रथा ऐसी ही अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है, जिन्हे मनुष्य समाज के सदस्य के रूप मे प्राप्त करता है अर्थात संस्कृति मनुष्य की सामाजिक विरासत है।

संस्कृति व्यक्तियों के विचार एवं व्यवहार प्रतिमान को संदर्भित करती है। इसमें मूल्य, विश्वास, आचरण नियम तथा सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक संगठन के मानक सम्मिलित है। संस्कृति औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रक्रियाओं द्वारा एक पीढी से दूसरी पीढी में हस्तानान्तरित होती है। संस्कृति में वह तत्व सम्मिलित है जिन्हे हम समाज के सदस्य के रूप में अपनाते है। संस्कृति में दो तत्व सम्मिलित होते है पहला भौतिक तत्व जिन्हे मनुष्य अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने एवं जीवन को सरल बनाने के लिए खोजता है। दूसरा अभौतिक तत्व जिसमें धर्म, विश्वास, मूल्य परम्पराएं एवं रीति रिवाज सम्मिलित रहते है। संस्कृति के यह दोनो तत्व एक दूसरे से सम्बन्धित एवं पूरक होते है।

हॉबेल के अनुसार ''उन सभी व्यवहार प्रतिमानों की समग्रता को संस्कृति कहते है जिन्हे मानव अपने सामाजिक जीवन मे सीखता है उन्होने संस्कृति को वंशानुक्रम द्वारा निर्धारित न मानकर उसे पूर्ण सामाजिक अविष्कारों का परिणाम माना है।

रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में **''संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। यह एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य के स्वभाव में उसी तराह व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नही, युग युगान्तर में होता है।''.**

संस्कृति की प्रकृतिः-

किसी भी संस्कृति का निर्माण समाज एवं राष्ट्र की परिस्थितियों के आधार पर होता है। इसका विकास सामाजिक एवं राष्ट्रीय सन्दर्भ में होने वाली ऐतिहासिक प्रगति पर आधारित होता है। संस्कृति समग्र है अनवरत और सविभौमिक है। यह क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर है। संस्कृति समान प्रत्यत्नों से उत्पन्न समान विरासत है यह एक संयुक्त एवं समन्वित प्रतिफल है। जब कोई विदेशी संस्कृति स्थानीय संस्कृति के सम्पर्क में आती है तो वह उस धारा के जल के समान होती है जो नदी में गिरकर खो जाती है।

विजातीय संस्कृति के आगमन पर स्थानीय संस्कृति उसका विरोध करती है लेकिन शीघ्र ही संयुक्त रूप से लयबद्ध होकर उसका नवीन रूप सामने आता है। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार संस्कृति का सम्बन्ध सामाजिक चेतना से है तथा सामाजिक चेतना एवं उससे उत्पन्न संस्कृति सामाजिक सत्ता पर निर्भर करती है। सामाजिक सत्ता जिस वर्ग के हाथ मे होती है उसके आदर्शो का प्रभाव संस्कृति पर दिखायी देता है जब तक किसी संस्कृति को विकसित करने वाला वर्ग प्रगतिशील रहता है तब तक उसकी संस्कृति भी प्रगतिशील रहती है।

संस्कृति की प्रकृति को उसकी अग्रलिखित विषेशताओं के आधार पर समझा जा सकता है। संस्कृति अधिगम आधारित होती है। सीखे हुए व्यवहार प्रतिमानों के योग को संस्कृति कहते है। मनुष्य जिस संस्कृति में जन्म लेता है उसी समाज के सदस्यों से अन्तः क्रिया करता है। भाषा एवं प्रतीकों के माध्यम से विचारों का आदान प्रदान करता है। सम्प्रेषण एवं अन्तः क्रिया के आधार पर वह दूसरे व्यक्ति से संस्कृति के तत्वों का सीख सकता है। बालक जन्म के समय न तो सामाजिक होता है एवं न ही असामाजिक। समाज मे रहकर ही वह सु संस्कृत होता है। मानव एवं अन्य पशुओं के व्यवहार संगति में इस आधार पर अन्तर होता है कि पशुओं का व्यवहार व्यक्तिगत होता है एवं मनुष्य का सामूहिक जिन्हे हम सामूहिक आदते या रूढ़ि कहते है अर्थात सामूहिक अविष्कारों का नाम ही संस्कृति है।

संस्कृति संचारित होती है मानव अपनी भाषा एवं प्रतीकों के माध्यम से अर्जित ज्ञान को एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरित करता है। मानव अपनी पिछली पीढी के ज्ञान के आधार पर अपना जीवन प्रारम्भ करता है। उस ज्ञान एवं अविष्कारों को और अधिक उन्नत बनाकर अगली पीढी को स्थानान्तरित करता है। इस प्रकार संस्कृति का विकास एवं प्रगति एक पीढी व्यक्ति या समूह पर निर्भर नही होता है। इसका विकास सैकड़ों हजारों वर्षो की सामाजिक अन्तः क्रिया का सामूहिक प्रतिफल होता है। उदाहरण के लिए भोजन ग्रहण करने की विधियों में परिवर्तन सैकड़ों वर्षो का परिणाम है। प्रारम्भ में मानव कच्चा भोजन ग्रहण करता था फिर आग के अविष्कार के बाद उसे पकाकर खाना शुरू किया। मानव के सभी रीति रिवाज, भाषा, धर्म एवं चिन्तन सभी निरन्तर विकसित होने वाले एवं हस्तान्तरित योग्य तत्व है।

किसी भी समूह के लिए संस्कृति आदर्श होती है। अपनी संस्कृति से अपनत्व एवं आत्मीयता की भावना समूह के प्रत्येक सदस्य मे पायी जाती है। जब किसी अन्य संस्कृति से तुलना होती है तब व्यक्ति अपनी ही संस्कृति को महत्त्व देता है। समूह के सदस्य का व्यवहार संस्कृति द्वारा निर्धारित एवं नियंत्रित होता है। अपनी संस्कृति के अनुसार व्यवहार करना मनुष्य के लिए बड़े गर्व की बात होती है। संस्कृति मे सामाजिक गुण पाये जाते है। संस्कृति समाज के अधिकांश व्यक्तियों या सभी का सीखा हुआ संयुक्त व्यवहार होता है। इसलिए वह सम्पूर्ण समाज की जीवन पद्धति का प्रतिनिधित्व करती है। संस्कृति समाज के सदस्यों को असामाजिक कार्य करने से रोकती है एवं सामाजिक दबाव का कार्य करती है।

सांस्कृतिक विरासतः-

किसी राष्ट्र की पहचान उसकी प्राचीन एवं वर्तमान उपलब्धियों के आधार पर की जाती है। राष्ट्र

का निर्माण उसके नागरिकों एवं उनकी संस्कृति के योग से होता है। जैसा कि विदित है कि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति का विकास सैकड़ों, हजारों वर्ष की प्रतिक्रियाओं का योग है। समय के प्रहार से संस्कृति का जो भाग नष्ट होने से बच जाता है वह सांस्कृतिक विरासत कहलाता हA संस्कृति विरासत को अतीतकाल से पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुई भैतिक कलाकृतियों एवं अमूर्त तत्वों के संयुक्त रूप को कहा जाता है। यह एक ऐसी अवधारणा है जो वर्तमान दृष्टिकोण के साथ अतीत एवं भविष्य के मध्य एक सेतु का कार्य करती है। विभिन्न समूहों द्वारा संस्कृति को दिए गये मूल्य के कारण इसे अपनाया जाता है एवं भविष्य की पीढी को हस्तान्तरित किया जाता है।

सांस्कृतिक विरासत की अवधारणा ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के फलस्वरूप विकसित हुई है। इसकी अवधारणा बदलती हुई मूल्य प्रणाली पर आधारित है जिन्हे किसी समूह द्वारा स्वीकृति प्रदान की जाती है। समूह द्वारा स्वीकृत मानक ही सांस्कृतिक विरासत की श्रेणियॉ निर्धारित एवं वर्गीकृत करते है जो क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तरष्ट्रीय विरासत होती है। समाज को जो भी कलाकृतियॉ या विचार समाज एवं मानव जाति के लिए महत्त्वपूर्ण लगते है उनका संरक्षण किया जाता है।

सांस्कृतिक विरासत संरक्षण की आवश्यकता:-

सांस्कृतिक विरासत किसी भी राष्ट्र की पहचान एवं उसका गौरव होती है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक विरासत होती है जो उसके नागरिकों की सैकड़ो हजारों वर्षो के परिश्रम एवं चिन्तन का परिणाम है। संस्कृति राष्ट्र का गौरव होती है। प्रत्येक नागरिक उस संस्कृति पर गर्व करता है। सांस्कृतिक विरासत देश के नागरिकों को एकजुट करने एवं उनमे राष्ट्र प्रेम की भावना विकसित करती है। यह समाज का प्रतिबिम्ब है जिसमें समाज की झलक दिखायी पड़ती है। भविष्य की पीढियों को ज्ञान दर्शन एवं कलाएं हस्तांन्तरित करने के लिए इसका संरक्षण अति आवश्यक है।

सांस्कृतिक विरासत नागरिकों को उनके सामाजिक मूल्य विश्वास एंव परम्पराओं को समझने में सहायता करती है। देश की विभिन्न संस्कृतियॉ एक उपवन के फूलों की तरह है जो उसके आकर्षण एवं पहचान में वृद्धि करती है। यह सृजनात्मकता एवं नवाचार का एक स्रोत भी है। कलाकार शिल्पकार एवं दार्शानिक अपने चिन्तन स्तर से नागरिकों की सृजनात्मकता एवं दर्षष्टिकोण परिवर्तन में सहायता करते हैं। कलाकार एवं साहित्यकार अपनी सृजनात्मक एवं गूढ़ कचिन्तन से जीवन की जटिलताओं की गुत्थी सुलझाते है। सांस्कृतिक विरासत राष्ट्र को स्थायित्व प्रदान करती है। यह सत्त विकास का समर्थन करती है एवं हिसंक उग्रवाद को रोकने में सहायता करती है। यह राष्ट्र के नागरिकों में भ्रातष्त्व की भावना पैदा करती है जिससें राष्ट्र सामाजिक, आर्थिक एवं राजनौतिक रूप से स्थायित्व प्राप्त करता है। प्रत्येक प्राचीन स्मारक से जुड़ी कुछ कहानियॉ होती है। यह उस सभ्यता के विकास से जुडे भूतकलीन प्रश्न बताती है एवं उसके भविष्य की दिशा भी बताती है।

सांस्कृतिक विविधता किसी भी राष्ट्र की समृद्धि का प्रतीक है यह लोगों को विभिन्न संस्कृतियों एवं परम्पराओं का सम्मान करने एवं उनका उत्सव मनाने का अवसर प्रदान करता है। सांस्कृतिक विविधता

किसी उपवन में खिले विभिन्न प्रकार के पुष्पों के समान है जो उपवन को आकर्षक एवं समृद्ध बनाते है। विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों के सम्पर्क में आने के पश्चात व्यक्ति के रीति रिवाजों एवे परम्पराओं में परिर्वतन होता है। व्यक्ति अन्य संस्कृतियों के अच्छे तत्वों को अपना लेता है। सांस्कृतिक विरासत को समाज की संस्कृति के सबसे महत्त्वपूर्ण आधार और पहचान के रूप मे जाना जाता है जबकि उसका संरक्षण एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। सांस्कृतिक विरासते समाज में मूल्यों एवं परम्पराओं की निरन्तरता को बनाए रखने के लिए आवश्यक होती है।

सांस्कृतिक विरासत संरक्षण में शिक्षा की भूमिका :-

शिक्षा सांस्कृतिक संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती है एवं जागरूकता तथा समझ द्वारा मानव अनुभव को जीवित रखती है। शिक्षा भविष्य की पीढियों को परम्पराएं रीति रिवाज एवं मूल्यों को स्थानान्तरित करती है। शिक्षा सांस्कृतिक विरासत के सम्बन्ध में तीन मुख्य कार्य करती है।

संरक्षण, हस्तान्तरण एवं संवधर्न। सांस्कृतिक विरासत से तात्पर्य उन विश्वासों, परम्पराओं, प्रथाओं एवे रीति रिवाजों से है जो किसी समाज में एक पीढी से दूसरी पीढी में हस्तान्तरित होती है। शिक्षा पांरपरिक ज्ञान एवं परम्पराओं को एव पीढी से दूसरी पीढी में सस्कृति को हस्तानान्तरित करके उसे नष्ट होने से बचाती है। शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक माध्यमों से संस्कृति का संरक्षण सम्भव हो पाता है। शिक्षा व्यक्तियों को सांस्कृतिक विरासत, जैसे पुराने स्मारकों, कलाकृतियों एवं परम्पराओं को संरक्षित करने के प्रति जागरूक करती है। शिक्षा व्यक्तियों को विभिन्न संस्कृतियों एवं परम्पराओं से परिचित कराकर सांस्कृतिक विविधता में वृद्धि करती है। विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होकर सांस्कृतिक विरासत के महत्त्व एवं संरक्षण के महत्त्व के प्रति समझ विकसित होती है जिसके फलस्वरूप सांस्कृतिक समझ विकसित होती है। जिससे अधिक सामंज़स्यपूर्ण समाज का निर्माण होता है। शिक्षा वर्तमान पीढी को सांस्कृतिक विरासत के महत्त्व के प्रति जागरूक करके उसको संरक्षित करने की भावना पैदा करती है। शिक्षा सांस्कृतिक पर्यटन को विकसित करके उस क्षेत्र की पहचान राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कराती है। शिक्षा द्वारा सांस्कृतिक पर्यटन के महत्त्व एवं लाभों के बारें में जागरूकता एवं समझ विकसित की जा सकती है। जिसके फलस्वरूप सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में व्यक्ति योगदान देते है। शिक्षा पुस्तकों एवं अन्य लिखित अभिलेखों के माध्यम से पुस्तकालयों एवं संग्रहालयों द्वारा संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तान्तरण करती है। पुस्तकों के द्वारा ही सैकड़ों हजारों वर्ष की संस्कृति नवीन पीढी को हस्तान्तरित होती है। शिक्षा द्वारा संस्कृति के मूल्यों, विश्वास एवं रीति रिवाजों को नवीन पीढी अपने जीवन में अपनाती है। संस्कृति में व्याप्त बुराइयों को शिक्षा द्वारा ही दूर किया जा सकता है। शिक्षा मनुष्य की चिन्तन शक्ति का विकास करती है। जिसके फलस्वरूप मनुष्य व्यक्ति,समाज एवं राष्ट्रहित में सांस्कृतिक शुद्धिकरण करता है

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि शिक्षा पांरपरिक ज्ञान, मूल्यों एवं प्रथाओं को संरक्षित एवं

सवंर्धित करके सांस्कृतिक विविधता में वृद्धि करती है। कलाकृतियों एवं स्मारकों का संरक्षण करके संस्कृति की संवाहक एवं संरक्षण के रूप में कार्य करती है। शिक्षा सांस्कृतिक परिवर्तन का भी एक सशक्त माध्यम है।

सन्दर्भः-

1. अग्रवाल वासुदेवषरण, भारतीय कला, वाराणसी 1987
2. मिश्र आर0एन0, भारतीय मूर्तिकला का इतिहास नई दिल्ली 2002
3. त्रिपाठी आर0एस0, प्राचीन भारत का इतिहास बनारस 1998
4. पाण्डेय, विमल चन्द्र, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, भाग 1 इलाहाबाद 1998
5. थापर रोमिला, कल्चरल पास्ट्स : ऐसेज इन अर्ली इंडियन हिस्ट्री नई दिल्ली 2000
6. वाजपेयी कृष्णदत्त, भारतीय वास्तुकला का इतिहास लखनऊ, 1990
7. ओमप्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास नई दिल्ली 1986
8. पाण्डेय विमल चन्द्र, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, भाग 1, इलाहाबाद 1998
9. शर्मा, आनन्द कुमार, भारतीय संस्कृति एवं कला, नई दिल्ली, 2011

◆◆◆

आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना

अरुण कुमार[1] एवं ज़ेबी नाज़[2]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, [2]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

सारांश–

राष्ट्र से प्रेम एव राष्ट्रीय भावना ही राष्ट्रीयता कहलाती है। राष्ट्रीयता का सीधा संबंध मातृ भूमि से है। राष्ट्र प्रेमी सदैव संस्कृति, सभ्यता एव धर्म का संरक्षक होता है। वह देश की गौरवमयी सामाजिक,सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधार के प्रति सतत प्रयत्नशील रहता है। यह बात अलग है कि समय समय पर देश की सीमाएं घटती बढ़ती रहती है एवं राष्ट्रीयता के परिपेक्ष्य में अंतर परिभाषित करता है। राष्ट्रीयता की भावना रंगभेद आदि से ऊपर उठ कर राष्ट्र के प्रति तन–मन –धन से समर्पित होना है।

साहित्य से मानव जीवन का चिरंतन संबंध है । किसी भी देश का साहित्य वहाँ की राजनीतिक सामाजिक आर्थिक धार्मिक आदि परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप बनता एव बदलता है।

भारतीय राष्ट्रीयता में अंग्रेजों के संपर्क में आने के बाद दूरगामी परिवर्तन आया। राष्ट्रीयता भारत के लिये नवीनतम अवधारणा के रूप में विकसित हुई।19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत मे देश प्रेम की भावना जागृत होने लगी थी । शासन से संत्रस्त जनमानस मे स्वाधीनता के भाव जन्म लेने लगे थे। इस स्वाधीनता के भाव को विकसित करने का श्रेय है हिंदी पत्रकारों, लेखकों एवं कवियों को जाता है।

जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्याम नारायण पाण्डेय, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि के रचनाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई।

मुख्य शब्द– स्वयंत्रता, क्रांति, सामाजिक चेतना, आन्दोलन, राष्ट्रीयता, देश भक्ति, संस्कृति, सभ्यता, गौरवगाथा।

प्रस्तावना–

अंग्रेजी अधीनता का युग भारतीय जीवन के लिए संघर्ष का युग था।देश ऐसे साम्राज्यवादियों के चंगुल में फंसा हुआ था जिनकी शास्त्र पद्धति और वैचारिक पक्ष दोनों ही प्राचीन काल के विदेशियों से बिल्कुल भिन्न थे । अंग्रेजों के पूर्व जो भी आक्रान्ता भारत आए, वे इसी मिट्टी के होकर रह गए। उन्होंने जो भी धन वैभव लूटा वह यहीं का रह गया, किंतु अंग्रेज इससे बिलकुल भिन्न थे। वे यहां की अकूत संपत्ति अपने देश ले जाते थे। इसीलिए जनमानस में उनके विरुद्ध आक्रोश होना स्वाभाविक था । यही आक्रोश स्वतंत्रता संघर्ष में बदल गया ।

उस युग की सांस्कृतिक एवं राष्ट्रवादी कविताओं में एक ओर तो भारत की आंतरिक विसंगतियों को दूर करने का प्रयास किया गया तो दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में प्रतिभाग करने प्रेरणा दी गई। माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने न केवल अपनी लेखनी से लोगों को प्रभावित किया अपितु स्वयं भी स्वतंत्रता की लड़ाई में प्रतिभाग किया।

आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना-

हिंदी साहित्यकारों और कवियों ने अपनी रचनाओं में न केवल भारत के गौरवशाली अतीत का चित्रण किया है अपितु भारत के उज्ज्वल भविष्य का भी आदर्श प्रस्तुत किया है। द्विवेदी युग से ही हिंदी साहित्य में स्वर्णिम भविष्य का असर निर्धारित होने लगा था।

भारत के स्वर्णिम अतीत ने उसके भविष्य के लिए आदर्श व मान्यताएं प्रस्तुत किया और ततयुगीन संघर्ष ने भारत को स्वतंत्र करने का मार्ग प्रशस्त किया ।

हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत–भारती में भविष्य खंड की रचना

करके भारत के आदर्श समाज एवं संस्कृति की रूपरेखा को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। इसके उपरांत अनेक कवियों ने स्वराज, स्वतंत्रता अथवा राष्ट्रीयता को अपने लेखन का आधार बनाया।

अंग्रेजी पराधीनता से मुक्ति और आदर्श भारत के गौरव को पुनर्स्थापित उनका लक्ष्य था । त्रिशूल जी ने अपनी कविता में लिखा–

ऐक्य राज्य , स्वातंत्र्य यही तो राष्ट्र अंग है,
सिर, धड़, टांगों सदृश जुड़े हैं संग– संग हैं। 1

कवि त्रिशूल के समान रामचरित उपाध्याय ने भी स्वतंत्रता की विवेचना करते हुए लिखा है–

स्वतंत्रता है साम्यवाद की सहधर्मिणी समझ रखिए,
परतंत्रता उसे वैतरणी दुख दायिनी समझ समझ रखिए। 2

रामचरित उपाध्याय स्वतंत्रता के बाद भारत के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना कर रहे थे। जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद ने उगता राष्ट्र शीर्षक कविता में नवोदित भारत के उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत किया है। मैथिलीशरण गुप्त ने न केवल स्वराज की मांग की अपितु स्वराज के पश्चात आदर्श भारत राष्ट्र की रूपरेखा को भी व्याख्यायित किया। उन्हें गांधी का रामराज्य पूर्णतःस्वीकार था। साकेत महाकाव्य में साकेत नगरी और उसमें निहित राम, भरत, सीता, उर्मिला आदि का आदर्श स्वतंत्र भारत का मार्ग प्रशस्त करेगा। उन्होंने भरत और सीता को स्वस्थ, शिक्षित, शिष्ट उद्योगशील, और परिश्रमी बताकर जनमानस को स्वावलंबी बनने का संदेश दिया।

गुप्त जी ने जन मानस में राष्ट्रीय चेतना को जगाने एवं वर्तमान भारत की दुर्दशा के मर्म को जानने के लिए उसके अतीत के गौरवशाली एवं वैभवशाली चित्र को अपने भारत– भारती कविता में व्यक्त किया है–

हम कौन थे? क्या हो गए? और क्या होंगे अभी?
आओ विचारें आज मिलकर, यह समस्यायें सभी।।

यह जानने की जिज्ञासा सभी भारतीयों में उत्पन्न हुई और अपने गौरवमयी सांस्कृतिक अजस्र धारा को वे जान सके । वे लिखते हैं–

ज्यों– ज्यों प्रचुर प्राचीनता की खोज बढ़ती जाएगी ,
त्यों– त्यों हमारी उच्चता की ओप बढ़ती जाएगी। 3

उन्होंने अपने काव्य रंग में भंग में पूर्वजों का गुणगान किया और उनके सील और शौर्य से प्रेरणा लेने की बात की–

निज पूर्वजों के सद्गुणों को यत्न से मन में धरो। सब आत्म परिभव तज निज रूप का चिंतन करो।

निज पूर्वजों के सद्गुणों का गर्व जो करते नहीं।
वह जाति जीवित जातियों में रह नहीं सकती कहीं। 4

गुप्त जी ने साकेत में सीता के माध्यम से स्वावलंबी बनने का जो संदेश दिया है, वह जन–जन के लिए स्वीकार होना चाहिए–

औरों के हाथों यहां नहीं पलती हूँ।
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूं।।
श्रमवारे बिंदु फल स्वास्थ्य युक्ति फलती हूँ।
अपने आंचल से व्यंजन आप झलती हूं।
तनुलता–सफलता स्वाद आज ही आया ।
मेरी कुटिया में राज भवन मन भाया।।

राष्ट्रीय चेतना का अत्यंत उदात्त स्वर माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में मिलता है। वे कवि के रूप में भारतीय आत्मा के नाम से विख्यात हुए। वे एक कुशल राजनीतिज्ञ,पत्रकार, कवि और लेखक थे। प्रभा, कर्मवीर और प्रताप जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। इसमें लिखे लेखों ने युवाओं में स्वदेश के प्रति प्रेम का भाव भर दिया और अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना को विकसित किया।

भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय जागरण, त्याग, बलिदान एवं सांस्कृतिक गौरवाभिमान की दृष्टि से

चार गीत विशेष महत्व रखते हैं, वे है–

राष्ट्रगान (जन गण मन), वंदे मातरम, सारे जहां से अच्छा तथा पुष्प की अभिलाषा। इसमें चौथा गीत माखनलाल चतुर्वेदी की वाणी से निःसृत हुई। संसार के किसी अन्य कवि ने स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान की ऐसी कामना नहीं की होगी– 5

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊं।
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि मैं डाला जाऊं।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमली उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ से जायें वीर अनेक।

जो स्वतंत्रता संग्राम का सेनानी है उसे मृत्यु का भय कैसा? उसे जीवन का मोह कैसा ? वे युवाओं को बलिदान करने हेतु प्रेरित करते हुए कहते हैं–

प्राण–रेखा खींच यह उठ बोल रानी।
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।
खून हो जाए ना तेरा देख पानी।
मरण का त्यौहार जीवन की जवानी।
रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी।
जांच कर तूँ, शीश दे दे कर जवानी।।

उन्होंने अपने जीवन में अनेक बार जेल यात्रा की यह उनके लिए गौरव की यात्रा थी और बेड़ियों को गहना की तरह मानते थे–

क्या? देख ना सकती जंजीरों का गहना ।
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना।

इसी प्रकार राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविताएं हमारे समक्ष भारत के गौरवमयी इतिहास को पुनर्जीवित कर देती हैं। उनकी कविता झांसी की रानी भारतवर्ष के जनमानस में हुंकार पैदा करती हैं । उनकी कविता में जोश है, प्रलयाग्नि है, दीवानगी है, और साथ ही साथ मानवीय प्रेम और संयम भी है। इनकी त्रिधारा और मुकुल में संकलित रचनाएं उनके अंतर्निहित भावों का दस्तावेज है–

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारत में फिर से आई नई जवानी थी।

गुमी हुई आज़ादी की कीमत सब ने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

रानी लक्ष्मी बाई के त्याग, बलिदान, शौर्य एवं वीरता का गुणगान करते हुए और उसके प्रति भारतवासी की कृतज्ञता ज्ञापित करती हुई सुंदर पंक्तियां किसके हृदय को झंकृत नहीं कर देंगी–

जाओ रानी ! याद रखेंगे, ये कृतज्ञ भारतवासी।
यह तेरा बलिदान जगावेगा, स्वतंत्रता अविनाशी।।
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फांसी।।
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोली से चाहे झांसी।।
तेरा स्मारक तू ही होगी,तूँ खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हर बोल के मुंह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

नूतन समाज की रचना के लिए उन्होंने अथक प्रयत्न किया। अतीत की महिमा का गौरव गान, तत्कालीन भारतीय समाज की रुग्ण अवस्था के प्रति व्यथा और आक्रोश, उज्ज्वल भविष्य को अवतरित करने की कामना उनकी रचनाओं के मूल स्वर हैं–

कभी कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाए। एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।

उनकी कविता संपूर्ण भारतवासियों के लिए है, जो आज खुले कंठ से आह्वान कर रहे हैं कि समस्त भारतवर्ष मेरा है, किसी विदेशी का नहीं। यह देश हमारा तब से है जब से ईश्वर ने सृष्टि की रचना की, जबसे धरती आकाश सूरज और चांद का अस्तित्व है।

कोटि–कोटि कंठों से निकली, आज यही स्वरधारा है। भारतवर्ष हमारा है, यह हिंदुस्तान हमारा है।।

जिस दिन सबसे पहले जागे नव सृजन के स्वप्न घने।
जिस दिन देश काल के दो–दो विस्तृत विमल वितान तने ।
जिस दिन नभ में तारे छिटके, जिस दिन सूरज–चांद बने ।
तब से यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है ।
यह हिंदुस्तान हमारा है....

कवि कृषक और मजदूरों का आह्वान करता है कि यदि स्वतंत्रता चाहते हो तो सबको जागना पड़ेगा–

ओ मजदूर किसान उठो,
उठो उठो ओ नंगे भूखों
ओ मजदूर किसान उठो।
इस गतिमान मानव समूह के,
ओ प्रचंड अभियान उठो।
आज मुक्ति के अरमानों ने,
मिलकर यूं ललकारा है।
ओ जब सोने वाले जागो,
गूंज रहा नक्कारा है।।।

आग के कवि रामधारी सिंह दिनकर की लेखनी जब आग उगलती है तो बुझी हुई आग की राख से भी ज्वाला की लपटे निकलने लगती हैं। सुषुप्त जन मानस में क्रांति का रक्त उबलने लगता है। उनकी ओज पूर्ण कविता से स्वतः ही क्रांति के स्वर फूटने लगते हैं। परशुराम की प्रतीक्षा में संकलित कविता समर शेष है में कवि लिखता है–

अटका कहाँ स्वराज ? बोल दिल्ली ! तूँ क्या कहती है?
तू रानी बन गई , वेदना जनता क्यों सहती है ?
समर शेष है, उस स्वराज को सत्य बनाना होगा।
जिसका है ये न्याय, उसे सत्त्वर पहुंचाना होगा।
ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो।
किसने कहा? युद्ध की बेला चली गयी , शांति से बोलो ।
किसने कहा और मत बेधो, हृदय वह्नि के सर से।
भरो भुवन का अंग कुमकुम से, कुसुम से , केसर से।
कुंकुम? लेपूं किसे ? सुनाऊं किसको कोमल गान?
तड़प रहा आंखों के आगे भूखा हिंदुस्तान।।6

कवि दिल्ली के बहाने सत्ता को धिक्कारता है कि जिस स्वराज का स्वप्न स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था, वह तो मिला ही नहीं। जनता अब भी इस वेदना को सह रही है। उसे स्वराज को साकार करना अभी शेष है तभी सत्त्वर न्याय हो सकेगा।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि जब–जब राष्ट्र व समाज को आवश्यकता पड़ी है तब–तब हिंदी कविताओं में राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है हिंदी कवियों ने अपनी कलम से की धार से जनमानस के स्वअस्तित्व और स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया है।

राष्ट्रीय आंदोलन की ये कविताएँ देश और समाज की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती हैं। ये कविताएं सामाजिक परिवेश से ही अपना वैचारिक आधार चुनकर समाज को समृद्ध करती हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के समय लिखी गई कविताएं देश, राष्ट्र व समाज की आवश्यकता अनुसार लिखी गई प्रेरणाप्रद रचनाएं हैं। वे एक ओर भारतवर्ष के गौरवमयी अतीत का स्मरण दिलाती हैं, तो दूसरी ओर तत्कालीन समाज को राष्ट्र भक्ति की भावना से संपृक्त करती हैं। इन कविताओं ने जनमानस को ही नहीं अपितु शासन एवं सत्ता में रहने वालों को भी विकसित भारत के उज्ज्वल भविष्य की रूपरेखा से भली भांति परिचित करवाया है। इन कविताओं में –39;गांधी के रामराज्य के माध्यम से स्वस्थ लोकतंत्र की संकल्पना की गई है। भारतेंदु हरिश्चंद, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालकृष्ण भट्ट, माखनलाल चतुर्वेदी, राम प्रसाद बिस्मिल, सोहनलाल द्विवेदी, सुब्रमण्यम भारती, बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्याम नारायण पांडेय , रामधारी सिंह दिनकर आदि अनगिनत कवियों ने देश हित में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया और सोए हुए समाज को नई दिशा देने का प्रयत्न किया। दिनकर ने रश्मिरथी में लिखा –

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल ब्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी इतिहास।

सन्दर्भ-स्रोत

1– कवि त्रिशूल, राष्ट्रीय मंत्र, पृष्ठ 26
2– रामचरित उपाध्याय, राष्ट्रभारती राष्ट्र भारती पृष्ठ– 39
3– मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, पृष्ठ –72
4– मैथिलीशरण गुप्त , भारत भारती, पृष्ठ –160
5– इग्नू ,राष्ट्रीय काव्यधारा, बी एच ई डी, पृष्ठ –238
6– रामधारी सिंह दिनकर, परशुराम की प्रतीक्षा

◆◆◆

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1857) की क्रांति में उत्तर प्रदेश की महिलाओं की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विशाल कुमार[1] एवं रजत गंगवार[2]
[1]शोधार्थी, [2]असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर (उ०प्र०)
Email: rajatgangwar4289@gmail.com

प्रस्तावना –

प्राचीन समय से ही भारतीय महिलाओं का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। महिलाओं की उपयोगिता के बारे में भारतीय मनुस्मृति में कहा गया "जहाँ महिलाओं को सम्मान मिलता है वहां देवता का निवास होता है"। भारतीय महिलाओं ने पुरूषों के साथ मिलकर अपनी वीरता एवं पराक्रम का परिचय दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय महिलाओं की समाज में स्थिति बहुत दयनीय थी। इसका प्रमुख कारण था पुरूष प्रधान समाज का होना। समय के साथ साथ महिलाओं पर बंधन कसते चले गए और हमारे देश की नारी को उन बंधनों में बांध दिया गया जिससे वह अपनी आजादी के मायने को भूलती चली गई और पुरूषों पर निर्भर होती गई। इसके पष्चात औपनिवेशिक शासन काल तक आते आते हमारे देश की महिलाओं की स्थिति बहुत खराब होती चली गई और धीरे धीरे केवल महिला ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ गया।कालांतर में भारत देश में राजा राम मोहन राय ,ईश्वर चंद्र विद्यासागर तथा ज्योतिबा फुले आदि ने भारतीय इतिहास में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए एक लंबा संघर्ष किया।

भारत की भूमि संघर्षों की भूमि है जहां के सभी लोग अपने देश की रक्षा के लिए सबसे आगे रहते हैं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का एक विशेष योगदान रहा है,फिर चाहे वह एक छिटपुट क्रांति हो अथवा एक बड़े स्तर का आंदोलन महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में आगे आकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत 1857 की महान क्रांति से हुई।इसी आंदोलन में भारतीय महिलाओं का प्रवेश हो गया जहां रानी लक्ष्मीबाई, भीमाबाई होल्कर, उदा देवी,बेगम हजरत महल आदि ने ब्रिटिशों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई लड़ी। 1857 की क्रांति में एक वीर साहसी महिला रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी वीरता एवं पराक्रम का ऐसा परिचय दिया कि स्वयं अंग्रेज कमांडर ह्यूरोज को कहना पड़ा कि विद्रोह के सभी क्रांतिवीरों में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थी। इस प्रकार भारत के इस राष्ट्रीय आंदोलन के संघर्ष में भारतीय महिलाओं का अत्यंत सराहनीय योगदान रहा।उन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

अध्ययन के उद्देश्य -

1– 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में उत्तर प्रदेश की महिलाओं के योगदान का वर्णन करना

2– उत्तर प्रदेश की महिला आंदोलनकारियों के बारे में जानकारी देना

3– उत्तर प्रदेश की महिलाओं के बलिदान और उनके कार्यों को जानना

1857 की क्रांति में उत्तर प्रदेश की भूमिका -

1857 की क्रांति में उत्तर प्रदेश के क्षेत्र का योगदान इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।इस आंदोलन में इस क्षेत्र का योगदान अहम रहा क्योंकि आंदोलन को प्रगति एवं दिशा देने वाला क्षेत्र यही था। सन 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में भारत में ब्रिटिश हुकूमत को समाप्त करने का प्रथम जन आंदोलन था। इस आंदोलन का प्रारंभ उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रांत) से हुआ था।य द्यपि आंदोलन के प्रयास अलग अलग क्षेत्रों में हुए और क्रांति असफल हुई किंतु इसके अलावा नवीन राष्ट्रीय भावनाएं व्यापक हुई ।1857 के क्रांतिकारियों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया । उनके असफल प्रयासों ने एक ओर उत्तर प्रदेश में अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों को नवीन स्वरूप प्रदान किया वहीं दूसरी ओर भारतवासियों के राष्ट्रीय जीवन में आत्म विष्वास व संघर्ष के विषिश्ट प्रयासों की श्रृंखलाओं का प्रारंभ हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न घटनाओं से उत्तर प्रदेश का घनिष्ठ संबंध है इसमें आंदोलनकारियों के त्याग व बलिदान भारत के इतिहास के अमिट पन्नो में दर्ज है। इस आंदोलन की घटनाओं का प्रभाव न सिर्फ उत्तर प्रदेश पर बल्कि आस पास के क्षेत्रों पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। इस आंदोलन की शुरुआत हुई देखते ही देखते न सिर्फ उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों पर इसका प्रभाव पड़ा। इस आंदोलन ने भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना को जगाया।

महिला आंदोलनकारियों का विवरण एवं उनकी 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका -

रानी लक्ष्मीबाई– उत्तर प्रदेश की महिला क्रांतिकारियों का नाम आते ही सर्वप्रथम लक्ष्मीबाई का नाम आता है। इनका जन्म बनारस के भदैनी मुहल्ले में हुआ था। इनके बचपन का नाम मनु था।मनु को बचपन से ही घुड़सवारी का शौक था। इनका विवाह गंगाधर राव से हुआ था।इनके कोई संतान न थी इसीलिए इन्होंने एक पुत्र (दत्तक पुत्र) को गोद लिया था। डलहौजी ने हड़पने की नीति तहत झांसी के राज्य को कंपनी के राज्य में मिलाना चाहा जिसका विरोध रानी के द्वारा किया गया। "अपनी झांसी नहीं दूंगी" कहकर रानी लक्ष्मीबाई ने संघर्ष किया। अपने दत्तक पुत्र को पीठ पर बांध कर अंग्रेज जनरल ह्यूरोज की सेना का मुकाबला किया लेकिन सफलता नहीं मिली रानी वीरगति को प्राप्त हुई।

अजीजन बाई - अजीजन बाई कानपुर की रहने वाली थी। इन्होंने नाना साहब और तात्या टोपे के साथ मिलकर एक मस्तानी मंडली का गठन कर सैनिक प्रशिक्षण दिया था,साथ ही पुरूष वेश धारण कर सैनिकों को सहायता पहुंचाती थी।अजीजन घुड़सवार बनकर तलवार चलाते हुए तेज वेग के साथ दुष्मन

पर टूट पड़ना उसे भली भांति आता था।कहा जाता है कि जिन 125 अंग्रेजों की हत्या बीबीगढ़ में हुई थी उनमें अजीजन बाई की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

झलकारी बाई – रानी लक्ष्मीबाई की हमशक्ल झलकारी बाई का जन्म झांसी के निकट भोजला गांव में हुआ था।1857 की क्रांति में झांसी में विद्रोह के समय झलकारी बाई ने रानी का साथ दिया और किले की रक्षा का प्रण किया।इन्हें 1858 में फांसी दे दी गई।

सुनंदा महारानी तपस्वी– सुनंदा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की भतीजी थी।इनके पिता का नाम नारायण राव था जो एक पेशवा सरदार थे। रानी लक्ष्मीबाई की जनक्रांति की पष्ठभूमि तैयार करने में सुनंदा की प्रमुख भूमिका थी। वे बचपन में ही विधवा हो गई थी। उन्होंने अपना वेश बदलकर एक तपस्वी का वेश धारण कर सीतापुर जनपद के नैमिश में रहने लगी थी।1857 की क्रांति में सुनंदा पुनः एक बार सक्रिय हो गई और उन्होंने इस क्रांति में अपनी वीरता का परिचय दिया।उन्होंने एक सैनिक टोली बनाकर अंग्रेजों से संघर्ष किया, इनकी सैनिक टोली छापामार युद्ध में निपुण थी जिससे अंग्रेज बहुत भयभीत रहते थे। कालांतर में इनका सैन्य संगठन सुचारु रूप से नहीं चल पाया जिससे कि इन्हें बाद में नाना साहब के साथ नेपाल की तराई में छिप कर रहना पड़ा। बाद में ये कलकत्ता चली आई यहां इन्होंने महाकाली पाठशाला खोलकर क्रांति की चेतना का जनमानस में प्रचार प्रसार किया। इन्होने तिलक और विवेकानंद से मिलकर भारत की आजादी के आंदोलन को षुरू करने की सलाह दी। 1905 के बंगाल विभाजन के समय में स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय रही इनकी मृत्यु 1907 में हो गई।

मालती बाई लोधी– इनका जन्म बुंदेलखंड क्षेत्र में 1840 ई में बेतवा नदी के तट पर स्थित एक गांव में एक कृषक परिवार में हुआ था।1857 की क्रांति में मालती देवी ने भी अनेक देश प्रेमियों की तरह सैन्य प्रशिक्षण लिया।मालती का गांव रानी लक्ष्मीबाई के राज्य में आता था।रानी ने मालती की लगन देखकर इनके लिए सैन्य प्रशिक्षण का साजो सामान भेजा था। बाद में मालती ने अपने सैन्य कुषलता में वषद्धि करके रानी की सेना में षामिल हो गई।झांसी पर अंग्रेजों के आक्रमण के समय रानी के साथ मालती थी। रानी को बचाने के लिए मालती ने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

मालती बाई लोधी के बारे में कवि खेमसिंह ने लिखा है
"मातृभूमि के लिए मालती ने अपने अनुजों को छोड़ा,
छोड़ा अपने पूज्य पिता को परिणय बंधन से मुख मोड़ा
याद रहेगी झांसी रानी संग मालती याद रहेगी
भूल खेमसिंह कैसे होगा तू बलिदानी याद रहेगी"

कुमारी मैना – कुमारी मैना पेशवा नाना साहब की दत्तक पुत्री थी।1857 की क्रांति में आंदोलन करी महिलाओं में कुमारी मैना की कहानी अत्यंत पीड़ादायक है।जब नाना साहब के सैनिक कानपुर में अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों को गिरफ्तार कर रहे थे, जो एक निंदनीय कार्य था तब नाना साहब ने उन्हें सही सलामत उनके परिजनों तक पहुंचाने का कार्य कुमारी मैना को सौंपा था। उस समय मैना मात्र 15 वर्ष

की थी। जब मैना बच्चों और स्त्रियों को वापस पहुंचाने का कार्य कर रही थी कि अचानक अंग्रेजी ने पुनः हमला कर दिया जिससे बड़ी संख्या में बच्चे एवं महिलाएं मृत्यु को प्राप्त हो गई। मैना को अंग्रेजी द्वारा बंदी बना लिया गया एवं उनसे नाना साहब के बारे में जानकारी लेने का प्रयास किया गया जिसके लिए, उन्हें बहुत यातनाएं दी गई, लेकिन मैना ने कुछ नहीं बताया। अंत में अंग्रेजों ने मैना को पेड़ से बांधकर जिंदा जला दिया।

रानी ईश्वर कुमारी - ईश्वर कुमारी उत्तर प्रदेश के गोंडा जनपद से थी।1857 की क्रांति में रानी ने स्वयं सैनिकों का नेतृत्व किया। लखनऊ की बेगम हजरत महल जब नेपाल जा रही थी तब ईश्वर कुमारी ने बेगम हजरत महल को षरण दी एवं हजरत महल को नेपाल की सीमा तक पहुंचाया।गोंडा जिले में आज भी ईश्वर कुमारी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है।

ऊदा देवी - यह वीरांगना लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की मुखिया थी।1857 की क्रांति में जब कैंपबेल के नेतृत्व में सेना कानपुर लखनऊ आ रही थी तब उसको रोकने का कार्य ऊदा देवी की टुकड़ी को करना था। उदा देवी ने पुरूष वेश में पीपल के पेड़ पर चढ़कर 32 अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया था। कैंपबेल भी उसकी वीरता से आश्चर्यचकित हो गया था। उसने अपना हेट उतारकर ऊदा देवी का सम्मान किया था।

मंदार - मंदार नामक एक महिला रानी लक्ष्मीबाई की निजी अंगरक्षक थी और उसने 18 जून 1857 को ग्वालियर के कोटा की सराय युद्ध में रानी के साथ अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे।

भारतीय महिला आंदोलनकारियों के इतने नामोल्लेख करने के बाद यह नहीं कहा जा सकता कि 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में उत्तर प्रदेश की केवल इन्हीं महिलाओं ने इस आंदोलन में सहयोग दिया, यह सूची बहुत लंबी है।इन महिलाओं ने दूसरे रूप में भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई। अपने पतियों के सहयोग,पुत्रों को राष्ट्रीय आंदोलन के लिए प्रेरित करना, पत्र लेखन का कार्य, सूचना का आदान प्रदान आदि बहुत से ऐसे महत्वपूर्ण कार्य किए जिनके बिना आजादी का संघर्ष चल ही नहीं सकता था।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महिलाओं ने इस क्रांति में न सिर्फ भाग लिया बल्कि अपने पराक्रम एवं वीरता से अंग्रेजी सरकार को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने अपनी वीरता का प्रदर्शन कर इस बात को झुठला दिया कि "महिलाएं सिर्फ चार दिवारी के अंदर रह सकती है"। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं ने अपनी देशभक्ति, वीरता, साहस की भावना के साथ भारत देश के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया। भारतीय आंदोलनकारी महिलाओं ने न सिर्फ 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन में बल्कि उसके बाद के सभी प्रमुख आंदोलनों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं ने देश प्रेम की भावना का प्रदर्शन करते हुए,भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रत्येक तरीके को अपनाया। महिलाओं के नेतृत्व,

बलिदान तथा सहयोग ने भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन को नया आकार दिया। भारतीय आंदोलनकारी महिलाओं ने भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों प्रकार से अपना सहयोग प्रदान किया। यह कहना अतिषयोक्ति नहीं होगा कि उनके इन महान संघर्षों का परिणाम है कि भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली। अंत में कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का योगदान अतुलनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- चंद्र तारा, History of freedom movement in India Vol IV
- इस्लाम शमशुल,1857 की हैरत अँगेज दास्तानें
- शिशिर कमेंदु, 1857 की राजक्रांति विचार एवं विश्लेषण
- नागेरी एस. एल. कांता, 1857 की क्रांति एवं उसके क्रांतिकारी
- पी. सी. जोशी, Rebellion 1857
- आर.सी. मजूमदार The Sepoy Mutiny and Revolt 1857

◆◆◆

स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर प्रदेश की महिला क्रान्तिकारियों की भूमिका

भानुप्रताप सिंह[1] एवं कृष्णवीर सिंह[2]

[1]शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग, एस० एस० जे परिसर अल्मोड़ा उत्तराखण्ड, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, [2]शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग, एम०जे०पी०आर०यू० बरेली

शोध-सार

प्रस्तुत शोध पत्र स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर प्रदेश की महिला क्रान्तिकारियों की भूमिका पर आधारित है शोध में द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की निर्णायक भूमिका रही है। भारत की भूमि संघर्षों की भूमि रही है यहाँ सभी वर्गों के लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पुरूषों के समान महिलाओं ने भी सहभागिता की है। अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी वीरांगनाओं की अमित गाथा है देश की स्वतंत्रता के लिए समूह बनाकर वीर महिलाओं ने ग्रामीण स्तर पर स्वतंत्रता के लिए प्रचार प्रसार किया। वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से स्वतंत्रता प्राप्ति तक उत्तर प्रदेश की प्रमुख महिला क्रांतिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इनमें से कुछ ने तो देश की स्वाधीनता के लिए अपने प्राण बलिदान कर दिए।

स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर प्रदेश की महिला क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के विरूद्ध जो विद्रोह किया उनमें सर्वप्रथम वीरांगना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई थीं जिन्होंने 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज बुलंद की और मरते दम तक अंग्रेजों से संघर्ष करती रही। झलकारी बाई लक्ष्मीबाई के जैसी ही एक वीरांगना थीं जोकि झांसी से संबंध रखती थी वह रानी लक्ष्मीबाई की हम षक्ल एवं दुर्गा दल की प्रमुख थी प्रसिद्ध कवि मैथिलीषरण गुप्त ने लिखा है कि ''जाकर रण में जो ललकारी थी वह तो झांसी की झलकारी थी।'' लेकिन खेद का विषय यह है कि मुख्य धारा के इतिहास में झलकारी बाई की चर्चा बहुत कम हुई है।

कानपुर की महिला क्रांतिकारी महिलाओं में अजीजन बाई प्रमुख थी इनका जीवन कोठे से आरंभ हुआ लेकिन वहीं समाप्त नहीं हुआ सन् 1857 में अपनी सैनिक प्रतिभा और देश प्रेम को प्रदर्षित करने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ नाना साहब और तात्या टोपे ने कानपुर और बिठूर में अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोला इसमें अजीजन बाई ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उत्तर प्रदेश की महिला स्वतंत्रता क्रांतिकारियों में बेगम हजरत महल का नाम भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

◆◆◆

प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विजय कुमार[1] एवं प्रतिभा पांडेय[2]
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, बरेली, हिन्दी विभागए [2]शोध निर्देशिका, (शोधार्थी, हिंदी विभाग)
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, उ.प्र.

शोध-सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है जिसमें द्वितीयक तथ्य सामग्री का प्रयोग किया गया है कथा सम्राट प्रेमचंद जी हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार है, जिन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज की विभिन्न समस्माओं और संघर्षों को उजागर किया है स्वतंत्रता संग्राम एक ऐसा विषय है, जिसे प्रेमचंद ने अपनी कई कहानी यों और उपन्यासों में स्त्री एवं पुरुष पात्रों के माध्यम से उठाया है प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जनता को जागरूक करने की भूमिका भी महत्वपूर्ण है भारत में स्मृतंत्रता संग्राम 1857 ई० की क्रांति का विद्रोह या कहें 19 वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ था जब भारतीयों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह करना प्रारंभ किया था यह स्वतंत्रता संग्राम कई दशकों तक चला और अंततः सन 1947 ई० में भारत की स्मृतंत्रता के साथ समाप्त हुआ स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, आदि आंदोलनों का वर्णन– 'प्रेमाश्रम', रंगभूमि', 'कर्म भूमि',' कायाकल्प', 'गोदान', 'गबन', नमक का दरोगा', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'आहुति', दुनिया का अनमोल रतन', 'समर यात्रा' 'जुलूस', 'उपदेश 'आदि रचनाओं में इसका यथार्थ चित्रण किया गया है इस शोध पत्र में हम प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्मृतंत्रता संग्राम के चित्रण का विस्मृत विश्लेषण करेंगे।

◆◆◆

स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु
शुभकामनाओं सहित

गायत्री फाउण्डेशन ट्रस्ट, रामपुर

Gayatri
Foundation
Equality | Development | Prosperity

एम०जे०पी० रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी
द्वारा संचालित
समस्त प्रकार के वोकेशनल कोर्स
कराने की संस्था

पता - CP-106, पुराना आवास विकास, सिविल लाइन्स,
LIC ऑफिस के पास, रामपुर (उ०प्र०)
Email : gayatrifoundation50@gmail.com
Website : www.gayatrifoundation.co.in
Cell : 9718538206